प्रतिभा
प्रतिष्ठान,
नई दिल्ली



नेहरू ने कहा था

सम्पादक
डा. गिरिराज शरण

प्रकाशक : प्रतिमा प्रतिष्ठान, १६८५ दखनीराय स्ट्रीट,
नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-२
संस्करण : प्रथम, १६८२

मूल्य : पच्चीस रुपये

Nehru Ne Kaha Tha (Thus Spake J. L. Nehru) Rs. 25.0

जो व्यक्ति दूसरे के विचारों को नहीं समझ सकता, उसका दिमाग और संस्कृति बहुत कुछ सीमित हो जाती है। क्योंकि इने-गिने कुछ असाधारण मनुष्यों को छोड़कर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो पूरा-पूरा ज्ञान और बुद्धि रखता हो। दूसरे पक्ष या अन्य समूह के पास भी कुछ-न-कुछ ज्ञान और बुद्धि हो सकती है, और अगर हम अपना दिमाग उसके लिए बंद कर देंगे तो हम केवल अपने आपको उससे वंचित ही न रखेंगे, बल्कि ऐसा दिमागी रवैया बना लेंगे, जो मेरे खयाल से सुसंस्कृत मनुष्य के लिए अनुचित है।

—जवाहरलाल नेहरू

युग निर्माता

"मेरा यकीन है कि दुनिया की और हिन्दुस्तान की समस्याओं का एक ही हल है—और वह है समाजवाद। जब मैं इस शब्द का प्रयोग करता हूं, तो कोई अस्पष्ट जनसेवी तरीके से नहीं बल्कि वैज्ञानिक और आर्थिक नजरिये से करता हू। समाजवाद एक आर्थिक सिद्धात से भी कुछ ज्यादा मायने रखता है। यह जिंदगी का दर्शन-शास्त्र है, और इसका यह रूप मुझे पसंद भी है। मैं समाजवाद के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं देखता जो गरीबी, बेकारी, बेइज्जती और गुलामी से हिन्दुस्तान के लोगों को नजात दिला सके।"—युगनिर्माता नेहरू

रूसी क्रांति के प्रशंसक होकर भी वे रूसपंथी समाजवादी तानाशाही के विरोधी थे; और रूस मे विरोधी विचारों के दमन की आलोचना करते थे। मार्क्सवाद से प्रभावित होते हुए भी वे रूढिवादी कम्युनिस्ट नही थे। समता, स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र मे उनकी गहरी आस्था थी, और राष्ट्रवाद के वे प्रखर उद्घोषक थे—"मैं राष्ट्रवादी हू और मुझे राष्ट्रवादी होने का अभिमान है।"

लेकिन उनका राष्ट्रवाद, धार्मिक या जातीय राष्ट्रीयता की संकुचित भावना से परे, विश्व-मानव की सेवा का माध्यम था। देश, जाति या धर्म-संप्रदाय के अहंकार से मुक्त उनका राष्ट्रवाद, विश्व-शांति की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए समर्पित था।

महात्मा गांधी के परमप्रिय उत्तराधिकारी नेहरूजी ने स्वतन्त्र भारत में दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र स्थापित कर 'पंचशील' और 'विश्व-शांति' का शुभ संदेश दिया। भारत में सुनियोजित अर्थनीति और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से भरपूर औद्योगिक प्रगति की आधार-शिला रखने के लिए उन्हें युगों तक याद किया जाएगा।

तानाशाही के समान ही साम्राज्यवाद से भी वे घोर घृणा करते थे, क्योंकि वह शोषण, लूट-खसोट और हिंसा पर आधारित होता है। उनका स्पष्ट कथन था—"हमारा दुश्मन तो ब्रिटिश साम्राज्य है; और जहां साम्राज्यवाद है, वहां हम खुशी के साथ नहीं रह सकते।"

जीवन के हर क्षेत्र में नेहरूजी मध्यमार्गी उदारता के समर्थक थे—जिसका प्रेरणा-स्रोत था, महात्मा बुद्ध का उपदेश 'मज्झिमा प्रतिपदा' मध्यम मार्ग; और जिसका रूपांतर था धर्म-निरपेक्षता, गुट-निरपेक्षता, विश्व-बंधुत्व और सह-अस्तित्व का राजनीति-दर्शन। प० जवाहरलाल नेहरू स्वाधीनता-संग्राम के अग्रणी नायक तो थे ही, आधुनिक प्रगतिशील भारत के नवनिर्माण में उनका अनुपम योगदान हमारे इतिहास का स्वर्णिम शिलालेख है।

आज नेहरूजी हमारे बीच नहीं है, मगर उनके प्रेरक विचार आज भी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के समुद्र

में प्रकाश-स्तम्भ बने हुए हैं। देश की नयी पीढ़ी के छात्रों और युवाओं के वैचारिक प्रशिक्षण और प्रेरणा के लिए नेहरूजी के विचार, उनके ऐतिहासिक भाषणों, लेखों, पत्रों और पुस्तकों से चुनकर, संकलित किए गए हैं। आशा है, इस प्रकाशन का उद्देश्य सफल होगा और मेरा श्रम सार्थक होगा।

—डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

अनुक्रम

नेहरू ने कहा था

अंग्रेज

अंग्रेज उन बातों में बड़े ईमानदार हैं, जिनसे उनका फायदा हो सकता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३६२

अंतर

आखिर एक वोट रखने वाला गरीब, एक ही वोट रखने वाले अमीर के बराबर कहां है? करोड़पति के लिए अपना असर डालने के सैकड़ों तरीके हैं, लेकिन गरीब के पास ऐसा कुछ भी नहीं। जिस आदमी के पास शिक्षा के भरे-पूरे लाभ है, उसमें और इन लाभों से वंचित आदमी में बराबरी कहां हुई? तो, इस तरह शैक्षिक, आर्थिक और दूसरी दृष्टि से लोगों में बहुत अन्तर है। मेरे ख्याल से कुछ हद तक लोगों में अन्तर रहेगा ही।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २७

अन्तरराष्ट्रीयता

राष्ट्रवाद के इस संकीर्ण घेरे से जरा अपने को बाहर निकालिए और दुनिया की बात सोचिए। उन विश्व-शक्तियों को देखिए, जो आज काम कर रही है। हिन्दुस्तान दुनिया से

अलग न कोई एकाश आज है, न कभी हो सकता है। यह विश्व-योजना के अंग के रूप में विकसित होता है, विकसित होता जाता है। अगर आप दुनिया मे आइए, जो एक-दूसरे के सम्पर्क में है, तो आप देखेगे कि व्यवसाय, वाणिज्य, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में उनका एक-दूसरे से सम्बन्ध है।[1]

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ५१९-५२०

अम्बेदकर

मैं डॉ० अम्बेदकर के धर्म-परिवर्तन की वात को वहुत महत्त्व नहीं देता, क्योंकि उनका धर्म भरोसे के लायक नहीं था। डॉ० अम्बेदकर ऊंचे तबके के दलित वर्ग के नेता है, जिसकी माली हालत अच्छी है। सरकारी नौकरियों में हिस्सा पाने की ख्वाहिश से वे लोग प्रतियोगिताओं मे शामिल हो रहे है, और नौकरियां तलाश रहे है। जो सचमुच दलित है, उनके नुमाइंदे गांधीजी हैं, ना कि कांग्रेस के वाहर के वे लोग, जो दलितों के लिए अलग निर्वाचन-क्षेत्र की वात पर राजी होकर उन्हे हमेशा दलित वनाए रखना चाहते हैं।[2]

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ८५

अनिवार्य सैनिक शिक्षा

अनिवार्य सैनिक-शिक्षा की वात, रक्षा की दृष्टि से कोई विशेष महत्त्व नहीं रखती। क्योंकि वास्तविक समस्या यह नही है कि लोगों में युद्ध की मनोवृत्ति पैदा की जाए, वल्कि वह यह है कि उन्हे लड़ाई के साधन प्राप्त हों। अगर आपके यहा

१. कलकत्ता मे विद्यार्थियों की सभा में भाषण

२. जनवरी १९३६ में डॉ० अम्बेदकर ने पूना मे घोषणा की थी कि वह हिन्दू धर्म छोड़ने पर आमादा हैं।

करोड़ों आदमी दकियानूसी हथियार और लाठियां लिए हुए हों, तो उससे बहुत लाभ नहीं होगा। आपको युद्ध के समय मुख्य साधनों का उत्पादन कर सकना चाहिए। वास्तव में युद्ध में हथियार और सभी तरह की चीजें आवश्यक हैं। अगर आप औद्योगिक दृष्टि से मजबूत है, तो आप अपनी फौज, नौसेना और हवाई शक्ति को थोड़े समय मे तैयार कर सकते है। अगर आप अपने जंगी जहाज और सब कुछ विदेशों से खरीदने पर निर्भर रहते है—और वह स्रोत बंद हो जाता है, और कुछ हजार आदमी 'युद्ध-युद्ध' चिल्लाते रहते है, तो वह बिल्कुल बेकार है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६८

लोग अनिवार्य फौजी सेवा की बात करते हैं। एक दृष्टि से मैं साधारणतः अनिवार्य फौजी सेवा के पक्ष में नही हूं। लेकिन मैं इस मानी मे इसके पक्ष में हूं कि यह जनता को कुछ अधिक अनुशासन सिखाएगी। शारीरिक उन्नति की दृष्टि से भी मैं इसके पक्ष में हूं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६७-६८

अनुशासन

आपमें जितना अधिक अनुशासन होगा, आपमें उतनी ही आगे बढने की शक्ति होगी। कोई भी देश—जिसमें न तो थोपा गया अनुशासन है, और न आत्म-अनुशासन—बहुत समय तक नही टिक सकता।

—नेहरू और नई पीढी : हरिदत्त शर्मा, पृ० २०७

फौज में हर कोई अफसर नही बन सकता। अगर सभी अफसर हो जाएं तो सिपाहियों का काम कौन करेगा ? बड़ों की नुक्ताचीनी का कोई मतलब नही रह जाएगा, अगर

नौजवानों के अन्दर भी आत्म-विचार करने और सभाओं में तकरीरें देने का वही मर्ज हो जाए। सभाओं में भाषण देने की आदत डालने से बाज आइए। भाषण देनेवाले बहुत है, और यह आदत छोड देनी होगी। नौजवानों को अनुशासन की आदत डालनी चाहिए, जो सच्ची कामयाबी हासिल करने का एक बहुत ही जरूरी जुज है।

जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० १५-१६

अपने विषय में

बौद्ध-धर्म का निराशावाद, मेरे अपने जिन्दगी के नजरिए से मेल नही खाता, न जिन्दगी और उसके मसलों से भागने की उसकी प्रवृत्ति मेरे अनुकूल पडती है। अपने दिमाग के किसी छिपे हुए कोने में मैं काफिर हूं, और जिस तरह से काफिर जिन्दगी और प्रकृति को उमंग के साथ देखता है, उसी तरह मैं देखता हूं। और जिन्दगी में जिन संघर्षों का सामना करना पड़ता है, उनसे घवड़ाता नही हूं। जो कुछ मैंने अनुभव किया है, या अपने चारों ओर देखा है, वह चाहे जितना तकलीफ और दुःख पहुंचाने वाला रहा हो, उससे मेरे इस नजरिए में फर्क नही पड़ा है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १७३-१७४

अप्रसन्न न करो

बिना किसीको अप्रसन्न किए हुए, अपने प्रति संसार के करोड़ों लोगों से सहानुभूति और आशाओं को आकर्षित करने से, आगे चलकर भारत का बड़ा हित होगा। दूसरों को अप्रसन्न करना या उनसे टक्कर लेना हमारा उद्देश्य नही है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १६३

अलगाव

अलगाव हमेशा भारत की कमजोरी रही है। पृथकतावादी प्रवृत्तियां—चाहे वे हिन्दुओं की रही हों या मुसलमानों की, सिखों की या और किसीकी—हमेशा खतरनाक और गलत रही हैं। ये छोटे और तंग दिमागों की उपज होती हैं। आज कोई भी आदमी, जो वक्त की नब्ज़ को पहचानता है, साम्प्रदायिक ढंग से नहीं चल सकता।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५६

अशोक

इस अद्भुत शासक ने जिसे अब तक हिन्दुस्तान में और एशिया के दूसरे हिस्सों में प्रेम के साथ याद किया जाता है, बुद्ध के सत्कर्म और सद्भाव की शिक्षा के फैलाने में, और जनता के हित के कामों मे अपने को पूरी तरह लगा दिया। वह घटनाओं को हाथ-पर-हाथ रखकर देखने वाला, और ध्यान मे डूबा हुआ और अपनी उन्नति की चिन्ता में खोया हुआ आदमी न था। वह राज-कार्य मे मेहनत करने वाला था, और उसने यह ऐलान कर दिया था कि मैं सदा काम के लिए तैयार हूं। सब वक्तो मे और सब तरह, चाहे मै खाना खाता होऊं, चाहे रनिवास में होऊं, चाहे शयन में रहूं, या स्नान में, सवारी पर रहूं या महल के बाग में—सरकारी कर्मचारी जनता के कार्यों के बारे मे मुझे बराबर सूचना देते रहें। जिस समय भी हो और जहां भी हो, मै लोक-हित के लिए काम करूंगा।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १७७-१७८

अहंकार

प्रायः दुनिया का हर देश यह विश्वास करता है कि स्रष्टा

ने उसे कुछ विशेष गुण देकर भेजा है, कि वही दूसरों की अपेक्षा श्रेष्ठ जाति या समुदाय का है। चाहे दूसरे अच्छे हों या बुरे, लेकिन उनसे कुछ घटिया प्राणी हैं। यह एक अजीब-सी बात है कि यह भावना पूर्व और पश्चिम के सभी राष्ट्रों में निरपवाद रूप से पाई जाती है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३३

अहिंसा/हिंसा

और मैं हिन्दुस्तान को अहिंसा का रास्ता अख्तयार करने के लिए इसलिए नही कहता कि वह कमजोर है। मैं चाहता हूं कि वह अपनी ताकत और अपने बल-भरोसे को जानते हुए अहिंसा पर अमल करे। मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान यह पहचान ले कि उसके एक आत्मा है—जिसका नाश नही हो सकता, और जो सारी शारीरिक कमजोरियों पर विजय पा सकती है, और सारी दुनिया के शारीरिक बलों का मुकाबला कर सकती है।

—मेरी कहानी, पृ० १२६

कुछ लोग नैतिक बुनियाद पर हिंसा को वर्जित मानते हैं। बहुतों को अहिंसा पसन्द हो सकती है, लेकिन अगर किसी मौके पर उन्हें लगता है कि हिंसा से ज्यादा नतीजा निकल सकता है – तो वे बिना शक उसे अमल में ले आएंगे। यह तो और किसी चीज की निस्बत जरूरत का सवाल है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० ४०२

मैं इस उसूल को नही मानता—कि अगर कोई मेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो मैं उसकी ओर अपना बायां गाल कर दूं। फिर भी व्यावहारिक अनुभव से, और पिछले साल की लड़ाई में हमें जो कामयाबी मिली है उससे, यह बिलकुल साफ हो जाता है कि अहिंसा कितनी बड़ी ताकत साबित हुई है।

अगर मुल्क में अहिंसा का माहौल है, तो हिंसक कार्रवाइयों के लिए कोई जगह नही है।

—जवाहलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० २६३

राजनैतिक अर्थ में अहिंसात्मक आन्दोलन को अभी तक तो कामयाबी मिली नही, क्योंकि हिन्दुस्तान अब भी साम्राज्यवाद के अनीतिपाश मे जकडा हुआ है। सामाजिक अर्थ में, अहिंसा के प्रयोग से क्रान्ति की कल्पना कभी की तक नहीं गई। फिर भी जो आदमी जरा भी गहराई में उतर सकता है, वह देख सकता है कि हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों में इसने एक जबरदस्त परिवर्तन कर दिया। इस अहिंसात्मक आन्दोलन ने करोड़ों हिन्दुस्तानियों को चरित्र-बल, शक्ति और आत्म-विश्वास आदि ऐसे अमूल्य गुणों का पाठ पढ़ाया है, जिनके बिना राजनैतिक या सामाजिक, किसी भी किस्म की तरक्की करना या उसे कायम रखना कठिन है। यह कहना मुश्किल है कि ये निश्चित लाभ अहिंसा की बदौलत हुए हैं, या [illegible] संघर्ष की बदौलत बहुत से मौको पर कई राष्ट्रों ने ऐसे फायदे हिंसात्मक लड़ाई के जरिये भी हासिल किए हैं. फिर भी मेरा ख्याल है कि यह बात तो इत्मीनान के साथ कही जा सकती है कि इस आन्दोलन में अहिंसा का तरीका हमारे लिए [illegible] साबित हुआ है

वहती है। राज्य के पास अगर दंड देने के अस्त्र न हों, तो फिर न तो कर वसूल किए जा सकते हैं, न जमींदारों को उनका लगान ही मिल सकता है, और न निजी सम्पत्ति ही कायम रह सकती है। पुलिस तथा फौज के वल से, कानून दूसरों को पराई सम्पत्ति के उपयोग से रोकता है। इस प्रकार राष्ट्रों की स्वाधीनता—आक्रमण से रक्षा के लिए हिंसा-वल पर टिकी है।

—मेरी कहानी, पृ० ७५२

हिंसा और अहिंसा का सवाल मेरे लिए वेमानी है। जिस घड़ी हिंसा जरूरी हो जाती है, मैं उसका इस्तेमाल करने में हिचकिचाऊंगा नहीं। इन सव चीजों के साथ एक शर्त जुड़ी है, और वह यह है कि हम अनुशासन पैदा करें, और खतरा उठाने के लिए तैयार रहें।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० २३६

आजादी : स्वतन्त्रता

असली स्वतन्त्रता वह नहीं है जो और देशों की तरफ, और ताकतों की तरफ, और फौजों की तरफ और पैसे की तरफ, देखकर अपने को वचाने की कोशिश करे।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १८

आजादी एक ऐसी चीज है कि जिस वक्त आप गफलत में पड़ेंगे, वह फिसल जाएगी। वह जा सकती है, वह खतरे में पड़ सकती है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३४

आजादी के माने यह नहीं है कि हरएक आदमी आजादी के नाम से हर बुरा काम करे। आप अपने खयालात का आजादी से इजहार कीजिए। लेकिन उसके माने यह नहीं कि सड़क या अखवारों मे हरएक को गालियां दीजिए। क्योंकि

फिर तो ऐसी बातों में हमारी सारी जिन्दगी गिर जाएगी। खास तौर से, आजादी के माने यह नहीं कि लोग उस आजादी की जड़ खोदें। अगर कोई ऐसा करे, तो जाहिर है कि उसका मुकाबला करना होता है, उसको रोकना होता है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० २४

आजादी, खाली सियासी आजादी नहीं, खाली राजनीतिक आजादी नहीं। स्वराज्य और आजादी के माने और भी हैं—सामाजिक हैं, आर्थिक है। अगर देश में कहीं गरीबी है, तो वहां तक आजादी नहीं पहुंची, यानी उनको आजादी नहीं मिली, जिससे वे गरीबी के फन्दे में फंसे हैं। जो लोग गरीबी और दरिद्रता के शिकार हैं, वे पूरी तौर से आजाद नहीं हुए। उनको आजाद करना है। इसी तरह अगर हम आपस के झगड़ों में फंसे हुए हैं, आपस में वैर है, बीच में दीवारें हैं, हम एक-दूसरे से मिलकर नहीं रहते, तब भी हम पूरे तौर से आजाद नहीं हुए।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६१

आजादी भी अजीब-अजीब जिम्मेदारियां लाती है और बोझे लाती है। अब इन जिम्मेदारियों का सामना हमें करना है, और एक आजाद हैसियत से हमें आगे बढ़ना है, और अपने बड़े-बड़े सवालों को हल करना है। सवाल बहुत बड़े हैं। सवाल हमारी सारी जनता का उद्धार करने के हैं—हमें गरीबी को दूर करना है, बीमारी को दूर करना है, अनपढ़पने को दूर करना है, और आप जानते हैं—कितनी और मुसीबतें हैं जिनको हमें दूर करना है। आजादी महज एक सियासी चीज नहीं है। आजादी तभी एक ठीक पोशाक पहनती है, जब जनता को फायदा हो।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ०

आर्थिक आजादी के बिना, और जब तक गरीबी न मिटे, तब तक असली आजादी हो ही नहीं सकती। भूखे आदमी से कहना कि तुम आजाद हो—सिर्फ उसका मजाक करना है।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ३२६

जो लोग आजादी चाहते हैं, उनको हमेशा अपनी आजादी की हिफाजत करने के लिए, अपनी आजादी को बचाने और रखने के लिए, अपने को न्योछावर करने को तैयार रहना चाहिए। जहा कोई कौम गफलत खाती है, वह कमजोर होती है और गिर जाती है। इसलिए हमें हमेशा तैयार रहना है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६

देश की आजादी कुछ लोगों की खुशहाली मे नही देखी जाती। देश की आजादी आम लोगो के रहन-सहन, आम लोगों की तरक्की का—बढने का क्या मौका मिलता है, आम लोगों को क्या तकलीफ और क्या आराम है, इन बातों से देखी जाती है। तो हम अभी आजादी के रास्ते पर है, यह न समझिए कि मंजिल पूरी हो गई।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६१

हम लोगो ने एक जमाने से, जहा तक हम में ताकत थी और कूवत थी—हिन्दुस्तान की आजादी की मशाल को उठाया। हमारे बुजुर्गो ने उसको हमें दिया था, हमने अपनी ताकत के मुताबिक उसको उठाया; लेकिन हमारा जमाना भी अब हल्के-हल्के खत्म होता है, और उस मशाल को उठाने और जलाए रखने का बोझा आपके ऊपर होगा—आप जो हिन्दुस्तान की औलाद है, हिन्दुस्तान के रहने वाले है, चाहे आपका मजहब कुछ हो, चाहे आपका सूबा या प्रान्त कुछ हो। आखिर में उस मशाल को शान से जलाए रखने का आपका एक फर्ज

है, और वह मशाल है आजादी की, अमन की और सच्चाई की।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ११-१२

आत्मनिर्भरता

आप याद रखें कि मदद के लिए बाहर की तरफ ज्यादा देखना, भरोसा करना—चाहे पैसे के लिए हो या किसी और बात के लिए—कौम को कमजोर करता है। जो कौम दूसरों की तरफ बहुत देखती है, अपाहिज हो जाती है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३७

हमें अपने ऊपर भरोसा करना है, औरों पर नहीं। हम दुनिया की दोस्ती चाहते है। अपने मुल्क में हम जितने लोग रहते है, करोड़ों आदमी—चाहे किसी जाति के हों, किसी धर्म के हो, किसी पेशे के हों, किसी तबके के हों—उन सबकी दोस्ती चाहते है, प्रेम चाहते है, सहयोग चाहते है। हम सारी दुनिया से सहयोग चाहते है। हम सब देशों के साथ प्रेम से, मुहब्बत से और सहयोग से रहना चाहते है। उनमे से जो हमारी किसी बात में मदद करें, बड़ी खुशी से मदद स्वीकार है। लेकिन आखिर मे हमारा भरोसा अपने ऊपर है, दुनिया के किसी और देश पर नही– इस बात को हमे और आपको याद रखना है, क्योंकि जो लोग औरों पर भरोसा करते है, वे खुद कमजोर हो जाते है, दुर्बल हो जाते है, और जब दूसरे लोग मदद नहीं करते, तो फिर वे बेबस हो जाते है और कुछ नहीं कर सकते।

लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १८

आत्मप्रशंसा

अपने मुंह से अपनी तारीफ करना हमेशा खतरनाक चीज

होती है। राष्ट्र के लिए भी वह उतनी ही खतरनाक है, क्योंकि वह उसे आत्म-संतुष्ट और निष्क्रिय बना देती है, और दुनिया उसे पीछे छोड़कर आगे बढ जाती है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खंड ३), पृ० १८८

आत्मविश्वास

आप अपने पर भरोसा कीजिए, अपने पर यकीन कीजिए, और अपने देश पर भरोसा कीजिए। और अगर मुझे अपने देश पर यकीन और अपने देश के भविष्य पर भरोसा न होता, तो क्या आप समझते हैं कि इन तीस-चालीस वर्षों में हम लोग उस काम को कर सकते, जो कुछ छोटा या बड़ा काम हमने किया!

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १६

आत्मा

असल में मेरी दिलचस्पी इस दुनिया में और इस जिन्दगी में है—किसी दूसरी दुनिया या आनेवाली जिन्दगी मे नही। आत्मा-जैसी कोई चीज है भी या नही—मैं नही जानता। और अगरचे ये सवाल महत्त्व के हैं, फिर भी इनकी मुझे कुछ भी चिन्ता नही।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ३३

आत्मालोचन

आइए, हम सब अपने अन्दर झांककर देखें, और बिना रिआयत या पूर्वाग्रह के इस बात की जाच करें कि हमने क्या किया है, और दूसरों ने हमारे साथ क्या किया है; साथ ही यह जानने की कोशिश करें कि आज हम किस हालत में हैं। दूसरों की नाराजी के डर से हमें अपने आपको भुलावा नही

देना है, और न असल मुद्दों से नजरें ही चुरानी है—भले ही उन 'दूसरों' में कुछ लोग हमारे साथी ही क्यों न हों—जिनकी हम इज्जत करते हैं। वह रास्ता अपने को धोखा देने का रास्ता है, और जो लोग बड़ी और अहम तब्दीलियां चाहते हैं, वे बिना खतरा मोल लिए उस रास्ते पर नहीं जा सकते।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १६६

औरों की कमजोरियों की तरफ न देखें, औरों की नुक्ता-चीनी न करें—अपनी तरफ देखें। अगर हर एक आदमी अपना-अपना कर्तव्य करता है, अपना-अपना फर्ज अदा करता है, तो दुनिया का काम बहुत आगे जाएगा। लेकिन औरों के काम की नुक्ताचीनी करना, निन्दा करना हमारा कुछ पेशा हो गया है। और चाहे हम अपना काम करें या न करें, हर एक को अपने पड़ौसी के काम की फिक्र है—अपने काम की नहीं। और इससे न पड़ौसी काम कर सकता है, न हम कर सकते हैं।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५१

दूसरों की गलतियों की आलोचनाएं जरूर की जाएं, लेकिन हमें अपनी तरफ भी जरूर देखना चाहिए।

— जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ११५

आदमी

अनगिनत कमजोरियों के बावजूद, आदमी ने सभी युगों में, अपने जीवन की और अपनी सभी प्रिय वस्तुओं की—एक आदर्श के लिए, सत्य और विश्वासों के लिए, देश और इज्जत के लिए कुरबानी की है। यह आदर्श बदल सकता है, लेकिन कुरबानी की यह भावना बनी हुई है। और इसीकी वजह से हम इंसान की बहुत-सी कमजोरियों को माफ करते हैं और उसकी तरफ से मायूस नहीं होते। आफतों का सामना करते हुए भी उसने

अपनी शान निभाई है; जिन चीजों की वह कीमत करता रहा है, उनमें अपना विश्वास कायम रखा है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ४१

मुझे इस बात में हमेशा ज्यादा शान और भव्यता जान पड़ी है—कि एक इंसान दिमागी और रूहानी हैसियत से बुलंदी पर पहुंचे और दूसरों को भी उठाने की कोशिश करे, न कि इसमें कि वह किसी बड़ी शक्ति या ईश्वर की तरफ से बोलने वाला बने। धर्मों के कुछ संस्थापक अद्भुत व्यक्ति हो गए हैं—लेकिन अगर उनका खयाल आदमियों की शक्ल में न करूं तो उनकी सारी शान मेरी नजर में जाती रहती है। जिस बात का मुझ पर असर होता है और जिससे मेरे दिल में उम्मीद बंधती है, वह यह है कि आदमी के दिमाग और उसकी रूह ने तरक्की हासिल कर ली है, न कि यह कि वह एक पैगाम लाने वाला एलची बन गया है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०२

आदर्श

इंसान भले ही तारों तक पहुंच न पाए, लेकिन उनकी तरफ देखा तो करता ही है। तो सिर्फ इसलिए अपने आदर्शों को नीचे करना ठीक नहीं, कि वे बहुत ऊंचे हैं—भले ही आप उनको पूरा-पूरा हासिल न कर सकें।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (खण्ड १), पृ० १०१

आपको अपने को एकदम साफ करके सामने रखना होगा, नहीं तो आप अपने सपनों की महान् इमारत कैसे बना सकेंगे? क्या आप मिट्टी की झोंपड़ी की बुनियाद पर महल खड़ा कर सकते हैं, या तिनकों से बढ़िया पुल बना सकते हैं? अपने आदर्श के सम्बन्ध में निश्चित विचार रखकर आप अपने उद्देश्यों की

स्पष्टता और कार्य की प्रभावकारिता को प्राप्त कर सकेंगे, और आप जो भी कदम उठाएंगे वह आपको आपके हृदय की इच्छा के नजदीक ले जाएगा।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० १८५

किसी उच्चादर्श में कुछ आस्था होना—अपने जीवन को सार्थक करने और हमें बांधे रखने के लिए आवश्यक है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (खण्ड ३), पृ० ५१

मैं जिस चीज के बारे में सोचता हूं, वह केवल हमारी भौतिक प्रगति ही नहीं है। बल्कि वह है—हमारे लोगों के गुण और गहराई। औद्योगिक प्रक्रिया से ताकत हासिल करके, क्या मेरे देशवासी अपने आपको व्यक्तिगत धन-लिप्सा और आराम-तलबी में खो बैठेंगे? ऐसा होना एक बहुत बड़ी विपत्ति होगी, क्योंकि यह उन सब आदर्शों को नकारना होगा—जो अतीत में भारत के सामने रहे हैं, और मैं आशा करता हूं कि वर्तमान काल में भी ऐसा ही हो।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५५

मैं समझता हूं कि शायद दुनिया में कोई ऐसा हो—और मैं किसी दूसरे देश के लिए असम्मान की बात नहीं करता, जिसके सामने भारत के जैसा ऊंचा आदर्श हो—और साथ ही मैं यह भी कहना चाहूंगा कि शायद ही कोई ऐसा मुल्क हो, जहां आदर्श और अमल में इतना बड़ा फर्क हो।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०१

आरामतलबी

इससे ज्यादा खतरनाक बात कोई नहीं है—कि कौम भर आराम-तलबी और खुदगर्जी में पड़ जाए, और भूल जाए कि उसके क्या फर्ज है, भूल जाए कि क्या उसके उसूल और सिद्धान्त

है, भूल जाए कि क्या-क्या खतरे उसके चारों तरफ हैं। क्योंकि वही असल कमजोरी होती है। बाकी सब कमजोरियां उसके सामने कुछ नहीं हैं।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३३

आर्थिक लोकतन्त्र

अन्तिम लक्ष्य आर्थिक लोकतन्त्र है। अन्तिम लक्ष्य यह है कि गरीब और अमीर के भेद और उन लोगों का अन्तर खत्म हो—जिनमें से कुछ के पास अवसर हैं, और दूसरे जिनके लिए किसी तरह के अवसर नहीं हैं या बहुत थोड़े हैं। इस लक्ष्य के रास्ते की हर रुकावट को हटा देना होगा, भले ही यह काम दोस्ती और सरकार के ज़रिये हो—और चाहे कानून और सरकार के जोर में।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०८

आर्थिक समानता

यदि देश में आर्थिक असमानता रही, तो दुनिया-भर का राजनीतिक लोकतन्त्र और वयस्क-मताधिकार मिलकर भी सच्चा लोकतन्त्र नहीं ला सकते। इसलिए आपका लक्ष्य यह होना चाहिए कि वर्ग-वर्ग के सब तरह के भेदभाव खत्म हों, और अधिक समानता तथा समतायुक्त जीवन बने, और दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आर्थिक लोकतन्त्र ही आपका लक्ष्य होना चाहिए। हमें इस दृष्टि से सोचना है, कि आखिर में चल कर हमें अपने जीवन को एक प्रगतिशील जीवन के रूप में विकसित करना है। मैं नहीं जानता, शायद यह अभी बहुत दूर का आदर्श है, लेकिन बहरहाल हमें इस बात को ध्यान में जरूर रखना है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम भाग), पृ० १०८

आलोचना

एक व्यक्ति तथा राष्ट्र के लिए अच्छी बात है—कि वह हमेशा यह जानने की कोशिश करे कि वह कहां गलती पर है, और उसे सुधारे। आलोचना से कभी डरना नहीं चाहिए। मैं आलोचना का स्वागत करता हूं। मैं उसका उतना स्वागत तब नहीं करता, जबकि उसके पीछे हमारी बदनीयती का संकेत किया जाता है। स्वाभावतः इसे कोई भी पसन्द नहीं करेगा।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ८१

किसीके विचारों की कड़ी आलोचना को जाती हमला नहीं मानना चाहिए। कोई किसीके विचारों की कड़ी आलोचना कर सकता है, और फिर भी उसका अच्छा मित्र बना रह सकता है। सार्वजनिक जीवन के स्वस्थ और जनतांत्रिक विकास के लिए यह जरूरी है कि कड़ी और खुली आलोचना हो।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (भाग ७), पृ० ४०४

जो बात आपको समझनी है, वह यह कि हम खुद क्या कर सकते हैं। पड़ोसी की नुक्ताचीनी तो सब कर सकते हैं, लेकिन खुद क्या कर सकते हैं?

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३८

यह बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण है कि मूर्खतापूर्ण और गलत सूचनाओं से भरी हुई—व्यक्तिगत प्रकार की आलोचनाएं की जाएं, क्योंकि ये लोगों का ध्यान वास्तविक समस्याओं से हटा देती हैं।

—आत्मकथा

हम आलोचना चाहते हैं, आप कहना चाहें तो कह लें कि हम विरोध भी चाहते हैं। मुझे इनकी चिंता नहीं। लेकिन यह अत्यधिक निराशा की भावना मुझे अच्छी नहीं लगती—और

भारत के भविष्य के विषय में अशुभ वचनों का प्रयोग मुझे अच्छा नहीं लगता।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ८५

हर सरकार में जोरदार आलोचना और मुखालफत से नाराज होने की प्रवृत्ति होती है; और जनतन्त्र सिर्फ तभी ठीक तौर से काम कर सकता है, जब जनमत लगातार सरकार पर नियंत्रण रखता है और उसे बहुत ज्यादा निरकुश होने से रोकता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (भाग १), पृ० ३६०

आशावाद

केवल आशावादी होना और वस्तुस्थिति को न देखना मूर्खता है। लेकिन यह उससे कम मूर्खता नहीं कि निराशावादी हुआ जाए, और अपने ऊपर सभी प्रकार की आपत्तियों के आने की कल्पना की जाए।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ८५

इंजीनियर

जब इंजीनियर आराम से दफ्तर की कुर्सी पर बैठकर सिर्फ हुक्म जारी करना शुरू कर देता है, तो वह बेकार हो जाता है और अवकाश-प्राप्ति की स्थिति में पहुंच जाता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ११६-१२०

इतिहास

असली इतिहास में इधर-उधर के कुछ इने-गिने व्यक्तियों का वर्णन नहीं होना चाहिए—जिनमे राष्ट्र बनता है, जो मेहनत करते है, और अपने श्रम से जीवन की जरूरतों और सुख-

उद्देश्य

अच्छे उद्देश्यों की सिद्धि अच्छे साधनों द्वारा ही सम्भव है। यदि हम जीवन की महान् बातों की ओर लक्ष्य करते हैं, यदि हम भारत का स्वप्न बड़े राष्ट्र के रूप में देखते हैं—जोकि शान्ति और स्वतन्त्रता का अपना प्राचीन संदेश दूसरों को दे रहा है, तब हमें स्वयं बड़ा बनना है, और भारतमाता की योग्य सन्तान बनना है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड) पृ० ५

हम बड़े सवालों को अपने सामने रखें और छोटी बातों में न फंसें, क्योंकि अगर हम छोटी बातों में फंसते हैं तो बड़े सवाल छिप जाते हैं। और अगर आप बड़ी बातों को सामने न रखें, तो फिर एक बड़ा सैलाब आकर हमें बहा देता है, जबकि उसके लिए हम तैयार नहीं होते।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १७

हमें अपने राष्ट्रीय ध्येय के सम्बन्ध में स्पष्ट हो जाना चाहिए। हमारा ध्येय एक शक्तिशाली, स्वतन्त्र और जन-सत्तात्मक, भारत के निर्माण का है—जहां प्रत्येक नागरिक को बराबर का स्थान प्राप्त हो, और विकास तथा सेवा के पूरे अवसर हों, जहां आजकल प्रचलित धन और हैसियत की विषमताएं न रह गई हों, जहां हमारी मार्मिक प्रेरणाएं रचनात्मक और सहकारितापूर्ण उद्योग की तरफ केन्द्रित हों। ऐसे भारत में साम्प्रदायिकता, पार्थक्य, अलहदगी अस्पृश्यता, कट्टरता, और मनुष्य द्वारा मनुष्य से अनुचित लाभ उठाने के लिए कोई स्थान नहीं है; और यद्यपि धर्म के लिए स्वतन्त्रता है, फिर भी उसे राष्ट्रीय जीवन के राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं में हस्तक्षेप न करने दिया जाएगा। यदि ऐसा है तो जहां तक हमारे राजनैतिक जीवन का सम्बन्ध है, यह सब

हिन्दू और मुसलमान, और ईसाई तथा सिख के टंटे दूर होने चाहिए, और हमें एक संयुक्त यानि मिला-जुला राष्ट्र बनाना चाहिए—जहां व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय दोनों प्रकार की स्वतन्त्रताएं सुरक्षित हों।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० ७६-८०

उपदेशक

मेरा अपना यह अनुभव है कि जो बहुत अधिक उपदेश देता है, वह लोगों की नजर में गिर जाता है। इस तरह की बातों से लोग चिढ जाते है, और इस तरह की सलाह या उपदेश से दूसरों का भला नही होता—जैसाकि सलाह देने वाला समझता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ९९

उपनिषद

उपनिषद छानबीन की, मानसिक साहस की, और सत्य की खोज के उत्साह की भावना से भरपूर है। यह सही है कि यह सत्य की खोज मौजूदा जमाने के विज्ञान के प्रयोग के तरीकों से नहीं हुई है; फिर भी जो तरीका अख्तियार किया गया है, उसमें वैज्ञानिक तरीके का एक अंश है। हठवाद को दूर कर दिया गया है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ११७

उपनिषदों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनमें सच्चाई पर बड़ा जोर दिया गया है। 'सच्चाई की सदा जीत होती है, झूठ की नही—सच्चाई के रास्ते से ही हम परमात्मा तक पहुंच सकते हैं।' और उपनिषदों मे आई हुई यह प्रार्थना मशहूर है—'असत से मुझे सत की तरफ ले चल! अन्धकार से मुझे · :।

की तरफ ले चल ! मृत्यु से मुझे अमरत्व की तरफ ले चल !'

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ११६

कारगर तरक्की हासिल करने के लिए, उपनिषदों में तन की चुस्ती और मन की पवित्रता, और तन-मन दोनों के संयम पर बराबर जोर दिया गया है। चाहे ज्ञान सीखना हो, चाहे दूसरी ही कामयाबी हासिल करना हो—संयम, तप और कुरबानी जरूरी होती है। किसी-न-किसी तरह की तपस्या का खयाल हिन्दुस्तानी विचारधारा का एक अंग है; और ऐसा ख्याल न सिर्फ चोटी के विचारकों के यहां है, बल्कि साधारण अनपढ़ जनता मे फैला हुआ है। हजार बरस पहले यह बात रही है, और आज भी यह बात है; और अगर गांधीजी की रहनुमाई में हिन्दुस्तान को हिला देने वाले जनता के आन्दोलनों के पीछे जो मनोवृत्ति काम करती है, उसे हम समझना चाहते हैं—तो जरूरी है कि हम इस खयाल को समझ लें।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १२२-१२३

जिन सवालों पर उपनिषदों में विचार किया गया है, उनके आधिभौतिक पहलुओं को समझना मेरे लिए कठिन है; लेकिन इन सवालो पर गौर करने का जो ढंग है, उसने मुझ पर असर डाला है—क्योंकि यह हठवाद या अन्धविश्वास का ढंग नहीं है, यह ढंग मजहबी न होकर फिलसफियाना है। खयालों के कसबल को, जाच की भावना को, और दलील की पृष्ठभूमि को मैं पसंद करता हूं। बयान के ढंग मे कसाव है। यह अक्सर गुरु और शिष्य के बीच सवाल-जवाब के रूप मे मिलता है, और यह अनुमान किया गया है कि उपनिषद व्याख्यानों की तरह एक याददाश्त है—जिन्हे गुरु ने तैयार किया है या शिष्यों ने टांक लिया है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ११८

एकता

आज इस वात की जरूरत है कि हम लोगों को समझें, वे हमें समझें, और इस तरह प्यार और सद्भाव का एक वन्धन हो जाए। आजादी मिलने के वाद भारत की एक मूल समस्या एकता और दृढ़ता की है। राजनीतिक एकीकरण तो पूरा हो गया है, लेकिन वह काफी नहीं है।—आज भारत की जो सवसे वड़ी समस्या है वह उतनी राजनीतिक नहीं, जितनी मनोवैज्ञानिक रूप से एकता और दृढ़ता की है। भारत को अपने लिए ऐसी एकता की जरूरत है, जो प्रान्तवाद और सम्प्रदायवाद और अन्य वादों की आवश्यकता ही समाप्त कर दे; क्योंकि ये वाद लोगों को तोड़ते और अलहदा करते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३९

हम अक्सर पूर्णतया फिरकापरस्ती, धर्म और जाति के मामले में गलत रास्ते पर चले जाते हैं। देश की एकता के वारे में हममें भावनात्मक जागृति नहीं है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ११०

हमारी फौज में हमारे देश के हर प्रान्त के, हर सूबे के रहने वाले हैं, हमारी नेवी में, एयर-फोर्स में हर प्रान्त के लोग हैं, हर धर्म-मजहव के लोग हैं। सव मिलकर हिम्मत से, वहादुरी से काम करते हैं, आपस में झगड़ा नहीं करते। हमारी फौज हिन्दुस्तान की एकता का, इत्तहाद का नमूना है। हमें इस तरह की एकता और फौजीपन सारे करोड़ों आदमियों में पैदा करना है।

लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५१

औद्योगीकरण

औद्योगीकरण का मतलव है—धन और मुल्क की वैंकिंग

प्रणाली पर नियंत्रण। अगर सामान्य जनता को फायदा पहुंचाना है, तो वैज्ञानिक तरीके से औद्योगीकरण किया जाना चाहिए। इस मकसद को हासिल करने के लिए माली तरीके को बदलना पड़ेगा। उसमें मुनाफे की प्रेरणा नहीं होनी चाहिए। यह देखना हुकूमत करने वालों का कर्त्तव्य है, कि जो माल तैयार होता है—उसे खरीदने के लिए लोगों के पास पैसा हो। जब तक ऐसा नहीं होता, दुनिया की मौजूदा हालत में सुधार नहीं होगा। समाजवाद इसीको सुलझाने का तरीका है। कोई इसे पसन्द करे या न करे, इससे छुटकारा नहीं है। वह आकर रहेगा!

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय ((खण्ड ७), पृ० ३२५

कुछ लोगों का कहना है कि उद्योगों को भूलकर हम खेती की बात करते रहते हैं। मैं उद्योगों के विकास को सबसे अधिक महत्त्व देता हूं, लेकिन मुझे शक है कि अपनी खेती-बाड़ी की बुनियाद पक्की किए बिना हम किस तरह वास्तविक औद्योगिक विकास कर सकते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २२६

मुझे इसमें जरा भी संदेह नहीं, कि हम देश में बड़े-बड़े उद्योगों के विकास के बिना लोगों का जीवन-स्तर ऊंचा नहीं उठा सकते। बल्कि मैं और आगे बढ़कर यहां तक कहना चाहूंगा—कि उसके बिना हम आजाद भी नहीं रह सकते।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०७

मुझे बड़ी या छोटी मशीनों पर आपत्ति नहीं है, और मेरा खयाल है कि अगर ठीक से उनका इस्तेमाल किया जाए, तो उन्हें आदमी की सेवा करने वाला बनाया जा सकता है, न कि उस पर हुकूमत करने वाला।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० २२३

मैं औद्योगीकरण और बड़ी मशीनों पर यकीन करता हूं, और मैं सारे हिन्दुस्तान में फैक्टरियां खुल जाना पसंद करूंगा। मैं हिन्दुस्तान की दौलत और हिन्दुस्तान के बाशिन्दों के रहन-सहन को ऊंचा उठाना चाहता हूं, और मुझे लगता है कि ऐसा करने का सिर्फ यह तरीका है कि उद्योग मे साइंस का इस्तेमाल किया जाए, ताकि बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण हो। मेरी निजी ख्वाहिशों के अलावा, मेरा ख्याल है कि मौजूदा हालत में यह लाजमी नतीजा है—कि मुल्क में तेजी के साथ कारखाने बढ़ेंगे, लेकिन फिर भी मैं हिन्दुस्तान के मौजूदा हालात में, हाथ की कताई और खद्दर की ताईद करता हूं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० २५

लेकिन हमे हमेशा समझना चाहिए, कि इस देश में करोडों लोगों की समस्या भी अकेले भारी उद्योगों से हल नही हो सकती। हमें घरेलू और ग्रामीण उद्योग बहुत बडे पैमाने पर विकसित करने होंगे; लेकिन साथ ही इस बात का भी बराबर ख्याल रखना होगा—कि बड़े और छोटे उद्योग बढ़ाते हुए हम इंसान को न भूल जाएं। हम सिर्फ अधिक दौलत या अधिक उत्पादन ही नही चाहते, आखिरकार हम बेहतर इंसान भी चाहते हैं।

जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०७

कथनी-करनी

किसी भी व्यक्ति को उस समय सबसे अधिक सन्तोष होता है, जब उसकी कथनी और करनी एकाकार हो जाती है। उस समय उसका एक सुगठित व्यक्तित्व होता है, और वह असन्दिग्ध भाव से, शक्ति और बल के साथ काम करता है।

नेहरू और नई पीढ़ी - हरिदत्त शर्मा, पृ० ११२

कर्त्तव्य

अगर आप बड़े देश के बड़े नागरिक है, तो आपको और हमको भी बड़े दिल का और बड़े दिमाग का होना है। छोटे आदमी बड़े काम नही करते, छोटे आदमी बड़े सवालों को हल नही कर सकते, न हम शोर-गुल मचाकर हल कर सकते हैं, न नारों से, न शिकायतों से, न एतराज से, न दूसरों को भला-बुरा कहने से। अगर हम एक-एक आदमी और औरत अपना कर्त्तव्य पूरा करें, अपना फर्ज अदा करें, तो फिर हमारे लिए भला है और देश के लिए भला है। अगर हर एक आदमी समझे कि कुछ करना दूसरे का काम है, और हमारा काम खाली देखना है—तब यह देश चल नही सकता। हर एक को अपना काम करना है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १५

कला

कला किसी भी समय की सभ्यता और जिंदगी का विश्वासनीय दर्पण है। जब भारतीय सभ्यता जीवित थी, इसने सौन्दर्यपूर्ण वस्तुओं का निर्माण किया और कला विकसित हुई, तथा इसकी ध्वनि सुदूर देशों तक पहुंची।

—विश्व-इतिहास की झलक

भीड की सतही कार्यवाहियों की अपेक्षा, कला और साहित्य राष्ट्र की आत्मा को महान् अन्तर्दृष्टि प्रदान करते है। वे हमें शान्ति और निरभ्र विचारों के राज्य में ले जाते है जो क्षणिक भावनाओं और पूर्वग्रह से प्रभावित नही होते।

—विश्व-इतिहास की झलक

कलाएं

हमारे धर्म, कला, संगीत और दर्शन की उच्चता के बारे में

बहुत कुछ कहा जाता है। लेकिन आज ये क्या है? धर्म रसोई-घर की चीज बन गया है—कि आप क्या खा सकते हैं और क्या नहीं खा सकते, किसको आप छू सकते हैं, किसको नहीं छू सकते और किसको देख सकते हैं, किसको नहीं देख सकते।

हमारा संगीत क्या है? हमारा राष्ट्रीय संगीत नरक का हो-हल्ला और तकलीफदेह शोर है, जो हमारी सड़कों पर एक तरह की बदतमीजी है। यह भी कभी-कभी साम्प्रदायिक शक्ल अख्तियार कर लेता है और अक्सर दुःखद मामला बन जाता है। हमारी कला क्या है? हमारे मुल्क के बाशिंदों के घरों में खूबसूरती की क्या चीज है? हमारे अपने घरों में भी क्या है? हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय साहित्य क्या है? जहां तक मैं जानता हूं—हिन्दी और उर्दू के आधुनिक साहित्य के नाम पर जो चलता है, वह गंदला है और भावुकता से भरा है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० १८०

कश्मीर-समस्या

कश्मीर के भाग्य का अन्तिम निर्णय वहां के लोगों के हाथ रहेगा। हमने यह प्रतिज्ञा न केवल कश्मीर के लोगों से, बल्कि सारे संसार से कर रखी है, और महाराजा ने इसका समर्थन किया है। हम इससे पीछे न हटेंगे और न हट सकते हैं। हम इसके लिए तैयार हैं कि जब कश्मीर में शान्ति और व्यवस्था और कानून स्थापित हो जाए, तो संयुक्त-राष्ट्र जैसे अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण में जनमत लिया जाए। हम चाहते हैं कि जनता को न्याय और उचित ढंग से मत देने का अवसर मिले, और हम उसके निर्णय को स्वीकार करेंगे। इससे अधिक न्यायपूर्ण और उचित प्रस्ताव की मैं कल्पना नहीं कर सकता।

जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १६

कष्ट

अपनी तकलीफों को और मुसीवतों को सहना काफी आसान है। इससे हर एक को फायदा होता है, वरना हम लोग वहुत नाजुक वन जाएं। लेकिन दूसरे लोगों की, जो हमें प्रिय हैं—मुसीवतों के वारे में सोचना कोई वहुत आसान या तसल्ली देने वाली वात नही है।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० १६

काम

काम का अन्दाजा यह है कि इस मुल्क में ऐसे कितने लोग है—जिनकी आखों से आंसू वहते हैं उनमें से कितने आंसू हमने पोंछे, कितने आंसू हमने कम किए। वह अन्दाजा है इस मुल्क की तरक्की का, न कि इमारतें जो हम वनाएं, या कोई शानदार वात जो हम करें।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४६

किसी आदमी को मिलने वाली तनख्वाह से, या उसके पद से जुड़े हुए पद नाम से उसकी लियाकत आंकना एक गलत तरीका है। इस तरह के भाव मुझे अच्छे नही लगते, और आप जानते ही हो हैं कि मै अपने वुढ़ापे मे ही प्रशासन में आया हूं। आदमी की कीमत जाचने के लिए मैंने जो कोई भी तरीका सीखा, उसकी तनख्वाह उसकी पोशाक या उसके मकान से कोई संवंध नही रखा। मैने अपनी सारी जिन्दगी लोगों को विल्कुल दूसरी ही निगाह से मापा है, और मैं अभी भी उसी तरीके मे विश्वास रखता हूं। यह मुमकिन है कि मैं एक चपरासी को उसीके अपने अफसर मे ज्यादा गौरव और आदर दू, और इसमें मुझे कोई गलती नही दिखाई देती। निश्चय ही इज्जत

या आदर काम के लिए होता है, आदमी को मिलने वाली तनख्वाह के लिए नहीं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ११९

जिस काम को हम करते हैं, अगर वह अच्छा है और मजबूत है—तो वह काम चलता जाएगा, वह काम कायम रहेगा, चाहे हम रहें या न रहें। और हमारा देश भी कायम रहेगा और चलता जाएगा, चाहे कितने ही लोग आएं और कितने ही जाएं।

लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १३

कायरता

डर और कायरता सबसे बड़े गुनाह हैं, जिनकी बदकिस्मती से हमारे मुल्क में कमी नहीं। गुस्सा और नफरत, हमारे अन्दर जो डर और कायरता है, दरअसल उसीके नतीजे हैं। इस डर और कायरता से अगर हम बरी हो जाएं, तो फिर इसमें नफरत की भावना बहुत कम रह जाएगी, और आगे बढ़ने के रास्तों में और कोई रुकावट भी नहीं रहेगी। इसलिए इस कायरता को हमें बुनियाद से खत्म कर देना चाहिए और किसी तरह का ठिकाना उसे नहीं देना चाहिए। इससे भी बड़ी बात यह है, कि जैसा बदकिस्मती से अक्सर होता है, अहिंसा के बाने में छिपे तौर पर इसे हरगिज नहीं पनपने देना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड १), पृ० १६५-१६६

किसान

सबसे बड़ी बात यह है, कि कोशिश होनी चाहिए कि किसानों के वास्तविक संगठन बनें और महज शहर के कुछ लोगों को साथ रखकर कागजी तमाशा न हो। किसानों के बीच वास्तविक काम तभी हो सकता है, जब कि देहाती क्षेत्रों

में—जहा एक योग्य आदमी जाकर रहे और काम करे—काम के केन्द्र खुलें। यह आदमी एक किसान-सभा का संगठन कर सकता है, देहाती स्कूल-मास्टर का काम कर सकता है, सहकारी प्रवृत्तियों में कुछ मदद दे सकता है, झगड़े निवटाने के वास्ते पंचायत-पद्धति को वढ़ावा देने के लिए कोशिश कर सकता है, और दूसरे वहुत तरह से उपयोगी सिद्ध हो सकता है। एक छोटा-सा पुस्तकालय—जिसमें कुछ अखवार आते हों, और एक ऐसा कमरा—जिसमें गांव के लोग आकर वैठ सकें, वहुत ही मुनासिव होगा।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० २४

क्रांति

क्रातिया वुड्ढे आदमियों से नही हुआ करतीं।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ५२२

सच्ची क्राति से पैदा होने वाली शक्ति हमेशा वहुत जोरदार होती है।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ५२२

हम क्राति की वात करते है, पर हमारा विश्वास यही रहता है कि क्रांति सिर्फ वह प्रक्रिया है, जिसमें आप एक-दूसरे का सिर तोड सकते है। इसे क्राति नहीं कहते। अव आप इसे अच्छा कहें या वुरा, क्राति वह चीज है, जो वर्तमान जीवन की आर्थिक राजनीतिक रचना को आमूल वदल देती है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०६

क्रिया-प्रतिक्रिया

मुझे इसमें जरा भी संदेह नही, कि यह मानव-जीवन का एक मूल सिद्धान्त है कि यदि क्रिया अच्छी होगी—तो उसकी

प्रतिक्रिया भी अच्छी होगी। अगर अपनी ओर से बुराई की गई है, तो उसकी प्रतिक्रिया भी बुरी ही होगी, और अगर हम अपने साथी मनुष्यों या देशों के साथ मित्र-भाव से काम लेंगे, और दिल और दिमाग खोलकर हर अच्छाई को स्वीकार करने को तैयार रहेंगे—तो न केवल हम दूसरे को समझ पाएंगे, बल्कि उसके बारे में सही प्रकार से समझ पाएंगे।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३५

क्रोध

लाल-लाल आखों से देखने से कोई अच्छी चीज नही होती। इससे न विचार साफ हो सकते है, और न हमारे कर्म।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २०२

खादी

सिर्फ खादी विदेशी माल को निकाल बाहर करने में कामयाब हो सकती है। फिर भी महात्मा गाधी कारखानेदारों से समझौता करने को तैयार थे, लेकिन जरूरी था कि कारखानेदार बहुत ज्यादा लालच करना छोड दे। महात्माजी चाहते थे कि मिलों के मालिक वादा करें—कि वे अपने तैयार किए कपडे का दाम बेहिसाब नही बढ़ाएंगे, और उन्हें अपने मजदूरों की मुनासिब मांगों को भी पूरा करना पड़ेगा। अगर महात्माजी और मिल-मालिकों के बीच समझौता नही हुआ, तो हमारा सीधा फर्ज होगा कि मिल के कपड़े का बहिष्कार करें, और सिर्फ खादी पहनें।

—*जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० १५७*

गणेशशंकर विद्यार्थी

श्री गणेशशंकर विद्यार्थी हमारे मुल्क के एक सच्चे अलंकार

थे। कानपुर के शर्मनाक साम्प्रदायिक दंगे में ऐसे प्यारे और उत्साही सार्वजनिक कार्यकर्ता की मौत हम सबके लिए गहरे अफसोस की बात है, लेकिन जिस अनोखी हिम्मत के साथ उन्होंने मौत को गले लगाया, उसने हमारे मुल्क की ऊंचाई बढ़ा दी है। हिन्दू-मुस्लिम एकता के सवाल पर हमारे देश ने जो कुर्बानी दी है उसमें यह सबसे ऊंची है, और हमारे सामने यह एक नया आदर्श पेश करती है। गणेशशंकर की जिन्दगी और मौत, हमारे देशवासियों के लिए हमेशा एक कीमती यादगार रहेगी, ताकि वे नाउम्मीदी और अंधेरे के बीच सही राह पर रह सकें। गणेशशंकर जलकर राख हो गए हैं, लेकिन उनके एहसानमंद देशवासी उनकी याद को हरा बनाए रखेंगे। उनकी मौत ने हम पर कुछ फर्ज डाल दिए हैं, जिन्हें तुरन्त पूरा किया जाना चाहिए। उनकी जो जिम्मेदारियां थीं, उनका कुछ हिस्सा हमें भी उठाना चाहिए, और तब हमें अपने एहसानमंद प्यार को ऐसी शक्ल देनी चाहिए, जो उनकी याद बनाए रखे और उनकी आत्मा को प्यारी हो।

— जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० २७४

गतिशीलता

भारत तकनीकी दृष्टि से पिछड़ा हुआ है, इसलिए हम लोग अपनी बड़ी-बड़ी समस्याओं पर ठहरे हुए ढंग से विचार करते हैं। यह भूल जाते हैं कि हमारे पैरों के तले की जमीन बराबर बदल और खिसक रही है। अगर हम इसके साथ नहीं बदलेंगे तो या तो गिर पड़ेंगे, या पीछे रह जाएंगे।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०६

गरीबी

एक लड़ाई हमें लड़नी है, और उसको हम सब मिलकर

और दिल लगाकर लड़ेंगे—और वह लड़ाई है हिन्दुस्तान की गरीबी से। गरीबी को यहां से जड़ से निकालना है। यह लम्बी लड़ाई है। काफी मेहनत करनी है। उसमें काफी पसीना बहेगा, लेकिन वह एक माकूल चीज है—जिससे कि हम हिन्दुस्तान के करोड़ों आदमियों को ऊंचा करें। यह बड़ा काम है और हमारी असली मंजिल है। और जब तक हम वहां पहुंचते नहीं, उस वक्त तक हमें आगे बढ़ते जाना है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४८

हम अधिकांश लोगों की गरीबी को छिपा नहीं सकते। इस गरीबी को ज्यादा उत्पादन, अधिक समान वितरण, बेहतर शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य के जरिये हटाना है, और यही हमारे सामने आज सबसे बड़ी जरूरत और सबसे बड़ा काम है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १६३

गलत बात

गलत बात को करके कोई अच्छा फल हासिल नहीं करता। यह एक बुनियादी बात है, जिसको अगर हम भूलें तो हमारा सारा काम बिगड़ जाएगा।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५२

गांधीजी

उपवास के अर्से में मैं ज्यों-ज्यों जज्बाती उथल-पुथल देख रहा था, मैं ज्यादा-से-ज्यादा चक्कर में पड़ता जा रहा था कि सियासत में क्या यह सही तरीका है? यह फकत एक धार्मिक पुनर्जागरणवाद है, और इसके मुकाबले साफ सोच-विचार की कोई गुंजाइश नहीं है। तमाम हिन्दुस्तान, या इसका ज्यादातर हिस्सा, आदर के साथ महात्मा की ओर टकटकी लगाए हुए है, और उम्मीद करता है कि वे अजूबे-पर-अजूबा करते चले जाएंगे,

और छूआछूत मिटा देंगे, और स्वराज वगैरह हासिल कर लेंगे—और खुद वह कुछ नहीं करता। और बापू पवित्रता और त्याग की बातें करते चले जाते हैं। मुझे लगता है कि अपने जज़्बाती लगाव के बावजूद मैं उनसे दिनों-दिन दूर हटता जा रहा हूं। उनका हर बात में ईश्वर का हवाला देना, मुझे बेहद चिड़चिड़ा बना देता है। कभी भूल न करने वाली एक सहज प्रेरणा उनके हर राजनीतिक काम की रहबरी करती है, लेकिन वे दूसरों को सोचने के लिए बढ़ावा नहीं देते। यहां तक कि खुद उन्होंने—क्या उन्होंने सोचा है कि मंजिल क्या है, आदर्श क्या होना चाहिए? बहुत करके नहीं सोचा! ऐसा लगता है कि अगले कदम ने उन्हें खींच लिया है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ४६६-४६७

गांधीजी कोई तानाशाह नहीं थे; वह चाहते तो किसी पर भी अपनी मर्जी थोप सकते थे; लेकिन जब उन्होंने ऐसा किया भी, तो भी प्यार और स्नेह के साथ—और उस आदर व सम्मान के साथ, जो उनके और उनकी बुद्धिमत्ता के लिए हमारे दिल में था। अक्सर हम उनके साथ बहस करते, लड़ते-झगड़ते, और कभी-कभी अपने दृष्टिकोण से उनको सहमत भी करा लेते थे।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४९

ज्यों-ज्यों मैं उनके (लेनिन) तर्कवाद की ओर खिंचता जाता हूं, त्यों-ही-त्यों मुझे बापू और अपने बीच की खाई का एहसास होता है, और शक होने लगता है कि किसी मुल्क को तैयार करने के लिए विश्वास का यह तरीका सही है? थोड़े वक्त के लिए इससे फायदा हो सकता है, लेकिन लंबे अर्से में?

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ४६७

मैंने कहा कि प्रकाश जाता रहा—लेकिन मैंने गलत कहा, क्योंकि वह प्रकाश, जिसने कि इस देश को आलोकित किया, कोई साधारण प्रकाश नहीं था। जिस प्रकाश ने देश को इन अनेकों वर्षों में आलोकित किया है, वह आने वाले अनेक वर्षों तक इस देश में दिखाई देगा, और दुनिया इसे देखेगी और वह अनगिनत दृश्यों को शान्ति देगा। क्योंकि वह प्रकाश तात्कालिक वर्तमान से कुछ अधिक का प्रतीक था—वह जीवित और शाश्वत सत्यों का प्रतीक था, और हमें ठीक मार्ग का स्मरण दिलाते हुए तथा इस प्राचीन देश को भूलों से बचाते हुए स्वतन्त्रता की ओर ले जाने वाला था।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २४०

गांधी-विचारधारा

हम लोग राजनीतिक दृष्टि से गांधीजी के सिद्धान्तों के बीच जन्मे और पले हैं; यद्यपि हमने गाधीजी के विचारों को-न तो अहिंसा के विषय में, न अर्थशास्त्र के विषय में पूरी तरह ग्रहण किया है। फिर भी हमने उनमें से वहुतों को ग्रहण किया, जो हमारे देश के लिए उपयुक्त थे—और हो सकता है, संसार के लिए भी कुछ हद तक उपयुक्त हों।

— जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ८५

गीता

गीता का संदेसा सांप्रदायिक या किसी एक खास विचार के लोगो के लिए नही है। क्या ब्राह्मण और क्या अजात, यह सभी के लिए है। यह कहा गया है कि—'सभी रास्ते मुझ तक पहुंचाते हैं।' इसी व्यापकता की वजह से सभी वर्ग और संप्रदाय के लोगों को गीता मान्य हुई है। इसमें कोई बात ऐसी है कि

हमेशा नयापन पैदा किया जा सकता है, और जमाना गुजरते के साथ पुरानी पड़ने से इसे रोकता है—यह जिज्ञासा और जांच-पड़ताल का, विचार और कर्म का—और वावजूद संघर्ष और विरोध के, समतोल कायम रखने का कोई खास गुण है। विषमता के बीच में भी हम उसमें एकता और संतुलन पाते हैं, और वदलती हुई परिस्थिति पर विजय पाने का रुख, और यह इस तरह नहीं कि जो कुछ सामने है—उससे मुंह मोड़ा जाए, वल्कि इस तरह कि उसमें अपने काम के लिए जगह वनाई जाए।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १४४-१४५

संकट के वक्त—जव आदमी का दिमाग संदेह से सताया हुआ होता है, और अपने फर्ज के वारे में उसे दुविधा दो तरफ खींचती होती है, वह रोशनी और रहनुमाई के लिए गीता की तरफ और भी झुकता है, क्योंकि यह संकट काल के लिए लिखी गई कविता है—राजनीतिक और सामाजिक संकटों के अवसर के लिए, और उससे भी ज्यादा इंसान की आत्मा के संकट काल के लिए।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १४३

गुलाम मुल्क

जव कोई मुल्क विदेशी हुकूमत में रहता है, तो वह अपनी मौजूदा हालत के ख्याल से वचने के लिए, गुजरे हुए जमाने के सपनों से अपने को वहलाता है, और उसे अपनी पुरानी वड़ाई की कल्पना से शान्ति मिलती है। यह एक वेवकूफी का और खतरनाक दिल-वहलाव है, जिसमें हममें से ज्यादातर लोग रहते हैं। इतनी ही काविल-ऐतराज आदत हम लोगों की हिन्दुस्तान में यह है, कि हम ख्याल करते है कि अगरचे दुनियावी वातों में हम पस्ती पर पहुंच चुके है, रूहानी तौर पर हम अव

भी बड़े है। आजादी और तरक्की के मौकों को खोकर, और फाकाकशी और दुःख की नीव पर हम रूहानी या किसी तरह की इमारत नही खड़ी कर सकते। बहुत से पश्चिमी मुल्कों के लिखने वालों ने इस ख्याल को बढ़ावा दिया है कि हिन्दुस्तान के लोग गैर-दुनियावी है। मैं समझता हूं कि सभी मुल्कों में गरीब और बदकिस्मत लोग गैर-दुनियावी होते है—यह दूसरी बात है कि वे बगावती बन बैठें—क्योंकि यह दुनिया उनके लिए नहीं है। यही हालत गुलाम मुल्क के लोगों की होती है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०६

गुलामी

अब वक्त आ गया है, जब लोगों को दूसरों के पैर छूना बन्द कर देना चाहिए। मुझे यह गुलामी का एक निशान जान पड़ता है। अगर हम आजाद इंसान होना चाहते हैं, तो हमें आजाद आदमियों की तरह सलूक करना चाहिए, और दूसरों के पैर छूना या हमेशा झुके नहीं रहना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ४६०

घृणा और हिंसा

युद्धों ने सिखाया है कि घृणा और हिंसा से आप शान्ति का निर्णय नही कर सकते। ये परस्पर विरोधी बातें हैं। इतिहास के लम्बे दौर की, और विशेषकर पिछले दो महायुद्धों की जिन्होंने कि मानवता का भीषण संहार किया, यह शिक्षा रही है कि घृणा हिंसा को ही जन्म देती है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १७१

चिन्तन

हम लोग भौतिक घटनाओं को एक नपे-तुले ढंग से सोचने

और उनकी व्याख्या करने के इतने आदी हो गए हैं—कि हमारे दिमागों के लिए यह सब समझ सकना मुश्किल है। लेकिन यह बड़ी मार्के की बात है, कि बुद्ध का यह फिलसफा हमें आजकल के भौतिक-विज्ञान की धाराओं और दार्शनिक विचारों के इतना निकट ले आता है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १७१

चुनाव

जन-सत्तावाली या जमहूरी हुकूमत के लिए चुनाव जरूरी और लाजिमी होता है, इसलिए इससे बचत नही हो सकती। फिर भी चुनाव बहुत अक्सर इंसान के बुरे पहलू को सामने लाते है, और यह बात नही कि हमेशा ज्यादा अच्छे उम्मीदवार की ही जीत होती हो। संवेदनशील लोग—और वे लोग, जो अपने को आगे बढ़ाने के लिए बहुत-से चालू हथकंडे अख्तियार नही कर सकते--घाटे मे रहते है—इसलिए वे इस झगड़े मे बचना चाहते है। तो क्या प्रजा-सत्ता या जमहूरियत उन्ही का मैदान है, जिनकी जिल्दें मोटी और आवाजे ऊंची होती है, और जिनका ईमान लचीला होता है ?

— हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ८२-८३

यह एक गलत धारणा है कि भारत की सेवा विधान-मंडलों में जाने से ही की जाती है। इसमे शक नही कि विधान-मंडलों में जाकर भी लोग भारत की सेवा कर सकते है, लेकिन बाहर रहकर और बहुत कुछ कर सकते है। चुनाव बार-बार आएंगे, और उनके बारे में बहुत अधिक उत्तेजित होना ठीक नही है। बड़ी शान्ति से हम उनका सामना करें—और उन्हे स्वाभाविक ढंग से ग्रहण करें।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम भाग), पृ० २७५

सही तरीके से हारना, गलत तरीके से जीतने से कहीं अच्छा है। सच तो यह है कि अगर गलत तरीकों और अनुचित हथकंडो से सफलता मिले भी, तो उस सफलता का मूल्य खत्म हो जाता है।

जवाहरलाल नहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २७४

चोरबाजारी

हमारे मुल्क में काफी लोग ऐसे हैं, जो अब तक दूसरे की मुसीबत से पैसा बनाने की कोशिश करते हैं, चाहे वे व्यापारी हों, चाहे दुकानदार हों या और हों—खुदगर्जी में, खाने का सामान जमा करते हैं, ताकि ज्यादा दाम मिलें, या कभी साल-दो साल उन्हें जरूरत हो, तो उसको काम में ला सकें।—अगर आप और हम यह तय कर लें कि इस बात को हमें खत्म करना है, चाहे वह काला-बाजार कहलाए, होर्डिंग कहलाए, खाना जमा करना या जो भी उसका नाम आप लें, या चीजों का बेमाने दाम बढ़ाना—तो उसको हम रोकेंगे। अगर हमने और आपने मिलकर इरादा किया तो यकीनन वह रुकेगा, और जो नहीं रोकेगा—वह काफी सजा पाएगा।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० २७-२८

छिपाश्रो नहीं

कोई काम खुफिया तौर पर न करो, कोई काम ऐसा न करो—जिसे तुम्हे दूसरों से छिपाने की इच्छा हो।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ■

जड़वाद

जड़वादियों ने विचार,मजहब और आध्यात्म में प्रमाण का,

और सभी निहित स्वार्थ का विरोध किया। उन्होंने वेदों की, पुरोहिताई की परंपरा में आए हुए यकीनों की निन्दा की, और यह ऐलान किया कि अकीदे को आजाद होना चाहिए, और उसे पहले से मान ली गई बातों या सिर्फ पुराने जमाने के प्रमाण का भरोसा न होना चाहिए। सभी तरह के मंत्र-तंत्र और अन्ध-विश्वास की उन्होंने बुराई की। उनका आम रवैया बहुत कुछ आज के जड़वादियों जैसा था—ये अपने को गुजरे हुए जमाने की जंजीरों और बोझ से—जो चीजें नहीं दिखाई देतीं, उनकी कल्पना से, और खयाली देवताओं की पूजा से आजाद करना चाहते थे।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १२८

जनता का हित

हम किसीका बुरा नहीं चाहते, लेकिन यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि अपनी चिर-पीड़ित जनता के हितों का ध्यान हमें सबसे पहले होना चाहिए, और अन्य स्वार्थों को उनके आगे झुक जाना चाहिए। हमें अपनी दकियानूसी भूमि-व्यवस्था को शीघ्र ही बदलना है, और हमें एक बड़े और संतुलित पैमाने पर उद्योग-व्यवसायों को उन्नत करना है—जिससे कि देश की संपत्ति बढ़े, और लाभ उचित रूप में वितरित हो सके।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६

जनमत

हमारी बराबर नीति रही है कि जहां भी किसी रियासत के दोनों में से किसी भी देश में मिलने के विषय में झगड़ा हो, वहां रियासत की जनता का निर्णय ही माना जाएगा।

जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १४

जमींदार

मेरी राय में, जमीदारों की जमात बिल्कुल फालतू है। मै तो जमींदारी का मतलब समझ ही नही पाता। जो शख्स काम करता है, उसे अपनी मेहनत का फल मिलना चाहिए; और जो शख्स गद्दी पर बैठा रहता है, उसे कुछ नही मिलना चाहिए। अगर मेरा बस चले तो मैं ऐसा इन्तजाम करूं कि कोई भी खाली न बैठा रह सके—और जो शख्स ज्यादा कड़ी मेहनत करे उसे ज्यादा मिले, और जो कम काम करे उसे कम मिले। यही मेरा हल है। दूसरे मुल्कों की तरफ देखिए। इन जगहों के जमींदार धीरे-धीरे गायब होते जा रहे हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वे भाग जाएं, बल्कि यह कि अपने को खाली देख उन्हें काम में लग जाना चाहिए। खेत किसान का होना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० २५०

जाति

जब कोई कौम कमजोर हो जाती है, जब किसी कौम की हर वक्त आजमायश नही होती, तो वह ढीली हो जाती है।—अब हमारे और आपके सारे मुल्क के सामने, ज्यादा सख्त इम्तहान और आजमाइशें आई है। और जिस दरजे तक हम उनका हिम्मत से सामना कर सकते है, उस दरजे तक हम कुछ कामयाब होते हैं।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० २२

याद रखिए, लोग आते हैं—जाते हैं, और गुजरते हैं। लेकिन मुल्क और कौमें अमर होती है, वे कभी गुजरती नही है, जब तक कि उनमें जान है, जब तक कि हिम्मत है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १२

जाति-भेद

हमारे मुल्क में जाति-भेद है। अलग-अलग जातिया है, कोई अपने को ऊंचा समझता है, कोई जाति नीची समझी जाती है। इस चीज ने हमारे देश मे काफी दीवारें पैदा की हैं, फूट पैदा की है, हमें वदनाम और कमजोर किया है—इस चीज का हमें मुकावला करना है। जोरों से मुकावला करना है, पूरे तौर से करना है, जब तक कि हम इसका पूरे हिन्दुस्तान से पूरा खात्मा नहीं कर देते, हमें इसके साथ कोई रहम नही करना है। पुराने जमाने में उसकी जो जगह थी—वह थी; पर आजकल के जमाने में उसकी कोई जगह नही है। और जो लोग जातिवाद को ज़रा भी रहम के साथ देखते है, ज़रा भी उससे घवड़ाते हैं, ज़रा भी उससे डरते हैं कि भाई कही लोग हमसे नाराज न हों जाएं—वे कमजोर हैं, वुजदिल हैं!

लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६५

जाति-व्यवस्था

जव जाति-व्यवस्था व्यवहार में आई तो यह वहुत अच्छी थी, किन्तु पिछले कई सौ वर्षो में इसने राष्ट्रीय और सामाजिक रूप मे हमें कमजोर किया है। इसने हमे पदक्रम में विभाजित कर दिया है—कुछ अपने को उच्च जाति का, कुछ मध्यम जाति का, कुछ निम्न जाति का, और कुछ विना जाति का पुकारने लगे है।

—त्रिचूर मे भाषण (२६ दिसम्बर १९६५)

जिंदगी : जीवन

किसी मुल्क की जिंदगी में पचास साल का अरसा, कोई वहुत ज्यादा अरसा नहीं होता। यह हिन्दुस्तान के हजारों-हजार

साल के गुजरे जमाने में जैसे एक कौंध है। फिर भी इंसान की जिंदगी में पचास साल एक लम्बा अर्सा है, और इसको कोशिशों और कामयावियों से भरा जा सकता है। इन पचास वरसों ने एक जमाने का अन्त, और सब जगह एक जबर्दस्त तब्दीली देखी है। इस अर्से में हमने क्या कुछ किया है? क्या इस जिंदगी की हमेशा बहती रहने वाली नदी के साथ चले है—और हमने बदलते हुए हालात के साथ अपने को बदला है, या कि हम ठहरे हुए पानी में रहे हैं—जो जहा-का-तहा रहता है और जिसमें बहुत कम बदलाव होता है—सेवार मे फंसे हुए, जो हमें निकम्मा कर देता है, और हमारे दिमाग और जोश को कुंद कर देता है? असली बदलाव और विकास, दिमाग और जोश का होता है; बाकी सब-कुछ उसके साथ आता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ४५-४६

जिंदगी और उसके मसलों पर मेरा सारा नजरिया साइंस है, और मजहब और इसके तरीकों के लिए मैने कभी कोई कोशिश नही की। सेक्स, वर्थ-कंट्रोल, संयम वगैरह पर श्रीगांधी के खयालात के मैं बिल्कुल खिलाफ हूं। मैं मशीन में यकीन करता हूं और हिन्दुस्तान में इसका फैलाव चाहता हूं, लेकिन मेरा यह भी यकीन है कि इस पर समाजी कब्जा हो।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ४६६

जीवन का अर्थ ही, बदलती हुई परिस्थितियों से निरन्तर सामंजस्य बनाए रखना है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५२

तब्दीलियों के वक्त से गुजरना, हमेशा एक मुश्किल मौका

हुआ करता है। इन्सान का स्वभाव बहुत ज्यादा दकियानूसी है, और वह पुरानी लकीर का फकीर बना रहता है। लेकिन जिन्दगी में रवानी है और वह सदा बदलती रहती है। और इसलिए कभी-कभी ऐसा होता है कि जिन्दगी आगे बढ़ जाती है, और सामाजिक रीति-रिवाजों को बहुत पीछे छोड़ देती है। एक बड़ा भारी खला पैदा हो जाता है, जो समाज को आगे बढ़ने से रोकता है। लेकिन चूंकि जिंदगी को आगे बढ़ना ही है—इस खले को तेजी के साथ भरना होता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० २०५

यह बात मुझे बहुत ही पसंद आती है, कि जिंदगी की ओर हमारे रुख का किसी-न-किसी तरह का नैतिक या इखलाकी आधार होना चाहिए। हां, दलील से इसका समर्थन करना मेरे लिए मुश्किल होगा।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ३५

हमें होशियार इस बात से रहना चाहिए, कि हम ऐसी बातों के मनन के समुन्दर में न खो जाएं—जिनका ताल्लुक हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी, और उसके मसलों और इंसान की जरूरतों से नहीं है। एक जिंदा फिलसफे को ऐसा होना चाहिए, कि यह आज के मसलों का हल पेश कर सके।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ३६

जिम्मेदारी

स्वतन्त्रता और शक्ति, जिम्मेदारी लाती है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३

जेल और अधिकारी

अपनी मर्जी से जेल में कुछ वक्त गुजारना—हमारे जजों, मजिस्ट्रेटों और जेल-अहलकारों के जिस्म और रूह के लिए बड़ा अच्छा होगा। इससे वे जेल-जिन्दगी की ज्यादा असलियत भी जान सकेंगे। लेकिन जाहिर है कि अपनी मर्जी से की गई इस तरह की कोई भी कोशिश, असल बात के नजदीक कभी नहीं पहुंच सकती। उसमें गिरफ्तारी का डंक मौजूद नहीं होगा, और न हुकूमत की हथियारबंद और दीवारों से घिरी ताकत के सामने अजीब-सी लाचारी—और चूर-चूर हो जाने का जज्बा पैदा होगा—जो हर कैदी महसूस करता है। अपनी मर्जी से जेल जाने वाले के साथ, जेल वालों की ओर से बुरा सलूक भी नहीं किया जाएगा। जेल का असली मतलब है वह मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, जो इंसान को किसी सड़े-गले अंग की तरह समाज से निकाल बाहर करती है। यह बात जरूरी तौर से गैरहाजिर रहेगी। लेकिन इन सब खामियों के बावजूद, यह तजुर्बा काम का होगा—और फौजदारी कानून के अमल को ज्यादा इंसानी और फायदेमंद बनाने में मददगार होगा।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० ४७६-४७७

जेल-व्यवस्था

जेल का मकसद यह जान पड़ता है कि, किसी शख्स के अन्दर इंसानियत के जो भी निशान मौजूद हों—उन्हें मिटा दें, और उसके बाद उसके पशुवाले तत्त्व को भी इस तरह दबा दें—कि आखिर वह पूरी तरह पेड़-पौधों जैसा ही रह जाए। मिट्टी में जकड़ा, दुनिया और उसकी कार्रवाइयों से बिल्कुल कटा हुआ, सामने कोई भविष्य नहीं, आंख मूंदकर हुक्म मानते रहना ही बड़ा गुनाह माना जाता है—तब अगर कैदी पे

जैसा ही हो जाए, तो क्या इसमें ताज्जुब करने की कोई बात है ? बेशक यह बात मेरे जैसे लोगों पर लागू नहीं होती, जो कुछ वक्त के लिए ही यहां आते हैं; लेकिन दूसरे लोग जो साल-दर-साल यहां गुजार देते हैं वे, मैं सोचता हूं, भला किस बात में पेड़-पौधों से अलग हैं ? और कितने ही बरसों की लम्बी मियाद के बाद जब वे छोड़ जाते हैं, तब चहल-पहल और कामकाज की उस अजीब नई दुनिया में उन्हें कैसा लगता होगा ?

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० ३६२

जेल की हमारी यह दुनिया अलग ही है, और हम जिन देवताओं को यहां पूजते हैं—वे भी अलग हैं। सबसे पहले हम परमेश्वर—लाल फीता को माथा नवाते हैं। वह बड़ा शक्तिशाली है, और उसके हाथ-पाव लम्बे-लम्बे हैं, गणेश की तरह वह लाल है, और सर्वव्यापी है, और मन्दगामी। उसके धर्मशास्त्रों को भी अगर एक जगह इकट्ठा कर दिया जाए—तो उन सबसे भी यह अधिक महान् और वजनी है। उसके पुजारियों और सेवकों की, एक-दूसरे के साथ अजीब-अजीब इशारों में बातचीत हो जाती है। और इनकी भाषा ऐसी रहस्यपूर्ण है कि साधारण मुहावरे और व्याकरण की इन्हें कतई परवा नहीं—और इसकी जकड़ में जो आ गया, उसके बच-निकलने की कोई उम्मीद नहीं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० ३६२

जेल में कुछ भी क्यों न हुआ करे, किसी कैदी की किसी जेल-अधिकारी के खिलाफ कोई सुनवाई नहीं हो सकती। और यह नजारा कितना दर्दनाक है कि महज जेलर को खुश करने के लिए, नम्बरदार और पक्के अपने ही साथी कैदियों की

पिटाई करते है—ठीक हिन्दुस्तान के हमारे 'राजभक्त' दोस्तों और ब्रिटिश-सरकार की तरह।

जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० ३४३

हिन्दुस्तानी जेलों में जिस तरह की जेल-व्यवस्था चल रही है, वह हिन्दुस्तान मे ब्रिटिश-सरकार की व्यवस्था से कम मिलती-जुलती नहीं है। सरकारी यंत्र मे बड़ी चुस्ती रहती है—जिसकी वजह से इस मुल्क पर सरकार की पकड़ मजबूत रहती है—और देश के निवासियों की बहुत ही थोड़ी, या बिलकुल ही परवा नही की जाती। बाहर से देखने पर यही लगेगा कि इस जेल का इंतजाम बहुत ही अच्छा है, और किसी हद तक यह बात सही भी होगी। लेकिन जान पड़ता है कि कोई यह सोचता तक नही, कि जेलों का असली मकसद तो उन अभागे लोगों को सुधारना और उनकी मदद करना है—जो यहा आते हैं—उन्हें कुचलना नही। पर यहां यही इरादा काम कर रहा है—ताकि जब तक वे बाहर निकलें, तब तक उनके अन्दर फुरती और चुस्ती का एक जर्रा भी न रह जाए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० ३२६

जोश

अगर हमें भारत के पुनर्निर्माण का महान् कार्य हाथ में लेना है, तो इसके लिए आंकड़ो, कागजी कार्रवाई, आदेश, संगठन और योजना बनाने से बढ़कर और बहुत कुछ करना होगा। दिल में आग लेकर इस काम को उठाना होगा, और उसी जोश और जज्बे से काम लेना होगा—जिससे कौम आगे बढा करती है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०१

झगड़े

हमारा पहला ध्येय यह होना चाहिए—कि हम सब प्रकार के अतिरिक्त झगड़ों और हिंसा का अन्त कर दें, जोकि हमें कलुषित करके गिराते है, और जोकि स्वतन्त्रता के पक्ष को हानि पहुंचाते है। ये जनता की महान् आर्थिक समस्याओं पर—जिन पर तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है, विचार करने में वाधक होते है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५

हमें और आपको आपस के झगड़े से आगाह होना है, चाहे कितना ही ऊंचा उसका नाम क्यों न हो, चाहे यह क्यों न कहा जाए कि यह मुल्क के फायदे के लिए है। झगडे भी तरह-तरह के है। ऊंचे-ऊंचे नाम हैं कि हम किसानों के लाभ के लिए झगड़ा करते है, या हम यहा के जो मजदूर भाई है उनके लिए करते हैं। लेकिन झगड़े और फसाद मे, और खून वहाने से न मजदूर आगे बढेगा, न किसान आगे बढ़ेगा—खाली मुल्क तवाह होगा। दूसरे लोग वे है, जो आप जानते हैं, मजहव और धर्म के नाम से इस किस्म का झगड़ा-फसाद करते है, फिरकापरस्ती करते हैं। आपने काफी इस सवक को सीखा और समझा। इस तरह से मुल्क तरक्की नही कर सकता, इस तरह से कमजोरी और वढ़ेगी। हमारी सारी ताकत, वजाय आगे वढ़ने के और गिरेगी।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४७

डींग

जो डींग मारते हैं, वे अक्सर वड़े नही हुआ करते।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० १२-१३

तलाक

सबसे पहले एक सिविल मेरेज-ऐक्ट की जरूरत है, जिसमें भारत के सभी लोग शामिल हों और जिससे किसी धर्म की अवमानना न होती हो। दूसरी बात यह है कि तलाक को आसान बनाया जाए, और वह आपसी ख्वाहिश पर मुनहसिर हो। एक ऐसे कानून की भी जरूरत है, जो विशेष परिस्थितियों में, हिन्दू दम्पति को विवाह-विच्छेद की कार्यवाही की अनुमति दे। वे परिस्थितियां क्या हों—इस पर सावधानी से विचार करने की जरूरत है। लेकिन मैं यह पसंद न करूंगा कि वे ऐसे हों, जो दोनों पक्षों के लिए कार्रवाई को मुश्किल बना दें। व्यक्तिगत रूप से मुझे, दोनों पक्षों की अलग होने की इच्छा से ही काफी कारण जान पड़ता है। लेकिन मुझे शक है कि आज के ज्यादातर हिन्दू इसे स्वीकार करेंगे।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ६२७

दुश्मन

अगर हम अपने को भूल जाएं, अपने बड़े-बुजुर्गों के सबक को भूल जाएं और अपने इतिहास को भूल जाएं—तब फिर बाहर के दुश्मनों की क्या जरूरत है, फिर तो हम खुद ही खुद-कशी करते हैं।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १०

देवनागरी लिपि

अगर हमें कोई लिपि निकालनी है, और यहां मैं इसी आश्वासन के साथ नहीं बोल रहा, बल्कि सिर्फ यही चीज कह रहा हूं जो मेरे दिमाग में आई, कि भविष्य के लिए अगर हम देवनागरी लिपि का इस्तेमाल करें तो यह अच्छा रहेगा। यह

अपेक्षाकृत आसान लिपि है, और साथ ही यह बात भी है कि इसके होने से आदिम जातियां—और किसी लिपि के मुकाबले बाकी देश के साथ निकट संपर्क में रहेंगी।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४१

देश

यह मुल्क क्या है ? यह हिमालय पहाड़ नहीं है, न कन्या-कुमारी है। यह मुल्क इसके रहने वाले छत्तीस करोड़ आदमी हैं—मर्द, औरत और बच्चे, और आखिर में इस मुल्क की भलाई-बुराई, उन छत्तीस करोड़ आदमियों की भलाई और बुराई है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४६

देश का बड़प्पन

बड़प्पन यह नहीं है कि हम और कौमों को दबाएं—बड़प्पन यह है कि हम अपने मुल्क को ऊंचा करें, दूसरी कौमों से दोस्ती करें, अपना फायदा करें और दुनिया का फायदा करें।

लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४४

देश की दौलत

देश की दौलत क्या है ? जो आप लोग, और देश के सब लोग अपनी मेहनत से कमाते हैं। दौलत कोई ऊपर से तो नहीं आती यानी देश का काम मजमुआ है—करोड़ों आदमियों के काम का। अगर देश से गरीबी निकालना चाहते हैं, तो अपनी मेहनत से काम करके, दौलत पैदा करके ही वैसा कर सकते हैं। लोग समझते हैं कि कहीं बाहर से दौलत आए, उसका हम बंटवारा करें। चारों तरफ से सिर्फ मांगें आएं—चाहे किसी प्रान्त से, चाहे किसी संस्था से। लेकिन पैसा कहां से आता है ?—जनता की मेहनत से आता है, जो मेहनत से जनता कमाती है,

जो खेत में जमीदार या किसान कमाता है, जो कारखाने में कमाता है, जो दुकान मे कमाता है—इस तरह से देश की दौलत बढ़ती है और देश तरक्की करता है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६

देश की हिम्मत

आजादी के साथ जिम्मेदारी होती है। जिम्मेदारी खाली हुकूमत की नही, जिम्मेदारी हर एक आजाद शख्स की। और अगर आप उस जिम्मेदारी को महसूस नही करते, अगर आप उसे नहीं समझते, तो खतरा आने पर आप आजादी को पूरी तौर से बचा भी नहीं सकते। अगर कोई बाहर का हमला हो और फौजी हमला हो—तो हमारी फौज है, हमारे हवाई जहाज हैं, हमारे समुद्री जहाज है, और हमारे बहादुर नौजवान है—जो उनमें काम करते है। वे उस हमले से हिन्दुस्तान को बचाएंगे—। ठीक है, लेकिन आखिर में किसी मुल्क को फौज नही बचाती है, न हवाई जहाज बचाते है। बचाती है मुल्क की हिम्मत! मुल्क का तगडापन बचाता है। आखिर मे मुल्क का एक-एक आदमी, मर्द और औरत जब तक अपने को हिन्दुस्तान का एक सिपाही न समझे, तब तक मुल्क पूरे तौर से महफूज नही है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३०

हिन्दुस्तान अगर मजबूत देश होगा, तगड़ा देश होगा, अगर इसमें तरक्की होगी तो यह एक ही तरह से कि यहा जितनी कौमें है, जितने मजहब के लोग है—सबको पूरा अधिकार हो, पूरा अख्तियार हो, सबके लिए तरक्की के सब दरवाजे खुले हों—इस आजादी में सब पूरे हिस्सेदार हों। और अगर आप

एक-दूसरे से लड़ेंगे, तो आप यकीन मानिए, एक-दूसरे को कमजोर करेंगे, और चुनाचे आजादी को कमजोर करेंगे।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३१

दोस्ती का हाथ

हम किसीको धमकी नही देना चाहते, किसीको मुक्का नही दिखाना चाहते। हम हाथ बढ़ाते हैं, हाथ मिलाने के लिए और वह हाथ बढ़ा है पाकिस्तान के लोगों से हाथ मिलाने के लिए। वह आज भी बढ़ा हुआ है और कल भी बढ़ा रहेगा—और चाहे जोश हो, चाहे कुछ हो, बस उसूल पर हम कायम रहेगे। हा, अगर हमारे मुल्क पर कोई हमला हो, तो हमारा फर्ज है कि पूरे तौर से हिफाजत करे और उसके लिए तैयार रहें।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४३

धन

आदमी का मूल्य मापने के लिए धन को जो मापदंड बनाया गया है, उसने असलियत को दबा दिया है और गड़बड़ पैदा कर दी है। तो, लोगो को उनकी सरकारी हैसियत और ओहदे के अनुसार ऊंचा या नीचा समझने की आदत मिटानी चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ११६

धर्म : मजहब

आज हिन्दू धर्म को जिस तरह अमल में लाया जा रहा है, उसे मजबूत और शुद्ध करने की बातें जोर-शोर से हो रही हैं। हर आदमी को, चाहे वह हिन्दू हो या न हो—चाहिए कि वह बलंद तहजीब और इंसानी तरक्की के हक में, ऐसे हर आन्दो-

लन का स्वागत करे। हर वह बात जो आदमी से आदमी को अलग करने वाली अड़चनों को दूर करे, और आम इंसानियत की राह खोले, हर वह बात जो बड़ी तादाद में इंसान को ऊंचा उठाए और उनके लिए जिन्दगी को ज्यादा सह सकने लायक बनाए, हर वह बात जो जाहिल और अन्धे कट्टरपन की जगह विवेक को लाए, ऐसी हर बात हमेशा स्वागत के लायक है। इसलिए हिन्दू-धर्म की बुनियाद को फैलाने वाले, और उसकी बुराइयों को दूर करने वाले आन्दोलन का हमें स्वागत करना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ०४३२

आमतौर पर धर्म, ईश्वर या परमतत्व की असामाजिक या व्यक्तिगत खोज का विषय बन जाता है, और धर्म-भीरू व्यक्ति समाज की भलाई की अपेक्षा अपनी मुक्ति की ज्यादा फिक्र करने लगता है। रहस्यवादी अपने अहंकार से छुटकारा पाने की कोशिश करता है, और इस कोशिश में अकसर अहंकार की ही बीमारी उसके पीछे लग जाती है। नैतिक पैमानों का सम्बन्ध समाज की आवश्यकताओं से नहीं रहता, बल्कि पाप के अत्यन्त गूढ़ आध्यात्मिक सिद्धान्तों पर वे आधारित रहते हैं। और संगठित धर्म तो हमेशा स्थापित स्वार्थ ही बन जाता है, और इस तरह लाजिमी तौर पर वह परिवर्तन और प्रगति के लिए विरोधी (प्रतिगामी) शक्ति होता है।

—मेरी कहानी, पृ० ५२८-५२९

किसी भी भाषा में 'धर्म' शब्द का (या दूसरी भाषाओं के इसी अर्थ वाले शब्दों का) जितना भिन्न-भिन्न अर्थ भिन्न-भिन्न लोग लगाते हैं, उतना शायद ही किसी दूसरे शब्द का अर्थ लगाया जाता हो।—जब 'धर्म' शब्द का ठीक और निश्चित

अर्थ (अगर कभी था तो) बिल्कुल नही रहा, और अक्सर बिल्कुल ही भिन्न-भिन्न अर्थो में उसका प्रयोग होता है, तब तो वह सिर्फ गड़बड़ी ही उत्पन्न करता है—और उससे वाद-विवाद और तर्क का भी अन्त हो नही हो सकता। बहुत ज्यादा अच्छा यह हो कि इस शब्द का प्रयोग ही बिल्कुल बन्द कर दिया जाए, और उसके स्थान पर ज्यादा सीमित अर्थ वाले शब्द इस्तेमाल किए जाएं—जैसे ईश्वर-विज्ञान, दर्शन-विज्ञान, आचार-शास्त्र, नीति-शास्त्र, आत्मवाद, आध्यात्मिक शास्त्र, कर्त्तव्य, लोकाचार वगैरा। यों तो ये शब्द भी काफी अस्पष्ट है, लेकिन ये 'धर्म' की अपेक्षा बहुत परिमित अर्थ रखते है। इससे बड़ा लाभ होगा। क्योंकि अभी तक इन शब्दों के साथ उतनी भावुकता नहीं जुड़ पाई है, जितनी कि 'धर्म' के साथ जुड सकती है।

—मेरी कहानी पृ० ५३०

धर्म अधिकारवाद और बुरी तरह समर्पण का मूल स्रोत रहा है, और चूकि हमारे शासक इसे महसूस करते है—और चूकि उनकी अपनी हूकूमत इस अधिकारवादी विचारधारा पर आधारित है, इसलिए वे हिन्दुस्तान में इसकी अधकचरी अभिव्यक्ति को सहारा देने की इच्छा करते है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय, खण्ड ३) पृ० २००

धर्म का अर्थ कर्मकांड और मतवाद नही, और जीवन की ऊंची बातों से है—तो विज्ञान और धर्म के बीच कोई विरोध नही। यदि भारत धर्म और विज्ञान के बीच यह समन्वय स्थापित कर सका तो उसके लिए बड़े श्रेय की बात होगी।

—नेहरू और नई पीढी : हरिदत्त शर्मा, पृ० २३१

पुराने जमाने में 'वैदिक धर्म' शब्दों का इस्तेमाल खासतौर पर उन दर्शनों, नैतिक शिक्षाओं, कर्मकांडों और व्यवहारों के

लिए होता था—जिनके बारे मे समझा जाता था कि वे वेद पर अवलंबित है। इस तरह से ये सभी लोग, जो वेदों को आमतौर पर प्रमाण मानते थे, वैदिक धर्म वाले कहलाए।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६७

बीते जमाने में, आदमियों की आजादी की इच्छा को मंद करने के लिए धर्म को अफीम के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। राजाओं और सम्राटों ने अपने फायदे के लिए उसका शोषण किया, और शासन करने के अपने दैवी अधिकार मे लोगों का विश्वास जमाया है। पुजारी और दूसरे विशेष वर्ग ने, अपने अधिकारों के लिए दैवी स्वीकृति का दावा किया है। और धर्म की मदद से जनता मे कहा गया है, कि उसकी मुसीबतों की वजह उसकी किस्मत या पिछले जन्म के पाप हैं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० २००

भारत मे धार्मिक विश्वासों की स्वतन्त्रता के लिए ऐसी कोई लड़ाई नही हुई (जैसी यूरोप में हुई—सं०) क्योंकि ऐसा ज्ञात होता है कि यहा प्रारंभ से ही इस अधिकार पर कभी कोई प्रतिबंध नही रहा। लोगों को स्वतन्त्रता थी कि जो बात उन्हें पसंद हो—उसे माने, और किसीको मजबूर नही किया जाता था। लोगों के दिमागो पर असर डालने का तरीका तर्क और वाद-विवाद का था, डंडा और सूली का नहीं।

—विश्व-इतिहास की झलक, पृ० ३२६

मजहब ने आदमी की प्रकृति की कुछ गहराई के साथ महसूस की हुई जरूरतों को पूरा किया है, और सारी दुनिया में, बहुत ज्यादा कसरत में, लोग बिना मजहबी अकीदे के रह नहीं सकते। इसने बहुत-से ऊंचे किस्म के मर्दो और औरतों को पैदा किया है, और साथ ही तंग नजर और जालिम लोगो को भी। इसने इंसानी जिंदगी को कुछ निश्चित आकें दी है, और अगरचे

इन आंकों में से कुछ आज के जमाने पर लागू नहीं हैं—वल्कि उसके लिए नुकसानदेह भी है; दूसरी ऐसी भी है, जो अखलाक और अच्छे व्यवहार के लिए बुनियादी है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ३१-३२

मैं चाहता हूं कि जीवन को समझा जाए, उसको त्यागा नहीं वल्कि उसको अंगीकार किया जाए; उसके अनुसार चला जाए, और उसको उन्नत बनाया जाए—मगर आम धार्मिक दृष्टिकोण इस लोक से नाता नहीं रखता। मुझे यह स्पष्ट विचार का दुश्मन मालूम होता है, क्योंकि वह सिर्फ कुछ स्थिर और न वदलने वाले मतों और सिद्धान्तों को—विना चू-चपड़ किए स्वीकार कर लेने पर ही नहीं—वल्कि भावुकता और मनोवेग पर भी आधारित है।

—मेरी कहानी, पृ० ५२८

मैं ज्यादा-से-ज्यादा मजहवी ख्याल के खिलाफ हुआ जा रहा हू। अपवादों को छोड दिया जाए (और उनमें कुछ तो वड़े अपवाद है) तो मुझे यह सच्ची आध्यात्मिकता को नकारना, और उलझन और भावुकता पैदा करने वाला जान पड़ता है। मैं तमाम मजहवी कामों और त्यौहारों से—मजहव के तमाम निशानो से, जहां तक मुमकिन है—अलग रहना चाहता हूं—वल्कि ला-मजहव हो जाना चाहता हूं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ४७६

विज्ञान आज मजहव की पुरानी कल्पना को चुनौती दे रहा है, किन्तु यदि मजहव सिर्फ अन्धविश्वासों और धार्मिक रस्मों तक ही सीमित न रहे—और जीवन की कुछ चीजों से वास्ता रखे, तव न तो इसका विज्ञान से कोई विरोध होगा, और न आपस में एक-दूसरे से। हो सकता है, इस प्रकार के समन्वय के काम में भारत को सहायक होने का सौभाग्य प्राप्त हो। यह

भारत की उस प्राचीन परंपरा के अनुसार ही होगा, जो अशोक के शिलालेखों में अंकित मिलती है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५४

सभी कदीम हिन्दुस्तानी मतों के लिए—और इनमें बुद्ध-मत और जैनमत भी शामिल हैं—'सनातन-धर्म' यानी प्राचीन धर्म का प्रयोग हो सकता है; लेकिन इस पर आजकल हिन्दुओं के कुछ कट्टर दलों ने एकाधिकार कर रखा है, जिनका दावा है कि वे इस प्राचीन मत के अनुयायी हैं।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ८७

हमारे देश में महान् धर्म पैदा हुए, और उन्होंने मानवमात्र पर जबरदस्त प्रभाव डाला है। फिर भी किसी व्यक्ति के लिए कोई दुराशय न रखते हुए, और आदर के साथ मैं यह कहना चाहूंगा—कि इन धर्मों ने जिस मात्रा में मनुष्य के दिमाग को गतिहीन, रूढ़िवादी और दुराग्रही बनाया है, उतनी ही मात्रा में मेरे विचार में—बुरा असर पड़ा है। उन धर्मों ने जो बातें कहीं वे अच्छी हो सकती हैं, लेकिन जब यह दावा किया जाने लगता है कि वही आप्त वाक्य है, तब समाज एकदम रुक जाता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३२

हिन्दुस्तान में मजहब के लिए पुराना व्यापक शब्द 'आर्य-धर्म' था। दरअसल धर्म का अर्थ मजहब या 'रिलिजन' से ज्यादा विस्तृत है। इसकी व्युत्पत्ति जिस धातु—शब्द से हुई है, उसके मानी है—'एक साथ पकड़ना।' यह किसी वस्तु की भीतरी आकृति उसके अतिरिक्त जीवन के विधान के अर्थ में आता है। इसके अन्दर नैतिक विधान, सदाचार, और आदमी की सारी जिम्मेदारियां और कर्त्तव्य आ जाते है। आर्य-धर्म के भीतर वे सभी मत आ जाते हैं, जिनका आरंभ हिन्दुस्तान में हुआ है—

ये मत चाहे वैदिक हों, चाहे अ-वैदिक । इनका व्यवहार बौद्धों और जैनों ने भी किया है, और उन लोगों ने भी—जो वेदों को मानते हैं । बुद्ध अपने बनाए मोक्ष के मार्ग को हमेशा 'आर्य-मार्ग' कहते थे ।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६७

हिन्दुस्तान, सब बातों से ज्यादा, धार्मिक देश समझा जाता है, और हिन्दू और मुसलमान और सिक्ख और दूसरे लोग अपने-अपने मतों का अभिमान रखते हैं, और एक-दूसरे के सिर फोड़कर उनकी सच्चाई का सुबूत देते हैं । हिन्दुस्तान में और दूसरे देशों में मजहब के, और कम-से-कम मौजूदा रूप में संगठित मजहब के दृश्य ने मुझे भयभीत कर दिया है । मैंने उसकी कई बार निन्दा की है, और उसको जड़-मूल से मिटा देने तक की इच्छा की है । मुझे तो लगभग हमेशा यही मालूम हुआ कि अन्धविश्वास और प्रगति-विरोध, जड़ (प्रमाण-रहित) सिद्धांत और कट्टरपन, अन्ध श्रद्धा और शोषणनीति, और (न्याय अथवा अन्याय से) स्थापित स्वार्थों के संरक्षण का ही नाम 'धर्म' है । मगर यह भी मुझे अच्छी तरह मालूम है कि धर्म में और भी कुछ है, उसमें कुछ ऐसी चीज भी है जो मनुष्यों की गहरी आन्तरिक आकांक्षा को भी पूरा करती है । नहीं तो उसका इतनी जबरदस्त शक्ति बनना, जैसा कि बना हुआ है, कैसे सम्भव था, और उसमें अनगिनती पीड़ित आत्माओं को सुख और शान्ति कैसे मिल सकती थी ?

—मेरी कहानी, पृ० ५२४

हिन्दू धर्म, जो आजकल के बड़े मजहबों में सबसे पुराना है, भारत की ही देन है ।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० १८

हिन्दू धर्म ने अपनी सहनशीलता पर हमेशा नाज किया है ।

लेकिन आज उसको याददिहानी की जरूरत आ पड़ी है। अशोक महान् ने कहा था—'किसी-न-किसी वजह से सभी पंथ इज्जत के काबिल हैं। ऐसा करके आदमी अपने पंथ को ऊपर उठाता है, और साथ ही दूसरे लोगों के पंथों की सेवा करता है—सम्राट् को दान या बाहरी इज्जत की उतनी परवाह नहीं है, जितनी इस बात की कि सब पंथों में इस सचाई की असलियत का विकास होना चाहिए।'

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० ४३३

धार्मिक

जो अपने धर्म की भक्ति के आवेश में, अपने धर्म की तो बड़ाई करता है और उसे दूसरे धर्मों मे बड़ा दिखलाने के लिए दूसरे धर्मों की निन्दा करता है, वह निश्चय ही अपने धर्म की भी हानि करता है।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० २३२

धार्मिक एकता

अगर कोई मजहब या धर्म वाला यह समझता है कि हिन्दुस्तान पर उसीका हक है, औरों का नहीं—तो उसने हिन्दुस्तान की राष्ट्रीयता, कौमियत को समझा नही है, हिन्दुस्तान की आजादी को नही समझा है—बल्कि वह हिन्दुस्तान की आजादी का एक माने मे दुश्मन हो जाता है, उस आजादी को धक्का लगाता है, उस आजादी के टुकड़े बिखेरता है। क्योंकि हिन्दुस्तान की जड़ है—आपस में इत्तिहाद, और हिन्दुस्तान में जो मुख्तलिफ मजहब-धर्म हैं, जातिया हैं, उनसे मिलके रहना। उनको एक-दूसरे की इज्जत करना है, एक-दूसरे का लिहाज करना है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६५

धार्मिक ग्रंथ

धर्म-ग्रंथों को आदमी के दिमाग की उपज मानते हुए, हमें याद रखना चाहिए कि किस युग में वे रचे गए है, किस फिजा और मानसिक वातावरण ने उन्हें जन्म दिया है, और समय और विचार और अनुभव का कितना अन्तर उनमें और हममें है। हमें कर्मकाड और धर्म-सम्बन्धी रस्मों की भूल को भुला देना चाहिए, और उस सामाजिक पृष्ठभूमि को ध्यान मे रखना चाहिए—जिसमे उनका विकास हुआ है। इन्सानी जिंदगी के वहुत-से मसले एक दायमी हैसियत रखते है। उनमें नित्यता की एक पुट है, और यही कारण है कि इन प्राचीन पुस्तकों में हमारी दिलचस्पी वनी हुई है। लेकिन और भी मसले रहे है, जो किसी खास युग तक सीमित रहे हैं—और उनमें हमारे लिए जिंदा दिलचस्पी की कोई वात नही रही है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०३

मैं इन किताबों को—या किन्ही किताबो को—ईश्वर-वाक्य की तरह नहीं मान सका हूं, ऐसा कि विना चू-चरा के उनके एक-एक लफ्ज को कुबूल कर लिया जाए। दरअसल उनके मुतल्लिक ईश्वर-वाक्य होने के दावे का आमतौर पर यह नतीजा हुआ, कि उनमें लिखी वातो के खिलाफ मेरे दिमाग ने जिद पकड ली है। उनकी तरफ मेरा ज्यादा खिचाव होता है, और उससे मैं ज्यादा फायदा तव हासिल कर सकता हूं—जव मैं उन्हें आदमियों की रचनाएं समझूं—ऐसे आदमियों की, जो वडे ज्ञानी और दूरदर्शी हो गए है, लेकिन जो हैं साधारण नश्वर मनुष्य, न कि अवतार या ईश्वर की तरफ से वोलने वाले लोग; क्योंकि ईश्वर की कोई जानकारी या उसके वारे में निश्चय मुझे नही है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०२

मैंने मजहबी किताबों के पढ़ने में हमेशा संकोच किया है। उनके बारे में जो इस तरह के दावे किए जाते हैं, कि इनमें आखिरी बातें लिख दी गई हैं—मुझे पसंद नहीं आते। इन मजहबों को लोग जैसा बरतते हैं, इसके बारे में जो ऊपरी शहादतें मेरे सामने आई हैं, उन्होंने मुझे उनके मूल आधारों तक पहुंचने का उत्साह नहीं दिलाया है। ताहम मुझे इन किताबों तक भटककर पहुंचना पड़ा है, इसलिए कि गैर-जानकारी खुद कोई गुण नहीं है—और अक्सर एक खामी सावित होती है। मैं जानता रहा हूं कि इनमें से कुछ ने इन्सान पर गहरा असर डाला है, और जिस चीज का ऐसा असर पड़ सकता है, उसमें कोई भीतरी गुण और शक्ति—ताकत का कोई जिंदा सर-चश्मा जरूर है। उनके बहुत-से अंशों को पढ़ने में मुझे बड़ी कठिनाई हुई है, क्योंकि बारहा कोशिश करने पर भी मैं अपने में काफी दिलचस्पी पैदा नहीं कर सका हूं। साथ ही ऐसे टुकड़े भी मिले हैं, जिनकी निपट सुन्दरता ने मुझे मोह लिया है। और उस वक्त ऐसा हुआ है, किसी जुमले ने या जुमले के एक टुकड़े ने अचानक मुझमें बिजली पैदा कर दी है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०१

हम मुख्तलिफ मजहबों की मजहबी किताबों को किस नजर से देखें, जबकि इन मजहब वालों का यह खयाल है कि इनका ज्यादातर हिस्सा दैवी प्रेरणा से प्राप्त हुआ है—या नाजिल हुआ है ? अगर हम उनकी जांच-पड़ताल या नुक्ताचीनी करते हैं, और उन्हें आदमियों की रची हुई चीजें बताते हैं—तो कट्टर मजहबी लोग अक्सर इसमें बुरा मानते हैं।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०१

धार्मिक नेता

महान् धार्मिक नेताओं ने करोड़ों के दिलों को हिला दिया है, और उनमें जोश की आग भर दी है। लेकिन यह सब कुछ हमेशा श्रद्धा के आधार पर हुआ है। उन्होंने भावनाओं को अपील की है, और उनपर असर डाला है।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० १८५

धार्मिक सहिष्णुता

जब यूरोप ने सदियों की खूनखराबी और जुल्म के बाद धार्मिक सहनशीलता कायम कर ली है, हमारा अभागा देश पीछे जा रहा है—और उस पाठ को खुद ही भूल रहा है, जिसे इसने पुराने जमाने में दुनिया को सिखाया था। असहनशीलता की वजह हमेशा हमें एक-दूसरे को न समझना और गैर-जानकारी होती है। इसलिए हमें एक-दूसरे का इतिहास जानना चाहिए, और एक-दूसरे की पुरानी तहजीब समझनी चाहिए। *भविष्य में हमें तभी कोई उम्मीद दिला सकता है, जब हम* कदम मिलाकर चलना सीखें। आज हमारा खास दुश्मन विवेक की गैरहाजिरी है, और उसका लाजिमा नतीजा है मजहबी कट्टरता। इसलिए वे लोग जो विवेक मे, इस देश की आजादी में, और इन्सानी तरक्की मे विश्वास रखते है—उन्हें जहां कहीं भी और जब भी यह दुश्मन दिखाई पड़े, उससे लड़कर उसपर फतह पानी होगी। तब हमारी एकता और प्रगति में कोई अड़चन या रुकावट नही रह जाएगी।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० ४३४-४३५

दूसरों के धार्मिक विश्वासों और मजहबी रीति-रस्मों के प्रति हमारे अन्दर पूरी सहिष्णुता होनी चाहिए, जिसमें हर स्त्री-पुरुष को अपने धर्म-विश्वास पर कायम रहते हुए, उसकी

मेरा जन्म हिन्दू के रूप में हुआ, लेकिन मैं नहीं कह सकता कि अपने को हिन्दू कहने में, या हिन्दुओं की तरफ से मेरे बोलने में कहां तक औचित्य होगा। लेकिन इस देश में आज भी जन्म का महत्त्व है—और जन्म के अधिकार से, मैं हिन्दुओं के नेताओं से यह कहने का जोखिम लूंगा कि उदारता में पहल करना उनके लिए फर्ज, की बात होनी चाहिए। उदारता न सिर्फ नैतिकता के लिहाज से बढ़िया चीज है, बल्कि अक्सर यह बढ़िया राजनीति है, और कार्य-साधकता की दृष्टि से भी सही है। यह तो मेरी समझ में कभी भी नहीं आ सकता, कि आजाद हिन्दुस्तान में हिन्दू कभी भी शक्तिहीन हो सकते हैं। जहां तक मेरी अपनी बात है, अपने मुसलमान और सिख दोस्तों से मैं खुशी से यह कह सकता हूं—कि उन्हें जो भी लेना हो वे शौक से ले लें, मेरी तरफ से न कोई उज्र होगा और न कोई हुज्जत होगी। मैं जानता हूं कि वह वक्त नजदीक है, जब इन लेबलों और नामों का शायद ही कोई मतलब रह जाएगा। तब हमारी लड़ाई का आधार आर्थिक होगा। इस बीच हमारे जो भी आपसी समझौते हों—उनसे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं, बशर्ते कि हम ऐसी दीवारें न खड़ी कर लें—जो हमारी आगे की तरक्की में रुकावट डालें।

जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० १८६-१६०

नागरिक स्वतन्त्रता

नागरिक स्वतन्त्रता की हमारी कल्पना अब भी यही है कि हम सभी वर्गों के लोगों को अपने सिद्धान्तों के प्रचार की पूरी स्वतन्त्रता दें, बशर्ते कि वे हिंसात्मक कार्यों से बचे रहें। हमें इसकी चिन्ता नहीं कि उन सिद्धान्तों से हम सहमत हैं या नहीं, यदि उनका परिणाम हिंसात्मक नहीं, तो हम उसके प्रचार की

इजाजत देंगे। लेकिन यदि वैसा है, किसी-किसी दल के प्रचार का उद्देश्य हिंसा या विध्वंस है, तब आज्ञा न होगी—और यदि इस कारण नागरिक स्वतन्त्रता को सीमित करना पड़ता है, तो यह सीमित की जाएगी, क्योंकि कोई दूसरा उपाय ही नहीं है !

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ८६-८७

हम एक व्यापक रूप में, नागरिक स्वतन्त्रता के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हैं। जब तक कि नागरिक स्वतन्त्रता का खूब विस्तार नहीं हो, देश में असली स्वतन्त्रता नहीं हो सकती।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड) पृ० ८६

निर्भर नहीं

हम किसीके साथ बंधे नहीं हैं। हम जहां तक हो सकता है समस्याओं पर उन्हीं के गुण-दोष के आधार पर विचार करते हैं। किसी दूसरे की दृष्टि से नहीं, जो कि अब बहुत आम बात होती जा रही है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड) पृ० १८७

नीति

कुटिलता की नीति अन्त में चलकर फायदेमन्द नहीं होती। हो सकता है कि अस्थायी तौर पर इससे कुछ फायदा हो जाए।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड) पृ० २०१

नीरोग

हर आदमी का फर्ज है कि वह तन्दुरुस्त और मजबूत रहे। मुझे बीमारी या कमजोरी से हमेशा नफरत रही है। मैं किसी की बीमारी से हमदर्दी नहीं रखता। मैं यह इसलिए कह रहा हूं, कि बहुत से लोग यह ख्याल करते हैं कि बीमार और कमजोर

होना अमीरी की निशानी है। मै चाहता हूं कि नौजवान और बूढ़े सब तन्दुरुस्त, मजबूत और चुस्त रहें, मैं सबको जिस्मानी तौर पर अव्वल दर्जे का राष्ट्रीय देखना पसन्द करता हूं। मेरा ख्याल है कि जब तक सबकी जिस्मानी सेहत ठीक नही, तब तक हम असली तौर पर दिमागी तरक्की नही कर सकते।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० १७२

न्यायसंगत वितरण

केवल उत्पादन पर्याप्त नही, क्योंकि इसका परिणाम यह हो सकता है कि सम्पत्ति खिचकर कुछ थोड़े-से हाथों में आ जाए। उन्नति के मार्ग मे यह बाधक होगा, और आज के प्रसंग में अस्थिरता और संघर्ष उत्पन्न करेगा। अतएव समस्या को हल करने के लिए, उचित और न्यायसंगत वितरण अत्यन्त आवश्यक है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६

पत्रकारिता की भूमिका

आज के जमाने में, सार्वजनिक जीवन में पत्रकारिता और पत्रकारों की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण है। हिन्दुस्तान में या तो सरकार के जरिये या अखबारों के मालिकों के जरिये, या फिर विज्ञापनदाताओं के दबाव से—तथ्यों के दबाए जाने की संभावना है गोकि मैं इस बात का बुरा नही मानता—कि अखबार अपनी नीति के मुताबिक किसी खास तरह की खबरों को तरजीह दे, लेकिन मै खबरो को दबाए जाने के खिलाफ हूं, क्योंकि इससे दुनिया की घटनाओं के बारे में सही राय बनाने का एकमात्र साधन जनता से छिन जाता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ४०५

परम्परा

परम्परा में बहुत कुछ अच्छाई होती है, लेकिन कभी-कभी वह एक भयंकर बोझ बन जाती है, जिसकी वजह से हमारी प्रगति मुश्किल हो जाती है। जो अटूट जंजीर धुंधले और प्राचीन अतीत से हमारा सम्बन्ध जोड़ती है—उसकी कल्पना करने से, और तेरह सौ वर्ष पहले के लिखे हुए इन मेलों के—जो उस समय भी पुरानी परम्परा से चले आ रहे थे—हाल-चाल पढ़ने से चित्त मोहित हो जाता है। लेकिन इस जंजीर में एक आदत यह है कि जब हम आगे बढ़ना चाहते है, तो यह हमारे पैरो में लिपट जाती है, और हमें इस परम्परा के शिकंजे में कसकर कैदी जैसा बना देती है। यह सच है कि अपने अतीत से जोड़ने वाली बहुत-सी लड़ियों को हमें कायम रखना पड़ेगा। लेकिन यह परम्परा हमें आगे बढ़ने से रोकने लगे, तो हमें उसके कैदखाने को तोड़कर बाहर भी निकलना होगा।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ३६-३७

परिवर्तन

परिवर्तन अनिवार्य है, लेकिन निरन्तरता भी आवश्यक है। विगत और वर्तमान में जो नीव रखी जाती है, उसी पर भविष्य का निर्माण होता है। अतीत को निकालना और इससे अपने-आपको बिल्कुल काट लेने का मतलब है, अपना उन्मूलन और अपने जीवन-रस को सुखा डालना।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ०५१

परिवर्तन का चक्र घूमता रहता है और जो नीचे थे वे ऊपर आ जाते है, और जो ऊपर थे वे नीचे गिर जाते हैं।

—विश्व-इतिहास की झलक

बच्चा जब बड़ा हो जाता है, तो पुराने कपड़े उसे नही अंटते। अगर उसे कपड़े पहनाने हैं तो नये सिलवाने होंगे। जबर्दस्ती उसे पुराने कपड़े नहीं पहनाए जा सकते, क्योंकि या तो वह उन्हे फाड़ देगा, या फिर वे उसे आएंगे ही नही। उसी तरह समाज का मौजूदा ढांचा ऐसा है—कि जल्दी ही इसके चीजों के पुराने तरीके काम के नहीं हो सकते—नहीं होंगे, और यह जरूरी है कि जल्दी ही इसके लिए कुछ किया जाए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० २१२

संसार में कोई भी वस्तु—जिसमें जान है, अपरिवर्तनीय नहीं रह सकती। सम्पूर्ण प्रकृति दिन-प्रतिदिन, क्षण-प्रतिक्षण बदलती है, केवल मृत ही बढ़ने से रुकते है। और वे निश्चल हो जाते है। ताजा पानी बहता रहता है, और यदि आप उसे रोक दे तो वह बंधकर गन्दा हो जाता है। मनुष्य जाति की और राष्ट्र की जिन्दगी का भी यही हाल है।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० १५

परिश्रम

अगर हम इस देश की गरीबी को दूर करेंगे, तो कानूनों से नहीं शोरगुल मचाके नही, शिकायत करके नहीं, बल्कि मेहनत करके। एक-एक आदमी बूढा और छोटा, मर्द, औरत और बच्चा मेहनत करेगा। हमारे सामने आराम नहीं है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १) पृ० २०

अफसोस यह है कि पैसा आजकल की जिन्दगी मे एक जरूरी चीज है। लेकिन आखिर मे इन्सान के पास जो दौलत है, वह उसकी मेहनत है, दिमाग की काबलियत है और हाथ-पैर की मेहनत करने की ताकत है। आप और हम अपनी मेहनत

से दौलत पैदा करते हैं, सोना-चांदी कोई बच्चे पैदा नहीं करते।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३६

कोई देश धनी कैसे होता है ? लोगों की मेहनत से। जितने ज्यादा मेहनती काम करने वाले आदमी किसी देश में हों, उतनी ही दौलत वह अपने काम से पैदा करते हैं और देश धनी होता है। जितने ऐसे लोग हों जो मेहनत नहीं करते हैं, वह देश को गरीब करते हैं और उसके ऊपर बोझा हो जाते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३, पृ०) ३७१

जब तक हम जैसे लोग अपने हाथ में फावड़ा लेकर खुदाई करने को खुद को मजबूर नहीं करते, तब तक न तो हमारे लिए और न हमारे मुल्क के लिए ही कोई अच्छी बात होगी। हम समझते हैं कि हम बहुत चालाक और अक्लमन्द हैं, क्योंकि हम दफ्तर में बैठकर, हाथ में फाउण्टेन पेन पकड़कर काम करते हैं। इस विचार से आखिर में चलकर सारे राष्ट्र का अहित होगा, कि क्लर्की का काम दूसरे कामों से अच्छा है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २१५

जो असली दौलत है, वह इंसान की मेहनत है। और हमारे पास अगर मुल्क मे सोना-चादी काफी नहीं है, तो इंसान तो काफी तगड़े और काम करने वाले हैं। क्यों न हम उनके उस काम से और मेहनत से और नई दौलत पैदा करें—जो उनके पास पहुंचे और मुल्क आगे बढ़े ? आखिर में कोई देश अपनी मेहनत से, अपने बाजू के बल से चल सकता है, औरों के नहीं।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३६

स्वराज्य आया, आजादी आई—तो यह न समझिए कि हमारे-आपके आराम करने का समय आया। नही, मेहनत करने

का समय आया है। लेकिन उस मेहनत में और दूसरी मेहनत में एक बड़ा फर्क है। एक मेहनत है एक गुलाम की मेहनत, एक मेहनत है निर्माण के लिए आजाद आदमी की मेहनत। हमें अपने को बनाना है और अपने देश को बनाना है और आइन्दा नसलों के लिए एक बड़ी मजबूत इमारत खड़ी करनी है। यह मेहनत और शुभ मेहनत है, अच्छी मेहनत है—जो दिल को भाती है। और फिर इस मेहनत में एक-एक ईंट और एक-एक पत्थर जो हम रखते है, याद रखिए हम और आप गुजर जाएंगे लेकिन वे ईंट और पत्थर कायम रहेंगे, और आइन्दा सैकड़ों वर्ष बाद भी वे एक यादगार होंगे, और दुनिया के सामने और हमारी आइन्दा नसलों के सामने इस शक्ल में होंगे कि एक जमाना आया था—जबकि आजाद हिन्दुस्तान की बुनियाद इस तरह से पड़ी और जब इस तरह मेहनत से, पसीने से, खून बहाकर भारत की यह इमारत बनी।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० २०

पारस्परिक फूट

हमने मानव अध्यवसाय के हर क्षेत्र में—विचार में, कर्म में, कला मे, साहित्य में, संगीत मे महान् पुरुष पैदा किए। फिर भी हम इस सारी महानता का लाभ इस कारण नहीं उठा सके हैं कि हममें फूट रही है, और अपने-अपने रास्ते चलने की प्रवृत्ति रही है। इसीलिए हम दुर्बल रहे, और अक्सर बाहर से आने वाले विदेशियों ने हमको दबाकर गुलाम बनाए रखा। मेरे विचार में यह कहना सही होगा, कि जो भी विदेशी यहां आए, वे शायद ही हिन्दुस्तान को वास्तव में जीत सके हों। अंग्रेज भी, कही अधिक और बढ़िया हथियारों के बावजूद, हमें वास्तव

में नहीं जीत सके। उन्होंने सिर्फ हिन्दुस्तान की फूट का फायदा उठाया, और जो भी आया उसने भी ऐसा ही किया।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४६

पुराण-कथाएं

पुराणों की कथाओं और वीरगाथाओं में—सच्चाई पर अड़े रहने और चाहे जैसा जोखिम होने पर भी अपने वचन का पालन करने, मृत्यु तक और उसके बाद भी वफादारी न छोड़ने, साहसी और अच्छे काम करने और लोकहित के लिए त्याग करने की शिक्षाएं दी गई हैं। कभी-कभी तो ये कहानियां बिल्कुल खयाली होती हैं, कभी उनमें घटनाओं और कल्पनाओं का मेल-जोल रहता है—किसी ऐसी घटना का, जिसे परम्परा ने महफूज रखा है, बढ़ा-चढ़ा बयान होता है। सच्ची घटनाएं और गढ़े हुए किस्से इस तरह एक-दूसरे में मिल गए हैं, कि दोनों अंशों को अलग करना गैर-मुमकिन है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १३३

पुराना समाज

संग्रह की प्रवृत्ति वाला पुराना समाज, लाभ के लालच पर आधारित था।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५४

पुस्तकें

किताबों का पढ़ना बहुत कुछ किसी खास आदमी पर मुनहसिर होता है—उसकी आम पसन्द और उसके खास मिजाज पर। किसी किताब का मजा लेने के लिए, उसे फर्ज की तरह पढ़ने की मजबूरी नहीं होनी चाहिए। उसे नापसन्द करने और साथ-ही-साथ तमाम पढ़ाई के खिलाफ तास्सुब पैदा

का यह सबसे यकीनी तरीका है। हमारे इम्तिहानों और कोर्स की किताबों का अक्सर यही नतीजा होता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० ३१८

पूंजीवाद

जब 'पूजीवाद' शब्द का समझदारी के साथ इस्तेमाल किया जाता है, तो इसका एक ही मतलब हो सकता है : वह सरमायदारी सिलसिला जो औद्योगिक क्रान्ति के (जो डेढ़ सौ साल पहले इंग्लैण्ड मे शुरू हुई) बाद से आगे बढ़ा है। इसका मतलब है औद्योगिक पूजीवाद। हाल में एक परिभाषा और दी गई है (जी० डी० एच० कौल के जरिये)—पूजीवाद का मतलब है, पैदावार के साधनों की निजी मालकियत की बिना पर, फायदे के लिए की जाने वाली पैदावार की विकसित प्रणाली। बुनियादी तौर पर, इससे इफरात की जगह कमी होती है। जो पूजीवाद अक्सर अलग-अलग चीजों को सस्ती करने के रास्ते खोजा करता है। इसके लिए फायदा ही पैदावार का मकसद है और लाजमी तौर पर वह मजदूरी को लागत मानता है—जिसे जितना मुमकिन हो, उतना कम रखा जाए और इसीलिए ज्यादा खरीदारी की ताकत पर रोक लगा देता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० २०-२१

पूंजीवाद की जो इतने ज्यादा अर्से से दुनिया के ऊपर हावी हो रहा है—अब शाम होने आई है। जिस दिन यह खत्म होगा और खत्म तो उसे जरूर ही होना पड़ेगा—वह अपने साथ बहुत-सी बुराइयों को भी लेता जाएगा।

—भारतीय इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ६१

पूंजीवाद ने धन बटोरने के लालच और उन महज प्रेरणाओं को उभारा, जिनसे अब हम छुटकारा पाना चाहते हैं। शुरू के

दौर में इसने काफी भलाई भी की, और पैदावार में काफी बढ़ती करके रहन-सहन का दर्जा ऊंचा किया। दीगर तरीकों से भी इसने अच्छा काम किया, और पहले के वक्त से वेशक यह तरक्की का वक्त था। लेकिन ऐसा लगता है कि यह जरूरत से ज्यादा टिक चुका है, और आज न सिर्फ समाजवाद की ओर जाने वाले हर रास्ते की रुकावट बन रहा है, बल्कि हमारी बहुत-सी अनचाही आदतों और महज प्रेरणाओं को बढ़ावा दे रहा है। मैं नहीं समझ पाता कि जिस समाज की बुनियाद धन के लालच पर टिकी हुई है, और जिसकी सबसे बड़ी चाह मुनाफा कमाना है, उसमें हम लोग किस तरह समाजवादी रास्ते पर चल सकेंगे ! इस तरह जहां तक हो सके, धन जोड़ने के लालच वाले समाज की बुनियाद बदलना, और मुनाफे के मकसद से बाज आना हमारे लिए जरूरी होता है, ताकि हम नई और ज्यादा अच्छी आदतें और सोच के तरीके विकसित कर सकें। इसके लिए पूंजीवादी प्रणाली से पूरी तरह अलगाव जरूरी है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ६४

पूर्वज

हमारे महान् पूर्वज बहुत साहसी थे। विचार के क्षेत्र में तो उन्होंने आकाश को भी वेध डाला। तो वे किसी प्रकार के विचार से डरते नहीं थे, किसी अंधविश्वास में वे बंधे नहीं थे। उन्होंने सारे देश के लिए अत्यन्त समृद्ध और सुन्दर भाषा का विकास किया।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४८

पृथकता

हमारे इतिहास के दीर्घकाल में, यह दुर्भाग्य रहा है कि हम

टुकड़े-टुकड़े में बंटे रहे—पृथक्ता के शिकार रहे, और इसका नतीजा हुआ कि भारत की महान् शक्ति अन्दरूनी झगड़ों, और बहस-मुबाहसे, और संकीर्ण और पृथक्तावादी प्रवृत्तियों में खतम हो गई। निश्चय ही हमें भारत के इतिहास से कुछ सबक लेना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४५

प्रजातंत्र

जो लोग ऊपरी चोटी पर हैं और जो लोग नीचे जमीन पर हैं—उनके बीच बहुत बड़ी खाई है। अगर हम प्रजातंत्र लाना चाहते हैं, तो यह जरूरी और अनिवार्य हो जाता है कि न केवल इस खाई को पार किया जाए, बल्कि इसकी गहराई को भी पाटा जाए। वास्तव में, जहां तक अवसरों का सम्बन्ध है, जहां तक रहन-सहन की स्थिति का सम्बन्ध है—और जहां तक जीवन की आवश्यकताओं का सम्बन्ध है—उन्हें अधिक-से-अधिक नजदीक लाया जाए।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २८

प्रजातन्त्रवाद

प्रजातन्त्रवाद में हमेशा जनता को मालूम होना चाहिए कि क्या हम करते हैं, क्या हम सोचते हैं—और वह उसको पसन्द होना चाहिए।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३

प्रतिज्ञा

प्रतिज्ञाएं करना मुझे पसन्द नहीं है, और मैं यह महसूस करता हूं कि उनसे हमें ज्यादा मदद नहीं मिलती। थोड़े-से ईमानदार लोग उन्हें निभाते हैं, दूसरे लोग जब मर्जी होती है

उन्हें तोड देते हैं, और प्रतिज्ञा करके उसमें डिगने की वजह से उनकी गिरावट उतनी ही ज्यादा होती है। इसलिए जाती तौर पर मैं किसी प्रतिज्ञा पर जोर नहीं देना चाहता।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ८), पृ० १३७

प्रयोगशालाएं

मेरे विचार मे, सुन्दर और आकर्षक इमारतें भी विज्ञान की कुछ सेवा अवश्य करती हैं, फिर भी जैसा कि डॉ० रमण ने हमें अक्सर याद दिलाया है, कि विज्ञान की रचना भवन नही करते। ईंट और गारा नही बल्कि मनुष्य विज्ञान को बनाता है; किन्तु यह अवश्य है कि अच्छे यन्त्र आदि से सज्जित इमारतें, कुशलता के साथ काम करने के लिए, और आगे के लिए लोगों को प्रशिक्षण देने के लिए, इन सुन्दर प्रयोगशालाओं का होना अभीष्ट है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६५

प्रांतीयता

हमे प्रांतीयता को भूलना है; अगर हम प्रान्त को अलग बढ़ाएंगे और सूबे को अलग बढ़ाएंगे—तो देश को हम नीचे करते हैं। हमें तो देश के हित को सबसे आगे रखना है। इस बात को याद रखें, कि अगर हिन्दुस्तान नहीं बढता है, तो हम सब बढ़ते हैं, और अगर हिन्दुस्तान नही बढता तो कोई नहीं बढता—चाहे हमारा प्रान्त या जिला आगे हो या पीछे हो।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५३

प्राचीन साहित्य

हमारी बड़ी बदकिस्मतियों में एक यह है कि हम यूनान में, हिन्दुस्तान में और सभी जगह, दुनिया के पुराने म।

का एक बड़ा हिस्सा खो बैठे हैं। शायद इसमें बचत न थी, क्योंकि शुरू में किताबें ताड़पत्रों पर, या भोजपत्र या जो भूर्ज वृक्ष की छाल होती थी, लिखी जाती थीं, और इनके छिलके बहुत आसानी से उचड़ जाते थे—और कागज पर लिखने का रिवाज बाद में हुआ। किसी भी किताब की चंद प्रतियों से ज्यादा न होतीं, और अगर वे नष्ट हो जातीं तो वह रचना ही गुम हो जाती, और उसका पता हमें महज उन हवालों या उद्धरणों से मिलता—जो उसके बारे में और पुस्तकों में होते। फिर भी पचास-साठ हजार संस्कृत की लिखी पुस्तकों या उनके रूपान्तरों का पता लग चुका है, और उनकी सूची बन चुकी है, और नये-नये ग्रन्थ बराबर मिलते जा रहे हैं।

—हिंदुस्तान की कहानी, पृ० १२६-१२७

पुलिस

हिन्दुस्तान में इधर एक अरसे से, पुलिस वाले लाठी का इस्तेमाल काफी ज्यादा करने लगे हैं। ऐसा लगता है मानो वह इस नतीजे पर पहुंच गए हों, कि लोगों को जेल का डर नहीं रहा। अब वे जेल ले जाने से पहले हममें से कुछ के सिर तोड़ डालना चाहते हैं। लाठी का यह गलत इस्तेमाल लाला लाजपतराय को पीटने से शुरू किया गया, और दिन-पर-दिन इसका और भी बुरा इस्तेमाल होता जा रहा है। मुझे बताया गया है कि पुलिस जब वालंटियरों पर लाठियां चला रही थी, तब लाहौर का डिप्टी-कमिश्नर अपना पाइप पी रहा था। अफसरान का दिमाग मेरी समझ में नहीं आता। यह कैसा बरताव है कि वालंटियरों को पीटा भी जाए, और फिर जेल भी ले जाया जाए?

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ८), पृ० १५

फौज

हमारा मुल्क इसलिए अपनी फौज और लड़ाई का सामान तैयार नहीं करता कि किसीको गुलाम बनाए, बल्कि इसलिए कि अपनी आजादी को बचा सके, और अगर जरूरत हो तो दुनिया की आजादी में मदद कर सके। बहुत दिन तक हम गुलाम रहे, उससे हमें गुलामी से नफरत हुई। तो फिर भला हम औरों को गुलाम कैसे बना सकते हैं?

—लालकिले के प्राचीर से (खण्ड १), पृ० ६

बहस और कार्य

हिन्दुस्तान में ज्यादातर बुद्धिजीवी और दार्शनिक लोग हैं, जो कि कर्म और अकर्म की योजनाओं पर विचार कर रहे हैं, और जो कि बिना निश्चित कर्म के गरमागरम भाषण देते हैं। उनमें उत्तेजन भी है; लेकिन गरमी और उत्तेजना महज उनके व्याख्यानों में है, और किसी दिशा में नहीं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय, पृ० २३६

बाह्य हस्तक्षेप

हम किसी मुल्क के आन्तरिक या दूसरे मामलों में दखल देना नहीं चाहते। दुनिया के मामलों में हमारा मुख्य हित शान्ति, और यह देखना है कि जातीय एकता हो, और जो लोग अभी तक गुलाम हैं वे आजाद हो जाएं, और बाकी किसी चीज के लिए हम दुनिया में दखल देना नहीं चाहेंगे, और यह भी नहीं चाहते कि दूसरे लोग हमारे मामलों में दखल दें। हां, अगर किसी तरह का सैनिक, राजनीतिक या आर्थिक हु
तो हम उसको रोकेंगे।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम

बुद्ध

बुद्ध में प्रचलित धर्म, अंधविश्वास, कर्मकांड और यज्ञ आदि की प्रथा पर, और इसके साथ जुड़े हुए निहित स्वार्थों पर हमला करने का साहस था। उन्होंने आधिभौतिक और परमार्थी नजरिये का, करामातों का, इल्हाम, अलौकिक व्यापार आदि का विरोध किया। दलील, अक्ल और तजुरबे पर उनका आग्रह था, और उन्होंने नीति या इखलाक पर जोर दिया। उनका तरीका था—मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का, और इस मनोविज्ञान में आत्मा को जगह नहीं दी थी। उनका नजरिया, आधिभौतिक कल्पना की बासी हवा के बाद पहाड़ की ताजी हवा के हलके थपेड़े-सा जान पड़ता है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १४८-१४६

बौद्ध-चिन्तन

बुद्ध का ढंग मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का ढंग था, और यहां भी यह देखकर अचरज होता है—कि आज के विज्ञान की नई-से-नई खोजों के कितने निकट उनकी सूझ-बूझ थी। आदमी की जिंदगी पर विचार और जांच, बिना किसी स्थायी आत्मा के लिहाज के होती है; क्योंकि अगर किसी ऐसी आत्मा की सत्ता है भी, तो वह हमारी समझ से परे है; मन को शरीर का अंग, मानसिक शक्तियों की एक मिलावट समझा जाता था। इस तरह से व्यक्ति मानसिक स्थितियों की एक गठरी बन जाता है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १७१

बौद्ध-धर्म

बौद्ध-धर्म, जो हिंदुस्तानी विचार और संस्कृति की उपज

का एक नमूना है, एक नकारात्मक या जिंदगी से इन्कार करने वाला सिद्वांत होता तो जरूर ही उसका इस तरह का असर उन करोड़ों लोगों पर पड़ा होता, जो उसके मानने वाले हैं। लेकिन दरअसल, बौद्ध मजहबवाले मुल्कों में हमें इसके खिलाफ सबूत मिलते हैं, और चीनी लोग इस बात की जीती-जागती मिसाल हैं कि जिंदगी से इकरार करना किसे कहते हैं।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०६

भय

किसी तरह का भी फायदा नहीं हो सकता, यदि हम आपस में हर वक्त एक कशमकश में रहें, और एक-दूसरे से नाराज हों, नफरत करें। नफरत का नतीजा अच्छा नहीं है, डर का नतीजा अच्छा नहीं। डर को अपना साथी न बनाइए। गलत साथी है वह !

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५७-५८

जब कोई व्यक्ति भय अनुभव करता है, तो उसके बुरे और अनिष्टकर नतीजे जरूर निकलते हैं। भय अच्छा साथी नहीं है। यह आश्चर्य की बात है कि भय की यह भावना बड़े-बड़े देशों पर अधिक व्याप्त दिखाई देती है। भय और युद्ध का भारी भय, और बहुत सी-बातों का भय।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खंड), पृ० १७३

भय लोगों को अंधा और खतरनाक बना देता है।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ५२०

मेरे ख्याल में, सारी बुराई की जड़ डर है। इससे लड़ाई और हिंसा का जन्म होता है। हिंसा और झूठ इसीकी प्रतिक्रिया है। हमारे पुराने ग्रन्थों में कहा है कि सबसे बड़ा दान

अभयदान है। जो आदमी निर्भय है, उसके विचार और काम भी शुद्ध होते हैं।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० २२६

भविष्य

कोई भी आदमी या मुल्क विपरीत परिस्थितियों में, हमेशा गुजरे जमाने के अपने सुनहरे दिनों की याद करता और मामूली तौर पर बढ़ा-चढ़ाकर उनका बखान करता है। हिन्दुस्तान भी इस नियम का अपवाद नहीं है, और उसका अपने पुरखों की बहुत-सी कारगुजारियों पर गौरव अनुभव करके उसका इजहार करना बेकार नहीं है। यकीनन नये हिन्दुस्तान की मनोवृत्ति को समझने के लिए हिन्दुस्तान के बीते इतिहास को देखना जरूरी है। इससे इस बात को देखने में भी हमें मदद मिलेगी, कि बारम्बार जो यह कहा जाता है कि हिन्दुस्तान कभी एक राष्ट्र नहीं रहा, और अंग्रेजों के यहां आने तक वह हमेशा अराजकता तथा हमलों का ही शिकार रहा—उसमें कितनी सचाई है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड २), पृ० २४५

धर्म के कारण हमारे अन्दर अज्ञान और रुढ़िवाद है, जिसके कारण अपनी ओर से हम कुछ सोचने को ही तैयार नहीं होते और बीते जमाने के गौरव की भावना भी हमें आगे तरक्की के लिए तैयार नहीं होने देती। यह बात नहीं कि हमारा गुजरा जमाना गौरवपूर्ण नहीं था, लेकिन तरक्की के लिए तो हमें उसको भूलकर, वर्तमान और भविष्य को ही देखना होगा।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड २), पृ० २३६

भारत

इतिहास के उषाकाल में भारत ने अपनी अनंत खोज

आरंभ की। दुर्गम सदियां उसके उद्योग, उसकी विशाल सफलता और उसकी असफलताओं से भरी मिलेंगी। चाहे अच्छे दिन रहे हों, चाहे बुरे—उसने इस खोज को आंखों से ओझल नहीं होने दिया; न उन आदर्शों को ही भुलाया, जिनसे उसे शक्ति प्राप्त हुई। आज हम दुर्भाग्य की एक अवधि पूरी करते हैं, और भारत ने अपने आपको फिर पहचाना है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण, (प्रथम खण्ड) पृ० ३

इस महान् देश को हमें एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा करना है, और शक्तिशाली के सामान्य अर्थ में ही नहीं—अर्थात् बड़ी-बड़ी फौजें इत्यादि का होना ही नहीं, बल्कि विचारों और दृष्टि से शक्तिशाली, कर्मठता की दृष्टि से शक्तिशाली और संस्कृति की दृष्टि से शक्तिशाली—मानव की शान्तिपूर्वक सेवा करने के लिए शक्तिशाली बनाना है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खंड), पृ० ४६

भारत एक ऐसा देश है, जिसने अपने इतिहास में हमेशा बहुत जबरदस्त आन्तरिक शक्ति का परिचय दिया है। इसने दूसरे देशों में अपनी सांस्कृतिक छाप भी डाली है, लेकिन हथियारों के बल पर नहीं बल्कि अपनी सांस्कृतिक [illegible] और जीवंतता के बल पर।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खंड), पृ० [illegible]

भारत है क्या? यह सवाल बार-बार मेरे दिमाग में आता रहा है। अपने इतिहास के आरम्भिक काल में [illegible] मन में आश्चर्य पैदा किया है। यह एक पुरुषार्थी और शक्तिशाली जाति का अतीत था, जो खोज की भावना से और उदार जिज्ञासा की प्रेरणा से भरपूर थी; और अपने साथ इतिहास के आरम्भ से ही इसने एक परिपक्व तथा सहिष्णु [illegible] परिचय दिया। जीवन और इसके आनन्द, तथा दायित्वों [illegible]

स्वीकार करते हुए इसने हमेशा अनन्त और असीम की ही खोज की। इसने संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा की रचना की, और इसने इस भाषा, अपनी कलाओं और वास्तुविद्या के द्वारा दूर-दूर के देशों तक अपना जीवनदायी संदेश भेजा। इसने उपनिषदों, गीता और बुद्ध को जन्म दिया।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खंड), पृ० ५०

मुझे भारत पर गर्व है, न केवल उसकी प्राचीन शानदार विरासत के कारण, बल्कि इस कारण भी कि उसमें—अपने मन और आत्मा के कानों और खिडकियों, को, दूर देशों से आने वाली ताजी और शक्तिदायिनी हवाओं के प्रति खुला रखने की आश्चर्यजनक सामर्थ्य है। भारत की शक्ति दोहरी रही है: एक तो उसकी अपनी आतरिक संस्कृति है, जोकि युगों में पुष्पित हुई है; दूसरे, और स्रोतों से शिक्षा प्राप्त करके उसे अपना बनाने में डूब नही सकती, और उसमे इतनी बुद्धिमत्ता है कि वह अपने को उनसे अलग-थलग नही होने देती, इसलिए भारत के सच्चे इतिहास में निरंतर समन्वय दिखाई देता है, और जो अनेक राजनैतिक परिवर्तन हुए है, उन्होंने इस विभिन्न परंतु मूलतः संमिश्र संस्कृति के विकास पर विशेष असर नही डाला है।

—नेहरू और नई पीढी : हरिदत्त शर्मा, पृ० ८३

भारत की सेवा

भारत की सेवा का अर्थ, करोडो पीड़ितों की सेवा है। इसका अर्थ दरिद्रता और अज्ञान, और अवसर की विषमता का अन्त करना है। हमारी पीढ़ी के सबसे बड़े आदमी की यह आकाक्षा रही है—कि प्रत्येक आंख के प्रत्येक आंसू को पोंछ दिया जाए। ऐसा करना हमारी शक्ति से वाहर हो सकता है,

लेकिन जब तक आंसू है और पीड़ा है, तब तक हमारा काम पूरा नहीं होगा।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३

भारत की स्वतन्त्रता

जब आधी रात के घंटे बजेंगे, जबकि सारी दुनिया सोती होगी, उस समय भारत जगकर जीवन और स्वतन्त्रता प्राप्त करेगा। एक ऐसा क्षण होता है, जोकि इतिहास में कम ही आता है, जबकि हम पुराने को छोड़कर नये जीवन में पग धरते है, जबकि एक युग का अन्त होता है, जबकि यह उचित है कि इस गंभीर क्षण में हम भारत और उसके लोगों, और उससे भी बढ़कर मानवता के हित के लिए सेवा अर्पण करने की शपथ लें।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड) पृ० ३

भारत के भविष्य की नींव

हमें भारत की इस विशाल इमारत को दृढ़ नींव पर बनाने की बात सोचनी है। लेकिन नींव रखने का कार्य आरम्भ करने से पहले ही हमें दैत्यों-जैसी बाधाओं और विघ्नों का सामना करना पड़ा, और उनसे लड़ना पड़ा—और अगर उन्हें मार डालना नहीं तो कम-से-कम निष्क्रिय करना पड़ा। आगे भी बहुत-से अन्य जंतुओं का हमें सामना करना पड़ा है। फिर भी भविष्य के भारत की नींव आज पड़ रही है। और अगर हम उसे कुछ ऐसी बातें करके खतरे में डाल दें, जो कि सुखकर भले ही हो लेकिन जिनके प्रतीक्षित नतीजे कल कुछ-का-कुछ निकलें तो भविष्य में अपने विश्वास के प्रति हम झूठे होंगे।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६४

भारतमाता

हर किसीने भारतमाता की तस्वीर देखी है। उसे एक सुन्दर नारी के रूप में चित्रित किया गया है। लेकिन भारत माता दरअसल भूखों और भूख से तडपते लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। बंबई में वहुत से लखपती और वहुतेरी शानदार इमारतें है। लेकिन इन इमारतों की शान-शौकत मे हमें गांवों की मिट्टी की लड़खड़ाती झोंपड़ियों को भूलना नही चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० २४३

भारत-विभाजन

हमें अफसोस हुआ कि हिन्दुस्तान का टुकड़ा अलग हुआ। लेकिन आखिर में हमारी मंजूरी से हुआ, हमारी रजामंदी से हुआ—यह सोचकर कि ऐसा होने से शायद हम फिर आइन्दा ज्यादा दोस्ती से रह सकें, मिल सकें। जो अन्दरूनी झगडे रोज-रोज हो रहे थे, उनको किसी तरह कम करना था, क्योंकि वे हमारी आजादी के रास्ते में आते थे। खैर गलत या सही, हमने उस वात को मंजूर किया और उस वात पर हमें कायम रहना है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४१

भारतीय इतिहास

भारत के इतिहास के वारे में मेरा अपना दृष्टिकोण यही है, कि जव-जव भारत ने अपना दिमाग दुनिया के लिए खुला रखा—तव-तव उसने तरक्की की, और जव उसने दिमाग वन्द कर लेना चाहा—तव उसकी अवनति हुई। जितना ज्यादा उसने अपना दिमाग वन्द किया, उतना ही अधिक वह गतिहीन होता चला गया।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३२

भारतीय गणराज्य

मैं लाजमी तौर से कह सकता हूं कि मुझे इसमें जरा भी सन्देह नहीं, कि चाहे राजनीतिक दृष्टि से या और किसी दृष्टि से, भारतीय गणराज्य बहुत मजबूत नीव पर खड़ा है—अपनी असफलताओं, कमजोरियों और कठिनाइयों के बावजूद, भारत एक मजबूत देश है और आगे बढ़ा है, और दुनिया के हर देश के साथ मुकाबला कर सकता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५८

भारतीय दर्शन

हिन्दुस्तान में फिलसफा कुछ इने-गिने फिलसफों या विचारकों का मैदान नही था। आम लोगों के मजहब का यह एक लाजिमी अंश था, और चाहे जितने घुले हुए रूप में क्यों न हो, यह भिदकर उन तक पहुंचता था और इसने उनमे एक फिलसफियाना नजरिया पैदा कर दिया था—जो हिन्दुस्तान में करीब-करीब उतना ही आम था, जितना कि चीन में यह है। कुछ लोगों के लिए तो इस फिलसफे ने एक गहरी और पेचीदा कोशिश की शक्ल अख्तियार कर ली थी, जो यह जानना चाहती थी कि सभी दिखाई पड़ने वाली वस्तुओं के पीछे कौन-से कारण और नियम काम कर रहे है। जिन्दगी का आखिरी मकसद क्या है, उनमें कोई भीतरी एकता है या नहीं। लेकिन आम लोगो के लिए एक ज्यादा सादा मामला था। फिर उनमे ऐसी हिम्मत पैदा की कि वे कठिनाइयों और बदनसीबियों का सामना कर सकें, और अपनी शान्ति और खुशी को खो न बैठें।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृष्ठ ११०

भारतीय भाषाएं

भारत एक बहुभाषा-भाषी देश है। यह सच है कि हमारी भाषाएं एक-न-एक तरीके से संस्कृत से निकली हैं। अन्य भाषाओं का यद्यपि स्वतन्त्र इतिहास है, लेकिन फिर भी उनमें बहुत-से संस्कृत के शब्द पाए जाते हैं। हमारी सब भाषाओं में एक-दूसरे से काफी निकटता है, लेकिन फिर भी यह मानना होगा कि सब अलग-अलग भाषाएं हैं, और महान् भाषाएं हैं। और ये सब इस भारत देश की भाषाएं हैं। इसलिए संविधान में हमने भारत की इन महान् भाषाओं को भारत की राष्ट्रीय भाषाओं के रूप में गिनाया है, लेकिन हिन्दी सरकारी और एक अखिल भारतीय भाषा की तरह रखी गई है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४२

भारतीय मजदूर

भारत का श्रमिक, भारत का मजदूर वर्ग एक बहुत अच्छा मजदूर वर्ग है। वे कभी-कभी चाहे उत्तेजित या गुमराह हो जाएं, लेकिन उचित व्यवहार किया जाए तो ये बड़े काम के लोग हैं, और आखिर उन्हीं के बल पर तो आप भारत का निर्माण करेंगे। उन लोगों से आपको निबटना है, और उनके साथ न्यायोचित और अच्छा व्यवहार करना है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ८७

भारतीय संस्कृति

कुछ लोगों का खयाल है कि हिन्दुस्तानी विचार और संस्कृति—जिन्दगी से इन्कार करने के सिद्धान्त के सूचक हैं, जिन्दगी से इकरार के सिद्धान्त के नहीं। मेरा खयाल है कि दोनों ही सिद्धान्त, कमोवेश सभी पुरानी संस्कृतियों और पुराने

धर्मो मे मौजूद हैं। लेकिन मैं तो इस नतीजे पर पहुंचूंगा कि सब कुछ देखते हुए, हिन्दुस्तानी संस्कृति ने जिन्दगी से इन्कार करने पर कभी जोर नही दिया है, अगरचे यहां के कुछ फिलसफों ने ऐसा जरूर किया है। वल्कि ईसाई मजहव के मुकावले में, इसने जिन्दगी से जो इन्कार किया है वह वहुत कम है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०८

हिन्दुस्तान मे, हर जमाने में—जव उसकी संस्कृति ने फूल खिलाए है, लोगों ने जिन्दगी और प्रकृति में गहरा रस लिया है, जीने की क्रिया मे ही उन्होंने आनन्द का अनुभव किया है, गाने, नाचने, चित्रकला और नाटकों मे उनकी दिलचस्पी रही है, यहा तक कि यौन-सम्वन्धों के वारे में वड़ी पेचीदा किस्म की जाचें हुई है। इस वात का कयास नही किया जा सकता कि एक ऐसी तहजीव, या जिन्दगी का ऐसा नजरिया—जिसकी वुनियाद में गैर-दुनियादारी हो, या जो जिन्दगी को हेच समझता हो, इस तरह के विविध और जोरदार विकास का वानी होगा। दरअसल इससे जाहिर होना चाहिए कि कोई भी तहजीव, जो वुनियादी तौर पर गैर-वुनियादी हो, हजारों साल तक अपने को कायम नही रख सकती।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०८

भारतीय सभ्यता

आज हिन्दुस्तान की सभ्यता रुंधी हुई है। नौजवानों का फर्ज है कि वे इस रुद्ध तालाव को वहती धारा में वदल दें। युवको की कसौटी कर्म, और हर क्षेत्र में विद्रोह है। हर नौजवान को विद्रोह करना चाहिए—न सिर्फ राजनैतिक क्षेत्र में, वल्कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक क्षेत्रों में भी। मेरे लिए उस आदमी की कोई कीमत नही है, जो आता है और

कहता है कि कुरान में यह कहा गया है, वह कहा गया है। हमें हर गैर-मुनासिब चीज को छोड़ देना चाहिए, भले ही उसके लिए वेद और कुरान में प्रमाण मिलें। मैं जानता हूं, इस रास्ते पर चलने में कठिनाइयां हैं; लेकिन ये कठिनाइयां हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे रहने से कहीं अच्छी हैं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० १८०

हिन्दुस्तान की हजारों बरस की तवारीख़ में और इतिहास में क्या चीज उभरती है? वह बुनियादी चीज भारत की सभ्यता है। और वह है बर्दाश्त करना, मजहबी लड़ाइयां न लड़ना। वह यह है कि जो कोई आए उससे प्रेम का बरताव करना, उसको अपनाना।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६

भावात्मक एकता

हममें अभिमान, संकीर्णता, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता और जातिवाद नहीं होना चाहिए, क्योंकि हमें एक महान् मिशन पूरा करना है। भारतीय गणराज्य के नागरिकों को तनकर सीधे खड़े रहना चाहिए। ऊपर देखते हुए भी हमारे पैर मजबूती से जमीन पर जमे रहें, और फिर हम भारत की जनता में इस समन्वय और एकता को पैदा करें। राजनीतिक एकता कुछ हद तक आ चुकी है। लेकिन मैं जिस चीज के पीछे हूं, वह बहुत गहरी है, वह है—भारतवासियों की भावात्मक एकता—ताकि हम सब मिलकर एक हो सकें, और सब मिलकर एक ही राष्ट्र की इकाई बनें। लेकिन ऐसा करते हुए हम, अपनी आश्चर्यजनक विविधता के बावजूद एकता को बनाए रखें।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४६

भाषा

अगर हमारे मुल्क में अपनी ही बोली में बातचीत और बहस-मुबाहसे नहीं किए जाएंगे, तो हमारी तरक्की नामुमकिन है। पश्चिमी लोगों को अपनी-अपनी भाषा से मुहब्बत है। जनरल बोथा जब बादशाह से मिलने गए तो वह डच जबान में बोले, हालांकि अंग्रेजी वह बिल्कुल सही और अच्छी तरह बोल सकते थे। जब आयरिश नेता लोग राष्ट्रसंघ में गए तो वे गालिक भाषा में बोले, हालांकि उनकी बोली को समझने वाला वहां कोई तीसरा आदमी नहीं था। इसलिए मैं चाहूंगा कि आप छात्र लोग अपनी मातृभाषा सीखें और इसी भाषा में अपनी बातचीत और बहस-मुबाहसे चलावें।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० २३

भाषा-विवाद

जब हम आप लोगों की एक आसान भाषा की बातें करते हैं, और जिसे हम उर्दू-बहुल और संस्कृत-बहुल भाषा पर तरजीह देते हैं—तो हमारा मतलब असल में क्या होता है ? हर नौसिखुआ जानता है कि दिल्ली की जबान और नागपुर या बिहार की जबान में जमीन-आसमान का फर्क है। लखनऊ शहर और लखनऊ के देहाती इलाके की जबान में भी बेहद फर्क है। तो फिर अवाम की यह सामान्य भाषा क्या है ? हममें से हरएक अपनी या अपने गुट की भाषा को स्तरीय भाषा समझता है, और भाषा के दूसरे रूप के इस्तेमाल से चिढ़ता है। अपने अज्ञान या सीमित ज्ञान के लिए लज्जित होने के बदले, वह इस बात के लिए गौरव का अनुभव करता जान पड़ता है कि वह कुछ बातें नहीं समझता।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३६८

जहा तक तुम्हारी दूसरी जवान की वात है, इसका फैसला असल में तुम्हें ही करना होगा, क्योंकि पढना तुमको है। अपने खत में तुमने लिखा है कि फ्रेंच शायद आसान होगी। मेरा भी ऐसा ही ख्याल है। तव फ्रेंच ही रहे। संस्कृत जव तक तुम्हें कुछ भारी महसूस न हो, उसे विल्कुल ही न छोड़ देना। काफी संस्कृत न पढ़ सकने के लिए मुझे वरावर अफसोस रहता है। इसे न जानने की वजह से मैं,वहुत सारी वातें नही जान पाया। लेकिन यह सव अपनी पसन्द पर मुनहसिर है, और तुम महसूस करो कि फ्रेंच और संस्कृत दोनों तुम नहीं चला सकती हो—तो संस्कृत को छोड दे सकती हो। काश, मैं तुम्हारे साथ होता, और हम साथ-साथ फ्रेंच और संस्कृत दोनों पढ़ते। हम दोनों खूव तरक्की कर लेते।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ४०७

यह अजीव वात है कि हमारे मुल्क मे कितनी सारी वाते साम्प्रदायिक रंग पकड़ लेती है, यहा तक कि भाषा का सवाल भी सांप्रदायिक वन गया है और किसी रहस्यमय कारण से, उर्दू मुसलमानों की सरकारी छाप मानी जाने लगी है। पूरे आदर के साथ, मैं इसे मानने को तैयार नही हूं। मैं उर्दू को अपनी जवान मानता हूं, जिसे मैं वचपन से वोलता आया हूं। वद-किस्मती से मेरी तालीम ऐसी हुई कि मैं ठीक तौर से न तो हिन्दी जानता हूं, न उर्दू ही। लेकिन इसका यह मतलव नही है कि उर्दू मेरी जवान नही रही। इसलिए मैं इस सवाल को पूरी तरह से भाषाई नजरिये से देखता हूं, न कि साम्प्रदायिक नज़रिये से। मैं चाहता हूं कि दूसरे लोग भी ऐसा ही करें। इस सिलसिले में संस्कृति और मुस्लिम संस्कृति की वातें करना—मुद्दे से वाहर की वातें करना है।

— जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३७०

हमें एक समृद्ध और विविध रूपात्मक भाषा की जरूरत है, जो अपने जीवित रहने के लिए और ताकत के लिए, पुरानी भाषाओं के साथ ही दुनिया की नयी भाषाओं से भी शब्दों का आयात करे। शब्द के आधुनिक अर्थ में हमारी भाषाएं अपरिपक्व हैं, और आधुनिक भावनाओं तथा आधुनिक विचारों की सूक्ष्म छवियों को अभिव्यक्त करने के लिए उन्हें विकसित होना पड़ेगा। इसलिए उनका भण्डार जितना ही भरता है, वे उतनी ही बेहतर होती हैं। अपने खुद के सीमित ज्ञान के चलते, हमें भाषाओं के विकास को रोकने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हिन्दी और उर्दू दोनों में ही जिस असल चीज पर एतराज करना चाहिए, वह है अभिव्यक्ति की वह दरबारी और विस्तारशील प्रणाली—जो यद्यपि शब्दाडंबरपूर्ण होती है, लेकिन उसमें जीवनी शक्ति नहीं होती, और वह जनसाधारण तक कभी नहीं पहुंच सकती। अगर हम जन-साधारण का ध्यान रखकर सोचें, बोलें और लिखें, तो हमारी बातों और लिखत में सादगी और ताकत आ जाएगी। असंयत लेखन के साथ ही हिन्दी और उर्दू की अलगाव की प्रवृत्ति को रोकने का यही रास्ता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३६६

हिन्दी और दीगर हिन्दुस्तानी जबानों में कोई झगड़ा नहीं है। अपनी मातृभाषा सीखने और उसमें दक्षता प्राप्त करने को —हिन्दी के मुकाबले नीचा दर्जा देने की जरूरत नहीं है। हिन्दुस्तान में हिन्दी सामान्य भाषा, और अन्तरप्रांतीय तथा राष्ट्रीय कामों के लिए जरूरी है। यह वह भाषा है, जो भारत को इकट्ठा करके रखेगी और राष्ट्र को एक बनाएगी। इस मुल्क के दो तिहाई लोग अभी भी हिन्दी बोलते हैं और बाकी लोगों का कर्त्तव्य है कि वे इसे सीखें। तीन या चार भाषाएं

सीखना मुश्किल नहीं है और बेशक ये सभी साथ-साथ रहेंगी। यूरोप में हर आदमी को कम-से-कम तीन भाषाएं सीखनी होती हैं। स्विटजरलैंड-जैसे छोटे मुल्क में तीन भाषाएं बोली जाती हैं। हिन्दी के प्रचार से इस मुल्क की भाषा-समस्या हल हो जाएगी।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३७८

हिन्दुस्तान की बात कहूं तो, यहां का असली सवाल गरीबी और बेरोजगारी है। और सारी बातें इनसे छोटी हैं और इनका ख्याल रखकर ही उन पर गौर किया जा सकता है। बातों को देखने का मेरा यही तरीका है, और मैं समझता हूं कि सही तरीका है। लेकिन यह नजर मैं ज्यादातर लोगों में अजीब ढंग से गैरहाजिर पाता हूं—खासतौर से उन लोगों में, जो हिन्दी और उर्दू के बारे में इतनी ज्यादा बातें करते और लिखते हैं। भाषाएं और साहित्य और संस्कृतियां तब तरक्की करती हैं, जब लोग तरक्की करते हैं, और उन्हें अपनी प्रतिभा को विकसित करने की आजादी होती है। जो लोग भूखों मर रहे हैं, बुरी हालत में हैं और गुलाम हैं, उनके लिए एक बनावटी संस्कृति की क्या कीमत है—जो उन तक पहुंचती तक नहीं?

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३६६

भूख

जबकि मनुष्य भूखा हो या मर रहा हो, उस वक्त संस्कृति या भगवान के विषय में बात करना बेवकूफी है, और किसी चीज के बारे में बातें करने से पहले, आदमी को उसकी जिंदगी की आम जरूरत की चीजें जरूर मिलनी चाहिए। यहां अर्थ-शास्त्र आता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३३-३४

मजदूर

सरकार की दमन-नीति, मुल्क के ट्रेड-यूनियन आन्दोलन को भी नहीं तोड सकती। उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। आखिरी अंजाम तो ट्रेड यूनियनवाद की जीत ही है। आज हिन्दुस्तानी मजदूर की ताकत देखकर अचरज होता है, और वर्ग एकता की भावना आज बहुत साफ दिखाई दे रही है। कमजोर या गलत नेतृत्व की वजह से कभी-कभी वे गुमराह भले ही हो जाएं, लेकिन उन्हें जो नई ताकत मिली है—वह उन्हें आगे बढ़ाएगी ही।

— जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० ३१

मत-वैभिन्य

मतभेदों का होना अनिवार्य है। इनका हमें सम्मान करना चाहिए और ऐसा नहीं करना चाहिए कि दूसरों के मतभेदों को मिटाने के लिए अपनी मर्जी उन पर थोपी जाए।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २५५

मध्यम मार्ग

बुद्ध का बताया हुआ रास्ता मध्यम मार्ग है, और यह अपने को यातना देने और विलास में डुबो देने के बीच का रास्ता है। शरीर को तकलीफ देने के अनुभव के बाद उन्होंने कहा है कि जो आदमी अपनी ताकत खो बैठता है—वह ठीक रास्ते पर नहीं चल सकता। यह मध्यम मार्ग—आर्यों का अष्टांग मार्ग कहलाया। इसके अंग हैं—ठीक विश्वास, ठीक आकांक्षाएं, ठीक वचन, ठीक कर्म, ठीक आधार, ठीक प्रयत्न, ठीक वृत्ति और ठीक आनन्द। इसमें अपने विकास का सवाल है, किसीकी कृपा का नहीं।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १७२

महान् बनो

हिन्दुस्तान की आजादी कायम रखने के लिए, हिन्दुस्तान की तरक्की के लिए, हिन्दुस्तान को दुनिया में बड़ा बनाने के के लिए—बडा खाली लम्बान और चौड़ान में नहीं, बल्कि ऐसा मुल्क बनाने के लिए जो बड़े काम करता है और जिसकी इज्जत दुनिया में होती है—हमें खुद बड़ा होना पड़ेगा, हमें खुद उस रास्ते पर चलना पड़ेगा, जो महात्मा गांधी ने हमें दिखाया था।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५

महान् व्यक्ति

महान् स्त्रियों और पुरुषों को—अपने प्रदर्शन के लिए किसी ताज या तख्त या हीरे-जवाहरात या खिताबों की जरूरत नहीं है। सिर्फ राजाओं और नवाबों को, जिनके अन्दर सिवाय राजपन या नवाबी के और कुछ भी नहीं होता, अपना नंगापन छिपाने के लिए तरह-तरह की वर्दियां और राजसी पोशाकें पहननी पड़ती हैं।

— विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ८६

महापुरुष की याद

महापुरुष की याद होती है, वे बातें जो उन्होंने हमें बताईं, जो सबक हमें सिखाए, जो आदेश दिए, उनका जैसा जीवन था उसमें हमने क्या सबक सीखे?

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५२

महाभारत

महाभारत एक ऐसा बेशकीमती भण्डार है, कि हमें उसमें बहुत तरह की अनमोल चीजें मिल सकती हैं। यह रंग-बिरंगी,

घनी और खुदबुदाती हुई जिन्दगी से भरपूर है, और इस बात में यह हिन्दुस्तानी विचारधारा के दूसरे पहलू से बहुत हटकर है—जिसमें तपस्या और जिन्दगी से इन्कार पर जोर दिया गया है। यह महज नीति की शिक्षा देने वाली किताब नहीं है, हालांकि नीति और इखलाक की तालीम इसमें काफी मिलेगी। महाभारत की शिक्षा का सार एक जुमले में रख दिया है—दूसरे के लिए तू ऐसी बात न कर, जो तुझे खुद अपने लिए नापसन्द हो। जोर समाज की भलाई पर दिया गया है। और यह बात मार्के की है, क्योंकि खयाल यह किया जाता है कि हिन्दुस्तानी दिमाग का रुझान शख्सी कमाल हासिल करने की ओर रहा है, न कि समाज की भलाई की तरफ। इसमें कहा है—जिसमें समाज की भलाई नहीं होती, या जिसे करते हुए तुम्हें शर्म आती है—उसे न करो।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १४२

मां

हम स्कूल और कॉलिजों की बात करते है, जो कि निःसंदेह महत्त्वपूर्ण है, किन्तु एक व्यक्ति का निर्माण, न्यूनाधिक रूप में उसके जीवन के पहले दस वर्षों में होता है। जाहिरा तौर पर उस अवधि में माता का ही सबसे अधिक प्रभाव होता है, इसलिए अनेक प्रकार से सुशिक्षित मा—शिक्षा के लिए अनिवार्य बन जाती है।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० १५८

मानवतावाद

हमारे आर्थिक कार्यक्रम की बुनियाद होनी चाहिए इंसानियत वाला नजरिया, और रुपये के लिए इंसान को कुर्बान

नही कर दिया जाना चाहिए। अगर कोई उद्योग अपने मजदूरों को भूखा रखे बिना नही चलाया जा सकता, तो उस उद्योग को बन्द कर दिया जाए। अगर जमीन पर काम करने वाले मजदूरों को पेट-भर खाने को नही मिलता, तो जो बिचौलिए उनके पूरे हिस्से से उन्हें महरूम रखते हैं—उन्हे जाना होगा। खेत या कारखाने मे काम करने वाले हर मजदूर का अगर कम-से-कम भी हक माना जाए, तो उसे जो न्यूनतम मजदूरी दी जाए वह इतनी तो हो ही—कि उससे वह मामूली आराम की जिन्दगी बसर कर सके; और कामों के उसके घण्टे भी इंसानियत का ख्याल करके ही तय किए जाएं, ताकि उसकी ताकत और हिम्मत जवाब न दे जाए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० १९६

मित्रता

सही तरीका और मित्रता का भाव बहुत जरूरी है, क्योंकि मित्रता का व्यवहार करने से ही, दूसरा भी वैसा ही व्यवहार करता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३५

मित्रता और लड़ाई

जब मैं इतिहास के पन्नों को पलटता हूं या आधुनिक घटनाओं को गौर से देखता हूं, तो कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है, कि जो लोग आपस में एक-दूसरे को सबसे अच्छी तरह जानते हैं, वह सबसे ज्यादा आपस मे लड़ते हैं। इसलिए सिर्फ जानने मात्र से अधिक सहयोग और मित्रता नही होती।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३०

मिशनरी

मिशनरियों ने बहुत अच्छा काम किया और मैं उनकी बहुत प्रशंसा करता हूं, लेकिन राजनीतिक दृष्टि से उन्होंने भारत में किसी तरह के परिवर्तन को पसन्द नहीं किया। असल में जब सारे भारत में एक नई राजनीतिक जागृति आ रही थी, तो उत्तर-पूर्वी भारत में ऐसा आन्दोलन चला, जिसने उत्तर-पूर्व भारत के लोगों को अपने अलग-अलग राज्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। वहां रहने वाले बहुत से विदेशियों के लिए इस आन्दोलन का समर्थन किया। मैं नहीं समझता कि किसी भी दृष्टि से इसे व्यावहारिक और उचित ठहराया जा सकता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३८-३९

मुस्लिम साम्प्रदायिकता

मैं नहीं समझता कि मुस्लिम फिर्कापरस्त संगठन—जिनमें खास है मुस्लिम ऑल पार्टीज़ कॉन्फ्रेंस और मुस्लिम लीग—हिन्दुस्तान के मुसलमानों की किसी बड़ी जमात की नुमाइन्दगी करते हैं, सिवा इन मानी में कि वे मौजूदा मुस्लिम जज्बात का फायदा उठाते हैं। लेकिन यह बात अपनी जगह कायम है कि वे मुसलमानों की तरफ से बोलने का दावा करते हैं, और कोई दूसरा संगठन अब तक नहीं खड़ा हुआ है जो इस दावे को कामयाबी के साथ चुनौती दे सके। अपने हमलावर, फिर्कवाराना मिजाज की वजह से उन्हें राष्ट्रीय मुसलमानों की एक बड़ी तादाद के ऊपर, जो अपने को कांग्रेस में मिला देते है, शह मिल जाती है। इन संगठनों के नेता खुल्लमखुल्ला और परले दर्जे के फिर्कापरस्त हैं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० १५९

मृत्यु

अभावों में मरने की अपेक्षा संघर्ष करते हुए मरना अधिक अच्छा है, दुःखपूर्ण और निराश जीवन की अपेक्षा मर जाना बेहतर है। मृत्यु होने पर नया जन्म मिलेगा। और वे व्यक्ति अथवा राष्ट्र जो मरना नहीं जानते, यह भी नहीं जानते कि जिया कैसे जाता है।

—भारत की कहानी

युद्ध

हमने हमेशा कोशिश की—कि इस बात को सामने रखें कि दुनिया में अमन कैसे होता है, क्योंकि आजकल लड़ाई से ज्यादा खतरनाक और तबाह करने वाली चीज कोई नहीं है। और अगर दुनिया-भर में लड़ाई हुई—एक नई किस्म की लड़ाई, तो यकीनन दुनिया में जो कुछ तरक्की हुई है, जो कुछ दुनिया की कौमें बढ़ी है, वे सब खत्म हो जाएंगी, और एक वहशत की तरफ दुनिया फिर बढने लगेगी। तो यह तो बड़ी खतरनाक बात है। हम दुनिया को रोकना चाहते है, क्योंकि जो कुछ दुनिया मे हो उसका असर हम पर पड़ेगा। चाहे हम उसमें ज्यादा हिस्सा लें या कम हिस्सा लें या हिस्सा न ले—उसका असर हर मुल्क पर पड़ेगा।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४०-४१

युवक-संगठन

मैं नौजवानों के आन्दोलनों में इतना यकीन करता हूं, कि हिन्दुस्तान में युवकों के संगठन के लिए काम करने के वास्ते सब कुछ निछावर करने को तैयार हूं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० १७५

युवावस्था

जवानी की अगर कोई पहचान है, तो वह है जिस्म और दिमाग का लचीलापन। जैसे ही जिस्म में सख्ती आ जाती है, आपकी उम्र ढलने लग जाती है। मैं उम्मीद करता हूं कि आप इस बात की कोशिश करेंगे, कि दिमागी तौर पर आप बेलोच न हो आए, बल्कि अपने दिमाग की खिड़कियों को नये ख्यालात के लिए खुला रखें, उन पर बहस करें, किसी नतीजे पर पहुंचें, और उस पर अमल करें।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० ५३१

राजनीति और मजहब

राजनीति और मजहब का (संकीर्ण-से-संकीर्ण मायने में) गठबंधन सबसे ज्यादा खतरनाक गठबंधन है, और उसको खत्म कर देना चाहिए। इससे सांप्रदायिक राजनीति पनपती है।

— जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २६

राजनीतिज्ञ

मैं अनुभव करता हूं कि एक राजनीतिज्ञ अथवा सार्वजनिक व्यक्ति—वास्तविकताओं की उपेक्षा करके, अमूर्तभाव-संश्लिष्ट सत्य के सहारे नहीं चल सकता। उसकी गतिविधि अपने सह-कर्मियों की सत्यवृत्ति की मात्रा पर निर्भर होती है, फिर भी बुनियादी सच्चाई—सच्चाई ही रहती है; सदा उसीको ध्यान में रखकर यथाशक्ति कर्म-संचालन होना चाहिए, अन्यथा हम बुराई के चक्कर में फंस जाते हैं—और एक बुराई दूसरी बुराई की ओर खींच ले जाती है।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० १०६

राजनीतिज्ञ अपने तौर पर ही उपयोगी व्यक्ति है, यद्यपि

इसकी वह कद्र नहीं रहेगी, लेकिन कार्य विशेषों के विशेषज्ञ हमेशा जमे रहेंगे। इंजीनियर और वैज्ञानिक की सदा आवश्यकता रहेगी। चाहे राजनीतिज्ञ की कद्र घट जाए, लेकिन इंजीनियर और वैज्ञानिक की कद्र नही घटेगी।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० १८०

रामायण और महाभारत

कदीम हिन्दुस्तान के दो बड़े महाकाव्य—रामायण और महाभारत शायद कई सदियों में तैयार हुए, और बाद में भी उनमें नये टुकड़े जोड़े जाते रहे। उनमें भारतीय आर्यों के शुरू के दिनों का हाल है—उनकी विजयों का, उनकी आपस की उस वक्त की लड़ाइयों का—जब वे फैल रहे थे और अपनी ताकत को मजबूत कर रहे थे—लेकिन इन महाकाव्यों की रचना और संग्रह बाद की बातें हैं। मैं कहीं की ऐसी किसी पुस्तक को नही जानता हूं, जिसने आम जनता के दिमाग पर इतना लगातार और व्यापक असर डाला हो, जितना कि इन दो पुस्तकों ने डाला है। इतने कदीम वक्त में तैयार की गई होने पर भी, वे हिन्दुस्तानियो की जिन्दगी में आज भी जीता-जागता असर रखती हैं।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १३०-१३१

रामायण-महाभारत मे वह खास हिन्दुस्तानी ढंग मिलता है, जिसमे जुदा-जुदा सास्कृतिक विकास के लोगो के लिए एक साथ सामग्री पेश की जाती है, यानी ऊंचे-से-ऊंचे दर्जे के विद्वानो से लेकर अनपढ़ और अशिक्षित देहाती तक के लिए। इनके जरिये हमें कदीम हिन्दुस्तानियों का वह गुर कुछ-कुछ समझ में आ जाता है, जिससे वे एक पंचमेल और जांत-पात मे बंटे हुए समाज को इकट्ठा बनाए रखने मे, उनके झगड़ों को सुलझाते

रहने में, उन्हें वीर-परम्परा और नैतिक रहन-सहन की समान भूमिका देने में कामयाब हुए हैं। उन्होंने कोशिश करके लोगों में एक आम नजरिया कायम किया, और यह सब भेद-भावों से ऊपर था और बना रहा।

— हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १३१

राष्ट्रगान

राष्ट्रगान के बारे में यह अनुभव किया गया है, कि भाषा की अपेक्षा धुन अधिक महत्त्व रखती है, और यह भी कि धुन ऐसी हो, जिसमें भारतीय संगीत की गरिमा का पता लगे—भले ही कुछ हद तक पश्चिमी संगीत का भी उसमें पुट हो—ताकि यह वाद्यवृन्द और बैंड-संगीत दोनों पर बराबरी से बजाया जा सके। शायद राष्ट्र गान का महत्त्व घर की अपेक्षा विदेशों में अधिक है। इसलिए अनुभव से हमें पता चला है, कि जन-गण-मन की धुन की विदेशों में बहुत सराहना और प्रशंसा की गई है। वह दूसरों से बहुत ही अलग है, और इसमें एक प्रकार का जीवन और गति है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २१

राष्ट्रध्वज

यह झंडा हमारी आजादी, हमारे आदर्शों, हमारी तमन्नाओं और हमारी मुसीबतों की निशानी है। इसको लहराता देखकर और इसके नीचे खड़े होकर हमने झंडा-गीत गाया है; हमने इसके काम आने का, और हर कीमत पर इसकी इज्जत और शान बचाने का अहद किया है।

यह इसी तरह लहराता रहे, ताकि इसकी शान और ऊंची उठे। हम इसे नीचे न गिरने दें, और अपने मुल्क और उसके निशान से गद्दारी न करें।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १६५

राष्ट्रीय झंडे को आप आजादी का निशान समझें, तिरंगे कपड़े का महज एक टुकड़ा नही। यह किसी राजा या बादशाह का झंडा नही है, बल्कि यह हिन्दुस्तान के लाखों-लाख गरीब लोगों की एकता और ताकत का निशान है।

— जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० २८५

राष्ट्रवाद : राष्ट्रीयता

अगर उन देशों मे भी, जहा नये विचारों और अंतर्राष्ट्रीय ताकतों का जोरदार असर पडा है, राष्ट्रीयता की भावना इतनी आम है, तो हिंदुस्तान के लोगों के दिमागों पर उनका कितना ज्यादा असर होना लाजिमी है! कभी-कभी हमसे कहा जाता है कि हमारी राष्ट्रीयता इस बात की निशानी है, कि हम लोग पिछड़े हुए लोग हैं, और हमारे दिल संकुचित हैं। जो लोग हमसे इस तरह की बातें करते है, शायद उनका ख्याल है कि अगर हम अंग्रेजी सल्तनत या कॉमनवेल्थ के भीतर एक छोटे हिस्सेदार की हैसयत कुबूल कर ले, तो सच्ची अंतरराष्ट्रीयता की भावना की जीत होगी। वे यह समझते नहीं दिखाई पड़ते कि इस खास किस्म की और महज नाम की अंतरराष्ट्रीयता— एक सकुचित अंग्रेजी राष्ट्रीयता का फैलाव-भर है, और अगर हमने हिंदुस्तान में अंग्रेजी राज्य के वे नतीजे न भी देखे होते— जो हमने देख लिए है, तो भी यह हमें पसंद नहीं आ सकती थी। फिर भी, राष्ट्रीयता की भावना चाहे कितनी ही गहरी हो, सच्ची अंतराष्ट्रीयता को कुबूल करने मे, और संसार-व्यापी संगठन और राष्ट्रीय संगठन के मातहत रखने के मामले में, हिंदुस्तान बहुत-सी और कौमों के मुकाबले में आगे बढ गया है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६८

अपनी मौजूदा शक्ल में राष्ट्रवाद से, जो वह मौजूद हालात

में अनिवार्य है, मुल्क के बुनियादी माली मसलों का कोई हल नही निकलता। आज का सबसे बड़ा मसला शायद किसानों का ममला है, और राष्ट्रवाद के जरिये इसका कोई असली हल नही निकलता। यह कमोवेश कुछ छोटी-मोटी राहतें देने के अलावा, मौजूदा हालात को ज्यों-का-त्यों वनाये रखता है। लेकिन समाजवाद ऐसे सारे मसलों का सीधा मुकावला करता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३७

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि मैं राष्ट्रवाद को नापसंद करता हूं। लेकिन जहा तक हिंदुस्तान का ताल्लुक है—और हिंदुस्तान आज जिस हालत मे है—मै राष्ट्रवाद को पसंद करता हूं, क्योंकि राष्ट्रवाद का हमारे लिए मतलव होता है कि वह हमें आजादी की ओर, हमें अपनी शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति की ओर वढ़ाता है। राष्ट्रवाद हमारे लिए रिहाई की ताकत है, इसलिए अच्छा है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ४६०

राष्ट्रवाद एक विचित्र वस्तु है, जो देश के इतिहास के किसी खास मुकाम पर तो जीवन, उन्नति, शक्ति और एकता प्रदान करती है; लेकिन साथ ही इसको सीमित कर देने की भी प्रवृत्ति है, क्योंकि आदमी यह सोचने लगता है कि मेरा देश वाकी दुनिया से भिन्न है। इस तरह देखने का नजरिया वदलता जाता है, और आदमी अपने ही संघर्षो और अच्छाइयो और वुराइयों के सोचने मे फसा रहता है, और दूसरे विचार उसके सामने आते ही नही। नतीजा यह होता है कि वही राष्ट्रवाद, जो किसी जाति की उन्नित का प्रतीक होता है, मानसिक विकास के अवरुद्ध होने का प्रतीक वन जाता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३४

राष्ट्रवाद जब सफल होता जाता है, तो कभी-कभी यह बड़े आक्रामक तरीके से चारो तरफ फैलता है और दुनिया के लिए एक खतरा बन जाता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३४

राष्ट्रीय मनोवृत्ति बहुत ही जटिल होती है। हममें से ज्यादातर लोग यह समझते हैं कि हम बड़े न्यायी और निष्पक्ष हैं। हमेशा गलती दूसरा शख्स या दूसरा मुल्क ही करता है। हमारे दिमाग में कहीं न कहीं यह इत्मीनान छिपा रहता है कि हम वैसे नहीं है, जैसे दूसरे लोग हैं, हममें और दूसरों में जरूर फर्क है—यह दूसरी बात है कि शराफत की वजह से हम बराबर उस बात को न कहें।

—मेरी कहानी, पृ० ६६५

राष्ट्रीयता का आदर्श एक गहरा और मजबूत आदर्श है, और यह बात नहीं कि इसका जमाना बीत चुका हो—और आगे के लिए इसका महत्त्व न रह गया हो; लेकिन और भी आदर्श, जैसे अंतरराष्ट्रीयता और श्रमजीवी वर्ग के आदर्श—जो मौजूदा जमाने की असलियतों की बुनियाद पर ज्यादा कायम है—उठ खड़े हुए हैं, और अगर हम दुनिया की कशमकश को बन्द कर अमन कायम करना चाहते है, तो हमें इन जुदा-जुदा आदर्शों के बीच एक समझौता कायम करना होगा, आदमी की आत्मा के लिए राष्ट्रीयता का जो आकर्षण है—इसका लिहाज करना पड़ेगा, चाहे उसके दायरे को कुछ सीमित ही करना पड़े।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६७

साम्प्रदायिकता के साथ राष्ट्रवाद जीवित नहीं रह सकता। राष्ट्रवाद का मतलब हिन्दू राष्ट्रवाद, मुस्लिम राष्ट्रवाद या सिख राष्ट्रवाद कभी नहीं होता। ज्योंही आप हिन्दू, सिख,

मुसलमान की बात करते है, त्योंही आप हिन्दुस्तान के बारे मे बात नहीं कर सकते। हरेक को अपने से यह सवाल पूछना होगा : मैं भारत को क्या बनाना चाहता हूं—एक देश, एक राष्ट्र, या कि दस-बीस-पच्चीस राष्ट्र—टुकड़ों-टुकड़ों में बंटा हुआ जिसमें कोई ताकत न हो और जो जरा-से झटके से छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर जाए।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५६

सारी दुनिया में होने वाली हाल की घटनाओं ने इसे साबित कर दिया है, कि यह ख्याल गलत है कि अंतरराष्ट्रीयता और जनता के आंदोलनों के आगे राष्ट्रीयता खत्म हो रही है। सच यह है कि राष्ट्रीयता की भावना लोगों मे अब भी एक जोरदार भावना है, और इसके साथ परंपरा—मिल-जुलकर रहने और सामान्य मकसद की भावनाएं जुड़ी हुई हैं।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६७

रीति-रिवाज

रीति-रिवाज जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बहुत-सी चीजों को देखने का सिर्फ नजरिया ही है। उनका कोई महत्त्वपूर्ण अर्थ या उद्देश्य नहीं है, लेकिन फिर भी यह रीति-रिवाज हमारे रास्ते के रोड़े हैं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६७

रूढ़िवादिता

जाती तौर पर मैं यह महसूस करता हूं कि अगर हम पुरानी रूढ़ियों की जंजीर में बंधे रहे,तो हमारे लिए राजनैतिक या आर्थिक मामलों में कुछ भी आगे बढ़ सकना नामुमकिन आज के जमाने में इन खास-खास रिवाजों की

और उनका मेल विठाने का सवाल ऐसा है—जिस पर आपको सोचना है। दुनिया वेशक वदल गई है, और वड़ी जवरदस्त रफ्तार से दिन-दिन वदलती ही चली जा रही है। इस तब्दीली को न देखना, और उसके साथ अपना मेल विठाकर न चलना हमारी परले दरजे की वेवकूफी है। इसका मतलव यह जरूर नहीं कि हर पुरानी और वीती हुई चीज को हम छोड़ दें, और हर पश्चिमी चीज की नकल करने लगें; लेकिन हमें यह महसूस करने की कोशिश तो करनी ही होगी, कि जिन्दगी की दौड़ में हम पीछे छूट गए हैं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय, (खण्ड ४), पृ० १७

रूस और भारत

कई पीढ़ियों से हिन्दुस्तानियों में रूस का डर विठाया गया है। इसलिए इस खयाली डर को दिल से निकाल देना शायद कुछ मुश्किल है, लेकिन अगर सचाई को सामने रखें तो हम एक ही नतीजे पर पहुंच सकते हैं—और वह यह है कि हिन्दुस्तान को रूस से डरने की कोई वजह नहीं है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड २), पृ० ४३३

लघु उद्योग

जव हम उत्पादन की वृद्धि के विषय में वात करते है—वह चाहे अन्दर का हो, चाहे किसी दूसरी वस्तु का—तव यह आवश्यक है कि हम छोटे पैमाने पर होने वाले उत्पादन को भी खूव प्रोत्साहन दें।—आज सभी प्रकार की चीजों के छोटे पैमाने पर होने वाले उत्पादन को वहुत अधिक वढाने की आवश्यकता है, क्योंकि सभी तरह की चीजों की कमी है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६७

लोकतन्त्र

हम लोकतन्त्र और एकता के बारे में बात करते हैं, और मुझे आशा है कि देश में ज्यादा-से-ज्यादा लोकतन्त्र होगा, और ज्यादा-से-ज्यादा एकता होगी। लोकतन्त्र कोई शुद्ध राजनीतिक वस्तु नहीं है। १६वीं सदी में लोकतंत्र या प्रजातंत्र का मतलब लोग इतना ही समझते थे, कि हर आदमी का एक मत हो। उन दिनों के लिए यह काफी अच्छी संकल्पना थी, लेकिन यह अधूरी थी—और आजकल लोग अधिक व्यापक और गहरे प्रजातंत्र के बारे में सोचते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २७

लोकतंत्र और समाजवाद

मैं समझता हूं कि सिद्धांततः लोकतान्त्रिक तरीकों से समाजवाद कायम किया जा सकता है, बशर्ते कि पूरा लोकतांत्रिक सिलसिला मौजूद हो। लेकिन व्यवहारतः इसमें बड़ी कठिनाइयां हो सकती हैं, क्योंकि समाजवाद के विरोधी जब देखेंगे कि उनकी ताकत को खतरा है, तो वे लोकतान्त्रिक तरीकों को नामंजूर कर देंगे। लोकतंत्र की नामंजूरी समाजवादी सिम्त से नहीं होती, या उसे नहीं होना चाहिए। वह दूसरी ओर से होती है। बेशक वह सिम्त फासिज्म है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय, (खण्ड ७), पृ० ६५

लोकतंत्रीय तरीका

कभी-कभी यह कहा जाता है कि शांतिपूर्ण और लोकतन्त्रीय तरीकों से प्रगति नहीं हो सकती। मैं इस बात को नहीं मानता। वास्तव में, भारत में आज यदि लोकतंत्रीय तरीकों को ९- का कोई भी प्रयत्न किया गया, तो इससे सब कुछ अस्त-

हो जाएगा—और निकट भविष्य में तरक्की की सब सम्भावनाएं खत्म हो जाएंगी।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५३

हमारे सामने बड़ी समस्याएं हैं, और उन्हें हल करने के लिए हमें कठिन परिश्रम करना है। लेकिन यदि हमें इन समस्याओं को एक लोकतंत्रात्मक ढंग से हल करना है, तो इसके लिए जनता और केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों के बीच तथा भारत के सभी दलों और वर्गों के लोगों में आपस में बहुत अधिक सहयोग की आवश्यकता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ८४

लोहा

कदीम हिन्दुस्तान में, जान पड़ता है कि लोहे के तैयार करने में बड़ी तरक्की हो गई थी। दिल्ली के पास एक बहुत बड़ा लोहे का खंभा है, जिसने आजकल के वैज्ञानिकों को दंग कर दिया है, और वे नहीं पता लगा सके हैं कि यह किस तरह बना होगा—क्योंकि इस पर न जंग लग सका है, और न दूसरी मौसमी तबदीलियों का असर पहुंचा है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १४०

'वंदे-मातरम्'

'वंदे-मातरम्' निश्चय ही और निर्विवाद रूप से भारत का प्रमुख राष्ट्र गान है, जिसका इतिहास यद्यपि परंपरा से जुड़ा हुआ है, और साथ ही आजादी के लिए हमारे संघर्ष का भी स्वयं एक इतिहास है। इसकी यह स्थिति निश्चय ही आगे बनी रहेगी, और इसे कोई हटा नहीं सकता।

जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २१

वर्गविहीन समाज

मैं चाहता हूं कि आज भी धर्म या जाति, भाषा या प्रान्त के नाम पर जो संकीर्ण टकराव चल रहा है—वह खत्म हो, और ऐसा वर्ग-विहीन और जातिविहीन समाज बने, जिसमें हर व्यक्ति को अपनी योग्यता और गुणों के अनुसार फलने-फूलने का पूरा अवसर मिले। खासकर मैं आशा करता हूं कि जात-पांत का यह अभिशाप जरूर मिट जाएगा, क्योंकि जांत-पांत के आधार पर न तो लोकतन्त्र आ सकता है और न समाजवाद।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५४

विक्रम

विक्रम बहुत जमाने से एक कौमी सूरमा और आदर्श राजा समझा जाता रहा है। उसकी याद एक ऐसे शासक के रूप में की जाती है, जिसने विदेशी हमला करने वालों को मार-भगाया। लेकिन उसकी कीर्ति की खास वजह उसके दरबार की साहित्यिक और सांस्कृतिक चमक-दमक है, जहां उसने कुछ मशहूर कवियों, कलावंतों और गवैयों को इकट्ठा किया था, और ये उसके दरबार के 'नवरत्न' कहलाते थे। उसके बारे में जो कथाएं हैं, ज्यादातर ऐसी हैं, जिनमें उसकी अपनी प्रजा की भलाई करने की ख्वाहिश जाहिर होती है, और यह कि वह जरा-सी जरूरत पड़ने पर दूसरों को लाभ पहुंचाने के लिए अपने स्वार्थ का त्याग करता था। वह अपनी उदारता, दूसरों की सेवा, साहस और निरभिमान के लिए मशहूर है। वह खासकर इस वजह से लोकप्रिय है कि वह एक अच्छा आदमी, कलाओं का हामी और सरपरस्त समझा जाता था।

हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १३६

विज्ञान

अगर हम सही ढंग से विज्ञान का रवैया अख्तियार करें तो इसमें जरा भी संदेह नहीं कि हमेशा ही कुछ-न-कुछ भला होता है। यह हमें काम करने के नये-नये तरीके सिखाता है। शायद इससे औद्योगिक जिन्दगी की स्थितियों में सुधार होता है; लेकिन बुनियादी चीज जो विज्ञान को सिखानी चाहिए, वह है कि सीधा सोचना, सीधा व्यवहार करना।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६७

क्या विज्ञान, जैसा कि अक्सर माना जाता है, उद्योगों का साथी है? यह निस्संदेह उद्योग की सहायता करना चाहता है; लेकिन सिर्फ उसकी सहायता के लिए ही नहीं, बल्कि इसलिए कि यह राष्ट्र के लिए काम पैदा करना चाहता है, ताकि लोगों को बेहतर जिन्दगी मिल सके और तरक्की के अधिकाधिक अवसर मिल सकें।

— जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६५

तलाश के सफर में इन्सान का दिमाग उसे बहुत दूर तक ले गया है। चूंकि उसने कुदरत को समझना सीख लिया है, उसने अपने फायदे के लिए उसका ज्यादा इस्तेमाल किया है और उसे लगाम दी है। इस तरह उसने ज्यादा ताकत हासिल कर ली है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि इस नई ताकत का ठीक-ठीक इस्तेमाल करना न जानने की वजह से उसने अक्सर इसका गलत इस्तेमाल किया है। खुद साइंस का इस्तेमाल भी उसने खास तौर पर इसलिए किया है कि वह उसके लिए खतरनाक हथियार मुहैया करे, ताकि वह अपने भाई की जान ले सके, और जिस सभ्यता को उसने इतनी मशक्कत से तैयार किया है—उसको बर्बाद कर सके।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ३८३

विज्ञान केवल पुरानी चीज को बेहतर तरीके से दोहराता या बढ़ाता ही नही है; बल्कि कुछ ऐसी चीज भी पैदा करता है, जो संसार और मानव-ज्ञान के लिए नई हो।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६६

विचार

दुनिया खयालात के जरिये आगे बढ़ती है। विचार हमेशा फौजों के मुकाबले ज्यादा बड़ा होता है, और सबसे ज्यादा ताकतवर और अच्छी तरह से सगठित तानाशाही की निस्बत कहीं ज्यादा टिकाऊ होता है। विचारों की ताकत सिपाहियों, बन्दूकों, जेलखानों और कानूनों से भी बडी होती है। उनकी शुरूआत धीमी होती है, लेकिन उनका असर जबर्दस्त होता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० १

विचारों के प्रकाशन मे बाहरी हस्तक्षेप बहुत बुरा है लेकिन समाचारों को दबाने की मनोवृत्ति और कोशिश कहीं ज्यादा खतरनाक है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० १

सही काम यों ही नहीं हुआ करते। उसके पहले सही विचार होना चाहिए। उस विचार को गिरा हुआ हमल कहा जाता है, जिसका अंजाम काम में न निकले। और वह काम जो विचार पर मुनहसिर न हो, गड़बड़ और उलझन पैदा करने वाला होता है। इसलिए यह मुनासिब होगा कि हमारे दिमागों में जो पेचीदा जाले बन गए हैं—हम उन्हें साफ कर दें, और हमारे सामने जो मौजूदा सवाल हैं—जिन बडी गुत्थियों को हमें सुलझाना है, आए दिन की हमारी जो परेशानियां हैं—उन्हें जरा देर के लिए भूल जाएं, और बुनियादी हकीकतों और उसूलों की तरफ थोड़ा पीछे लौट आएं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० १

हिन्दू अवतारों मे विश्वास करते हैं, लेकिन मेरी राय में असली अवतार विचार हैं। नये विचार बड़े परिवर्तन ले आते है। आज हम देखते है कि ये नये विचार इन्सानियत को झकझोर रहे हैं। साम्राज्य बनते है और मिट जाते है, लेकिन मेरा खयाल है कि विचार साम्राज्यों को प्रभावित करते है। ये नये विचार भारतीय बुद्धिजीवियों के दिमाग में आते हैं। वह क्या बात है, जो किसी सभा मे कोई भाषण सुनने के लिए, इन अधभूखे लोगों को इतनी बड़ी तादाद में खींच लाती है ?

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३२३-३२४

विचार-स्वातन्त्र्य

अलग-अलग राये हों, अलग-अलग रायों का इजहार हो—मैं चाहता हूं। मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान के लोग आंखें बन्द करके एक आवाज उठाएं, एक ही बात कहें—गोयाकि उनके दिमाग नही, दिल नहीं। हमें हक है अपनी-अपनी आवाज उठाने का, लेकिन किसी हिन्दुस्तानी को यह हक नहीं है कि वह हिन्दुस्तान की आजादी के खिलाफ आवाज उठाए। किसी हिन्दुस्तानी को यह हक नही है कि वह ऐसी बुनियादी बातों के खिलाफ आवाज उठाए, जो हिन्दुस्तान की एकता को, हिन्दुस्तान के इतिहास को कमजोर करे। क्योंकि अगर वह ऐसा करता है—तो वह चाहे या न चाहे, चाहे वह समझे या न समझे, वह हिन्दुस्तान के और हिन्दुस्तान की आजादी के खिलाफ गद्दारी करता है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० २५

एक आजाद मुल्क में यह जरूरी है कि खयालात की, विचारों की आजादी हो। जो चाहें, अपने खयालों का इजहार कर सकें; जो जिस राजनीतिक रास्ते पर चलना चाहें—उस

पर चले; चाहे दल बनाएं, पार्टी बनाएं, सब कुछ करें—ठीक है। क्योंकि अगर यह आजादी न हो तो मुल्क आजाद नही रहते। मुल्क गुलाम हो जाता है, दबा हुआ हो जाता है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० २३

मै बोलने की आजादी का विरोधी नही हूं। लेकिन मैं चाहता हूं कि दूसरे लोग भी मुझे वैसी ही आजादी दें। मैं मतभेदो के बारे में खुले विचार-विमर्श का हिमायती हूं। मैं इस बातका विरोधी हूं कि पीठ-पीछे बहस-मुबाहसे किए जाएं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० २३३

विजेता

ऐसे विजेता को जो शाति का इच्छुक नही, कभी दूरगामी परिणाम प्राप्त नहीं होते, और जीतने वाले और हारने वाले दोनों को गहरे आघात उठाने पडते है, और दोनों को ही भविष्य के प्रति डर सताता रहता है। मैं यह कहना चाहूंगा कि आज की दुनिया का यह वर्णन गलत नही है। मनुष्य की तर्कबुद्धि और हमारी सारी मनुष्य जाति के लिए यह प्रिय नही है। क्या यह अप्रिय स्थिति जारी रहनी चाहिए, और क्या विज्ञान और धन-सम्पत्ति की शक्ति को मनुष्य के विनाश के लिए इस्तेमाल किए जाते रहना चाहिए?

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खड), पृ० १६३

विदेश-नीति

विदेश-नीति केवल कुछ ऊंचे सिद्धातों की घोषणा मात्र नही है, और नही सारी दुनिया के लिए आचरण करने का कोई हुक्म या आदेश है। यह हर मुल्क की अपनी-अपनी ताकत के अनुसार नियन्त्रित और प्रभावित होती है। अगर नीति देश की

क्षमता को ख्याल में रखकर नहीं बनाई जाती, तो इस पर अमल नहीं हो सकता। अगर कोई मुल्क छोटे मुंह बड़ी बात करता है, तो इसमें उसको कोई श्रेय नहीं मिलता।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २२०

विदेशी भाषा

मेरे विचार में, हम भारतवासियों के लिए—एक विदेशी भाषा को अपनी सरकारी भाषा के रूप में स्वीकारना सरासर अशोभनीय होगा। मैं आपको कह सकता हूं कि बहुत बार जब हम लोग विदेशों में जाते हैं, और हमें अपने ही देशवासियों से अंग्रेजी में बातचीत करनी पड़ती है, तो मुझे कितना बुरा लगता है। लोगों को बहुत ताज्जुब होता है, और वे हमसे पूछते हैं कि हमारी कोई भाषा नहीं है ? हमें विदेशी भाषा में क्यों बोलना पड़ता है ?

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४३

यह ठीक है कि हम अंग्रेजी का बहिष्कार नहीं करते, और इसका वैज्ञानिक और दूसरे कार्यों में इस्तेमाल हो सकता है। मैं सिर्फ यह कह रहा हूं कि किसी भी राष्ट्रीय दृष्टि से, या स्वाभिमान की दृष्टि से, हम बहुत देर तक विदेशी भाषा में सरकारी कामकाज चालू नहीं रख सकते।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ४४

विद्युत्

उद्योग के विकास के लिए—सबसे पहले अनिवार्य चीज है बिजली। किसी देश ने कितनी तरक्की की है, इसका निर्णय इस बात से हो सकता है कि वहा बिजली कितनी है। किसी भी मुल्क के लिए यह विकास की एक अच्छी कसौटी है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ११२

विश्वविद्यालय

यदि विश्वविद्यालय आधारभूत बुद्धि, बुनियादी समझ नही दे सकते, यदि वे केवल ऐसे डिग्रीधारी व्यक्ति निकालते जाने की भाषा मे ही सोचते रहते है—जो केवल नौकरियों के इच्छुक हैं, तो विश्वविद्यालय बहुत मामूली हद तक बेकारी की समस्या को हल कर सकेंगे, अथवा कुछ इधर-उधर की तकनीकी या अन्य किस्म की सहायता दे सकेंगे। किन्तु वे ऐसे व्यक्ति नहीं पैदा कर सकेंगे, जो आज की समस्याओं को समझ अथवा हल कर सकेंगे।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० १३३

विश्वविद्यालय मानवीयता, सहनशीलता, तरक्की, और वैचारिक अध्यवसाय तथा सत्य की खोज के लिए काम करता है। यह मानव-जाति की निरन्तर ऊंचे लक्ष्यों की दौड़ के लिए काम करता है। यदि विश्वविद्यालय अपना कर्तव्य ठीक से पूरा करे, तो यह मनुष्य और समूचे राष्ट्र के लिए शुभ होगा; लेकिन यदि सरस्वती का यह मंदिर क्षुद्र दम्भ और छोटे-मोटे स्वार्थो को ही पूरा करे, तो क्या राष्ट्र या उसके लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ेगी?

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २३८

विश्वशांति

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से, आज का बड़ा सवाल विश्वशांति का है। आज हमारे लिए यही विकल्प है कि हम दुनिया को उसके अपने रूप में ही स्वीकार करें, एक-दूसरे के लिए ज्यादा सहनशीलता पैदा करें। हर देश को इस बात की स्वतंत्रता रहे कि वह अपने ढंग से अपना विकास करे और दूसरों से सीखे, लेकिन दूसरे उस पर अपनी कोई चीज नही थोपें। निश्चय ही

इसके लिए एक नई मानसिक विधा चाहिए। पंचशील या पांच सिद्धांत यही विधा बताते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५१

वेद

वेद आर्यो के उस समय के भावोद्‌गार हैं, जबकि वे हिन्दुस्तान की हरी-भरी भूमि पर आए। वे अपने कुल के विचारों को अपने साथ लाए, उस कुल के जिसने ईरान में 'अवेस्ता' की रचना की, और हिन्दुस्तान की जमीन पर उन्होंने अपने विचारों को विस्तार दिया। वेदों की भाषा भी 'अवेस्ता' की भाषा से अद्‌भुत रूप में मिलती-जुलती है, और यह बताया जाता है कि वेद 'अवेस्ता' के जितने नजदीक हैं—उतने खुद इस देश के महाकाव्यों की संस्कृत के नजदीक नहीं हैं।

—हिंदुस्तान की कहानी, पृ० १००-१०१

वेश्यावृत्ति

तय है कि वेश्यावृत्ति एक बुराई और ऐसा नासूर है—जो समाज को खाए जा रहा है। लेकिन इतिहास की शुरूआत से ही यह मौजूद है—इसलिए अगर हम एकाएक इसे खत्म कर देने की सोचें, तो वह हमारी हिमाकत ही होगी। लेकिन नैतिकता, सार्वजनिक स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए, इसकी बुराइया कम करने की हर जगह कोशिशें हो रही हैं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्‌मय, (खण्ड २), पृ० १३

यह एक जानी-बूझी बात है कि वेश्यावृत्ति बहुत-कुछ दो वजह से होती है—माली और इंसानी। कितने ही उपनियम बनाने के बजाय अगर हम औरतों की हालत ऊपर उठा, सकें, और उनके लिए इज्जत की कमाई के रास्ते खोल दें, तो यह बुराई कम हो सकती है। इंसानी पहलू से निपटना इससे भी

ज्यादा मुश्किल है, लेकिन जिस किसी वात से समाजी तरक्की हो, और औरतों-मर्दों में बराबरी आए, उससे समस्या के हल में मदद ही मिलेगी। वेश्याओं के हमारे बीच रहने से हमारी नैतिक भावना को आघात लगता है; लेकिन वेश्याएं वेश्यावृत्ति का अपना पुराना धंधा खुद ही नही करतीं, ये तो सौदे का एक पहलू हैं। दूसरा जो पहलू है—बेचारी औरतो का शोषण करके उन पर ही सारा दोष डालने वाली आदमियों की जो जमात है, उसके खिलाफ कोई बात शायद ही कभी सुनाई पड़ती है। वेश्यावृत्ति को दूर करने का सही तरीका यही है, कि स्त्रियों की तरह ही—उसमें मदद करने वाले पुरुषों की भी निन्दा की जाए। नियम-उपनियमों से हम ऐसा नही कर सकते, बल्कि यह काम तो सार्वजनिक भावना को ऊचा उठाकर ही किया जा सकता है। अगर लोकमत काफी मजबूत हो, तो शोषण और उसके साफ दिखाई देने वाले नतीजों को हम कही कम कर सकते हैं। बेशक जब तक स्त्री-पुरुष कुल मिलाकर आज से अच्छे नही बन जाते, तब तक थोड़ी-बहुत वेश्यावृत्ति तो बनी ही रहेगी।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय

व्यवसायगत असामाजिकता

वकील के पेशे की तरह कुछ दूसरे असामाजिक धंधे भी हैं। दरअसल आज भी हिन्दुस्तान मे सबसे ज्यादा इज्जत उन्ही लोगों को हासिल है, जो खुद कुछ नही करते; और उनके पुरखे उनके लिए जो कुछ छोड़ गए है, उसी के सहारे ऐशो-इशरत की जिंदगी बसर करते है। हमें इन सारे असामाजिक लोगों का ख्याल नही करना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० ४६०

शक्ति

अगर हम भले हैं, अगर हम मजबूत है—तो हिन्दुस्तान मजबूत है, और अगर हम कमजोर हैं तो हिन्दुस्तान कमजोर है। अगर हमारे दिल मे ताकत और हिम्मत है और कूवत है, तो वह हिन्दुस्तान की ताकत हो जाती है। अगर हममें फूट है, लड़ाई और कमजोरी है, तो हिन्दुस्तान कमजोर है। हिन्दुस्तान हमसे कोई एक अलग चीज नहीं है, हम हिन्दुस्तान के एक छोटे टुकड़े हैं। हम उसकी औलाद है। और इसीके साथ याद रखिए कि हम जो आज सोचते है और जो कार्रवाई करते है, उससे कल का हिन्दुस्तान बनता है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५

आजादी एक ऐसी चीज है कि जिस वक्त आप गफलत में पड़ेगे, वह फिसल जाएगी। वह जा सकती है, वह खतरे में पड़ जाती है—ताकत क्या चीज है ?—एक मुल्क की ताकत होती है—उसकी फौज, उसका सामान, उसके हवाई-जहाज, उसके समुन्दरी जहाज। लेकिन आखिर में वडी-से-वड़ी और वहादुर फौज मुल्क की हिफाजत नहीं करती, आखिर में हिफाजत करते है—उस मुल्क के लोगों के दिल। देखना यह होता है कि वे तगड़े है कि नही, वे छोटी वातों में पड़ते है या वड़ी वातों की तरफ देखते हैं, वे आपस में मिलते है या आपस में लड़ाई करते है। आखिर मे वह ताकत होती है, फौज के पीछे भी—और यों भी जो मुल्क को मजबूत करती है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ३४

संगीनों के वल पर हम एकता या मेल नही प्राप्त कर सकते। इसलिए हमारी नीति, उनको डराने की वजाय उनका मन जीतने की होनी चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड) पृ० २२८

हम एक वड़े मुल्क के रहने वाले हैं। जवर्दस्त मुल्क है, जबर्दस्त उसका इतिहास है। वड़े मुल्क के रहने वाले वड़े दिल के होने चाहिए। वड़े रास्ते पर हमें चलना है—झुकके नहीं, गलत वातों पर नही, चालवाजी से नही। शान से हमने हिन्दुस्तान को आजाद किया, शान से हमें आगे वढ़ना है, शान से हमें यह जो हिन्दुस्तान की आजादी की मशाल है—उसको लेकर चलना है, और जव हमारे हाथ कमजोर हो जाएं तो औरों को देना है—ताकि नौजवान हाथ उसको उठाएं, और हम अपना काम पूरा करके फिर चाहे खाक में मिल जाएं। लेकिन जव तक हाथ मे, जिस्म में, शरीर मे ताकत और वल है, उस वक्त तक उस ताकत को इस मुल्क को आगे वढने में, इस मुल्क के करोड़ों आदमियों की खिदमत करने में इस्तेमाल करें, काम में लाएं; और जव ताकत खत्म हो जाए तो हमारा काम भी खत्म हुआ। फिक्र नही, हमारा क्या होता है। और लोग आएंगे।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४७-४८

हमें तैयार होना है, तगड़ा होना है, मजवूत होना है; और जो-जो तकलीफें और मुसीवतें आएं, उनका हिम्मत हार के नही—वल्कि मजवूती से सामना करना है। क्योंकि मुझे इतमीनान है कि हिन्दुस्तान का भविष्य एक जवर्दस्त भविष्य है इसके सामने। यह नही कि हम और मुल्कों की फतह करें और उन्हें हराएं। मुल्कों के लिए वे जमाने गए। और जो कोई वड़े-से-वड़ा मुल्क दूसरे मुल्क को दवाना चाहे और अपनी हुकूमत में लाना चाहे तो आजकल के जमाने मे वह वदनाम होता है और आखिर में उसे हार माननी होती है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४४

हर बड़ी लड़ाई में उतार-चढाव आते है, और वक्ती नाकामयावियां भी होती हैं। जव भी ऐसी रुकावट आती है तो उसकी प्रतिक्रिया होती है, जव भी कौमी ताकत का खजाना खाली हो जाता है तो उसमें दुवारा ताकत भरनी पड़ती है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १७२

शब्द

शब्द कितने सीमित है, और वे हमें अपने-आपसे छिपाते हैं। कभी हम उनके पुरानेपन में पनाह खोजते हैं, और कभी उनके संगीत में अपने को खो वैठते हैं। और हम चाहे जितना पीछा करें, सचाई हमेशा हमारी आखों से ओझल रहती है। लेकिन क्या सचमुच हम उसका पीछा करते हैं, और उसे पाना चाहते है ? मेरा ख्याल है, वहुत-कम लोगों मे ऐसा करने की हिम्मत होती है, क्योंकि सचाई अपने अंदर स्वर्ग और नरक दोनों को छिपाए रहती है। वढ़-चढकर वातें करने के वावजूद हम उसे टालना चाहते हैं, और उससे वचने के लिए अपनी कल्पना के विशाल विस्तार मे धोखे की टट्टी खड़ी करते है, और खयाली महल वना लेते हैं। फिर हम शब्दों को कसूरवार क्यों माने ? हम खुद ही उनका सही इस्तेमाल करना नही जानते, या फिर वैसी हिम्मत नहीं करते।

— जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० ६

शहीद

अपनी किस्मत की एक नाजुक घड़ी में अगर आज हम— अपनी ताकत और कमजोरी दोनों को जानते हुए, और भविष्य के वारे में उम्मीद और अंदेशा दोनो को लिए यहा इकट्ठे हुए है, तो अच्छा है कि हमें पहला खयाल उन लोगों का आए, कि

जिन्होंने किसी पुरस्कार की उम्मीद के वगैर अपनी जिन्दगी इसलिए बिता दी—कि उनके बाद आनेवालों को कामयाबी की खुशी हासिल हो सके। पुराने जमाने के कितने ही महान् लोग हमारे साथ नहीं हैं, और बादवाले जमाने के हम उन्ही के द्वारा निर्मित एक ऊंचाई पर खड़े होकर, अक्सर उनके कामों की बुराई करने लगते हैं। यही दुनिया का तरीका है। लेकिन आपमें से कोई भी उन्हें, या उस बड़े काम को नहीं भूल सकता जो उन्होंने एक आजाद हिन्दुस्तान की बुनियाद डालने के लिए किया था। और न हममें कोई उन पुरुषों और स्त्रियों की शानदार मंडली को ही कभी भूल सकता है जिन्होंने बिना नतीजों का ख्याल किए एक विदेशी आधिपत्य की जबर्दस्त मुखालफत करते हुए अपनी जवान जानें दे दीं, या अपनी शानदार जवानी कष्ट और यातना में बिताई। उनमें से कितनों के नाम तक हमें मालूम नहीं। लोगों से वाहवाही पाने की उम्मीद किए बगर, वे चुपचाप काम करते और कष्ट झेलते रहे, और अपने कलेजे के खून से उन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के नाजुक पौधे को सींचा।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० १८६

शांति

ज्यों-ज्यों आदमी बडा होकर सयाना होता है, त्यों-त्यों माद्दी दुनिया या वस्तु-जगत से उसका संतोष हटता जाता है—और वह उसमें पूरी तरह उलझने से बचता है। वह दिमागी और रूहानी तस्कीन चाहता है, उसे भीतरी अर्थ की तलाश होती है। यही बात सभ्यताओं और लोगों पर भी लागू होती है। ज्यों-ज्यों वे बढ़कर सयाने होते हैं—हर एक सभ्यता में और हर एक जाति में, अंदरूनी जिंदगी और बाहरी जिंदगी

की ये साथ-साथ चलने वाली धाराएं मिलेंगी। जब ये धाराएं एक-दूसरे से मिल जाती हैं, या नजदीक रहती है, तब सम-तोल और पायदारी रहती है; जब ये एक-दूसरे से दूर हो जाती है, तब कशमकश पैदा होती है, और ऐसे संकट सामने आते है जो दिमाग और रूह को तकलीफ पहुंचाते है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०६-१०७

शिक्षा

पुराना जमाना अब लद चुका, और हर स्त्री और पुरुष को शारीरिक रूप से सुन्दर और स्वस्थ, तथा मानसिक रूप से चुस्त होकर रचनात्मक, उत्पादनात्मक काम करना होगा। जमाना जल्द ही आ रहा है, जबकि लोग उस व्यक्ति को सहन नहीं करेंगे जो काम नही करता। इसलिए शिक्षा की स्वतः सिद्ध वांछनीयता के अतिरिक्त, लोगों को आत्मरक्षा की भावना से भी—चाहे आत्मरक्षा एक राष्ट्र के मुकाबले करनी हो और चाहे अंदरूनी तौर पर शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० १६२

मैं ऊंची शिक्षा का विरोधी नही हूं, किन्तु मैं चाहता हूं कि शारीरिक और बौद्धिक श्रम के बीच संतुलन हो। इन दोनों चीजों मे जितना समन्वय होगा, उतना ही आदमी जीवन के निकट होगा, और उतना ही उसका जीवन सर्वांगपूर्ण होगा।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० २११

विद्यार्थी का पहला काम है—अपने दिमाग और जिस्म को तालीम देना, और उन्हे विचार, समझदारी और काम के लिए समुचित साधन बनाना। तालीम के बिना वह न तो पुरअसर तरीके से सोच सकता है, न काम कर सकता है। लेकिन तालीम सिर्फ अच्छी-भली सलाह से नही होती। उसके लिए किसी हद

तक काम मे लगना पड़ता है। सामान्य स्थितियों में सैद्धांतिक शिक्षा के मुकाबले, उस काम का दर्जा दोयम होना चाहिए; लेकिन उसका बहिष्कार नही किया जा सकता, नही तो शिक्षा अधूरी रह जाएगी।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ४५०

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के मन को मुक्त करना है, न कि उसे बांधे हुए चौखटों में बंद करना है।

—नेहरू और नई पीढ़ी . हरिदत्त शर्मा पृ० ८२

श्रमिक संगठन

ज्यादा अच्छा यह है कि श्रमिक वर्ग उचित रूप में संगठित हो, उसे संगठन की स्वतंत्रता प्राप्त हो, उसे अपने हितों की रक्षा की स्वतंत्रता हो। यह स्थिति श्लाघनीय नही कि मजदूर असंगठित रहें, अपनी रक्षा न कर सकें और अपना काम ठीक से पूरा न कर सके। इसलिए हमने उन्हें संगठित होने के लिए प्रोत्साहन दिया है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड) पृ० ८७

संप्रदायवाद

मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि मैं किस तरह का हिन्दुस्तान बनाना पसंद करूंगा। उसमे सम्प्रदाय वाद या मताग्रही लोगों के लिए जगह नही होगी। बेशक, सम्प्रदायवाद के साथ बेरहमी से जूझना और उसे दबाना होगा। लेकिन दरअसल मैं नही सोचता कि उसकी इतनी ताकत है जितनी बताई जाती है। यह आज दानव हो सकता है, पर उसके पैर मिट्टी के है। वह मुख्य रूप से क्रोध और आवेग की उपज है, और जब हम फिर से होश-हवास में आ जाएंगे तो वह शून्य मे खो

जाएगा। एक कल्पना है, जिसका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है, इसलिए वह टिक नहीं सकती।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० २१९

सम्प्रदायवाद पवित्र प्रस्तावों से या एकता की लगातार बातचीत से नहीं जा सकता। अगर आप इसकी जांच करेंगे तो आपको पता चलेगा, कि इसके मूल में बुद्धिजीवियों की रोटी और बड़ी नौकरियों को पाने की इच्छा है। इसका जनता से कोई सम्बन्ध नहीं है, और जनता को भ्रमित और गुमराह कर दिया जाता है। और उसकी असली मुसीबतों को भुलवा दिया जाता है। अगर आप अपना ध्यान आर्थिक मामलों पर, जोकि अपना महत्त्व रखते हैं, केन्द्रित करें तो आप अपने-आप उन्हें सम्प्रदायवाद और झूठी धार्मिक मनोवृत्ति से दूर कर देंगे।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० २५४

संरक्षण

इतना कहने से कोई लाभ नहीं होगा—कि आदिम जाति के हर आदमी को एक-एक वोट दे दिया है, और हमारा कर्तव्य पूरा हो गया है। तो क्या सैकड़ों-हजारों सालों तक अपना कर्त्तव्य पूरा न करके, हम समझते हैं कि हमने उन्हें एक वोट देकर अपनी आगे तक की भी जवाबदेही पूरी कर डाली है? इसलिए हमें हमेशा उन लोगों का स्तर उठाने के बारे में सोचना होगा, जो अब तक अवसरों से वंचित रहे हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसा नहीं सोचता कि स्थान सुरक्षित करना, या इसी तरह के दूसरे राजनीतिक काम करना ही सबसे अच्छा तरीका है। मेरे खयाल से इसका सबसे अच्छा, बुनियादी और मौलिक तरीका—उन लोगों की तेजी से आर्थिक और शिक्षा-सम्बन्धी

उन्नति करना है। फिर वे अपने-आप अपने पैरों पर खड़े हो जाएंगे।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २८

चाहे आप किसी व्यक्ति की बात लें, या समूह या सम्प्रदाय की, कुछ दूसरों से ज्यादा देने में एक बहुत बड़ा खतरा यह रहता है— कि उसमें एक ताकत की झूठी भावना घर कर जाती है, जो असल में उसमें होती नहीं है। ये चीजें बाहरी होती हैं, और जब अचानक उससे ले ली जाती हैं तो वह सम्प्रदाय या वर्ग कमजोर पड़ जाता है।—स्थानों का संरक्षण या इसी तरह की दूसरी चीजें—बाहरी सहारा देना—कह सकते हैं कि कभी-कभी तो पिछड़े वर्गों के लिए सहायक हो सकता है, लेकिन उसमें एक झूठे राजनीतिक सम्बन्ध या झूठी ताकत का गुमान हो जाता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २८-२९

संविधान

हमने एक संविधान बनाया, और उसका हमें पालन करना चाहिए। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि उस संविधान का हर हिस्सा, हर अध्याय पवित्र है कि वह कभी बदला नहीं जा सकता—भले ही मुल्क या राष्ट्र की जरूरत कैसी भी हो। यदि ऐसा समझा गया कि संविधान का कोई भाग राष्ट्र की उन्नति के मार्ग में बाधक होता है, तो निश्चय ही इसे बदला जा सकता है। यों ही हल्के ढंग से नहीं, बल्कि पूरे विचार-विमर्श के बाद।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०५

संस्कृत

दुनिया की शायद ही किसी और भाषा ने किसी जाति

लचीली कि इनके साथ अपना मेल बिठा सके। हिन्दुस्तान में जिस घड़ी हमने अपनी संस्कृति को विदेशी हमले से बचाने के लिए अलचीला बनाया, उसी घडी हमने उसके स्वाभाविक विकास को रोक दिया—और धीरे-धीरे उसे लकवा मारता गया और उसे मौत के नजदीक ले गया।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० ३७५-३७६

संस्कृति का मतलब है—मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता। इसका मतलब दिमाग को तंग रखना, या आदमी या मुल्क की भावना को सीमित करना कभी नही होता।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६७

संस्कृति जो लाजमी तौर पर अच्छी चीज है, गलत नजरिया रखने से केवल गतिहीन ही नहीं, वल्कि आक्रामक और ऐसी चीज बन जाती है—जिससे झगड़ा-फसाद और नफरत पैदा होती है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३४

संस्कृति बहुत-सी चीजों पर आधारित है। अगर हम उस साचे को लें, जिसमें कोई लोग या राष्ट्र शुरू की अवस्था में ढले हों—तो यह पाएंगे कि इस पर भूगोल, जलवायु और हर तरह की दूसरी चीजों का प्रभाव पडा है। भारत की संस्कृति भी, जैसाकि हम अपने साहित्य मे देखते हैं, बहुत-सी चीजों के अलावा हिमालय, वनों और महान् नदियों से बहुत अधिक प्रभावित है। यहां की मिट्टी में से यह स्वाभाविक रूप से उगी है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३१

संस्कृति मानव मन की उपज है।

—यूनेस्को सिम्पोजियम (नई दिल्ली २०/१२/१९५१)

सत्य

कोई इंसान या कोई मुल्क कीचड़ में से होकर अपने को ऊंचा नहीं करता। घुटने के बल चलकर और सिर झुकाकर हम आगे नहीं जाना चाहते। हम तनकर शान से, जो सच बात है उसको कहकर, और सच्चाई के रास्ते पर चलकर आगे बढ़ें तो हमारी ताकत भी बढ़ेगी, और दुनिया में हमारी इज्जत भी बढ़ेगी। उस वक्त किसी दुश्मन की हिम्मत भी नहीं होगी कि हमारा सामना करे।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ११

सचाई को बार-बार दोहराना कोई अच्छी बात नहीं, क्योंकि उसमें नागवार बातों की नागवार याददिहानी होती है।

जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड २), पृ० ६

सभ्यता

साम्राज्यों की तरह सभ्यताओं का पतन भी—बाहरी दुश्मनों की ताकत की वजह से इतना नहीं होता, जितना कि अन्दरूनी कमजोरी और सड़न की वजह से।

—विश्व-इतिहास की झलक (भाग १), पृ० २५५

समझ

आज दुनिया में जिस चीज की सबसे ज्यादा कमी है, वह शायद राष्ट्रों और लोगों की आपस में, एक-दूसरे के बारे में समझ और प्रशंसा के भाव की है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १६०

जो व्यक्ति दूसरे के विचारों को नहीं समझ पाता, तो उसका दिमाग और संस्कृति उतनी ही सीमा तक सीमित है; क्योंकि कुछ इने-गिने असाधारण मनुष्यों को [illegible], शायद ही

ऐसा कोई व्यक्ति हो, जो पूरा-पूरा ज्ञान और बुद्धि रखता हो। दूसरे पक्ष या अन्य समूह के पास भी कुछ-न-कुछ ज्ञान और बुद्धि हो सकती है, और अगर हम अपना दिमाग उसके लिए बन्द कर देंगे, तो हम केवल अपने आपको उससे वंचित ही न रखेंगे, बल्कि ऐसा दिमागी रवैया बना लेंगे—जो मेरे खयाल से सुसंस्कृत मनुष्य के लिए अनुचित है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३३

हमें अपनी आंख और कान पूरी तरह खोले रखने चाहिए। हम अपने विचारों को उदार और लचीला रखें, और ग्रहणशील रहें।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १८७

समझौता

आप समझौते के बिना कुछ नहीं कर सकते, किन्तु एक समझौता गलत समझौता है—यदि वह इस अर्थ में अवसरवादी है कि इसका उद्देश्य सत्य नहीं है।

—संविधान-सभा में भाषण (८-३-१९४९)

जीवन सदैव समझौते के लिए विवश करता है।

—आत्मकथा से

समन्वय

पुराने जमाने में, समन्वय के लिए यहां एक भीतरी प्रेरणा रही है, और हमारी तहजीब और कौम के विकास का आधार—खासकर हिन्दुस्तान का—फिलसफियाना रुख रहा है। विदेशी तत्त्वों का हर हमला इस संस्कृति के लिए एक चुनौती था, और उसका सामना इसने हर बार एक नये समन्वय के जरिये, उन्हें अपने में जज्ब करके किया है। इस तरीके से उसका काया-

कल्प भी होता रहा है; और अगरचे पृष्ठभूमि वही रही है और बुनियादी बातों मे कोई खास तवदीली नही हुई है—इस समन्वय के कारण संस्कृति के नये-नये फूल खिले है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १००

भारत एक अजीव मुल्क है, जिसकी अपनी एक विशेषता है—समन्वय और दूसरों को अपने में पचा लेना। जव इस समन्वय की क्षमता कम हो गई तो भारत कमजोर पड़ गया। भारत कई सौ साल तक कमजोर रहा, क्योंकि यह वन्द मुल्क वन गया—और इसने वाहर की ओर देखना वन्द कर दिया। पुराने जमाने में जव भारत वहुत गतिशील था, तो भारतीय अपने धर्म, भापा, संस्कृति, आदतों, कला और पुरातत्व को लेकर समूचे दक्षिण-पूर्व एशिया, पश्चिम एशिया, और मध्य एशिया तक जा पहुंचे। अगर आप आज गोवी के रेगिस्तान में जाएं, तो आपको तुरहन शहर में भारतीय संस्कृति, कला, भारतीय पुरातत्व के प्रमाण फैले दिखाई देंगे। वास्तव में संस्कृत भापा के सवसे प्राचीन नाट्य-ग्रन्थ भारत में नहीं, गोवी के रेगिस्तान में मिले हैं। इस भारतीय संस्कृति में, जो द्रविड़ और आर्य तत्वों के समन्वय से निकली, दोनों की शक्ति अन्तर्निहित थी, और यह क्योंकि गतिशील थी—इसलिए चारो तरफ फैल गई।

—जवाहरलाल नेहरू के भापण (प्रथम खण्ड), पृ० ४७

समय

झगड़ा करने का समय अलग होता है, और मिल-जुलकर उद्योग करने का अलग। काम करने का समय अलग होता है, और खेल-कूद का अलग। आज न झगड़ा करने का समय है, न वहुत खेल-कूद का।

—जवाहरलाल नेहरू के भापण (प्रथम खण्ड), पृ० ६

समस्या

भारत में अगर हम अपने देश की भोजन, वस्त्र, मकान आदि की बुनियादी समस्याओं को हल नही करते, तो हम चाहे अपने को पूंजीवादी कहते हों या समाजवादी, या साम्यवादी या कुछ और, हम अलग कर दिए जाएंगे—और हमारी जगह पर कोई दूसरा आएगा और उन्हें हल करने की कोशिश करेगा।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ८६

समाज

असमानता और अन्याय, अथवा एक वर्ग या समूह द्वारा दूसरे के शोषण के आधार पर किसी भी निर्दोष और स्थायी समाज का निर्माण नही किया जा सकता।

—विश्व-इतिहास की झलक

समाज असंख्य इन्सानों से बना एक जीवित ततु है। अगर उसका कोई अंश बीमार हो, या इन्सानो की कोई जमात मुसीबत या भुखमरी की हालत मे रहती हो—तो क्या वह खुशहाल हो सकता है? अगर शरीर के अवयवों को लकवा मार गया है, तो दिल या दिमाग कब तक सही-सलामत रह सकेंगे?

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० २४२

समाजवाद

जिन्दगी के मुतल्लिक मेरा नजरिया आम तौर पर एक समाजवादी का है, और मैं भारत में और दुनिया में समाजवादी व्यवस्था को कायम होता देखना चाहूंगा। मैं नही जानता कि जब दुनिया पूरी तरह मे निर्दोष हो जाय तो क्या होगा,

और मैं इसकी वहुत ज्यादा परवाह भी नहीं करता। यह मसला आज नही खड़ा होता। अभी करने के लिए वहुत काफी काम है और यही हमारे लिए वहुत है। दुनिया निर्दोष हो जाएगी, या कि आज जैसी है उससे वहुत वेहतर हो जायगी—इसका जवाव देने का खतरा मैं नही उठाऊंगा। लेकिन चूंकि मैं उम्मीद और भरोसा करता हूं कि इसको वेहतर वनाने के लिए कुछ किया जा सकता है, मैं काम किए जाता हू।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ३११

नौजवानों को पुरानी लीक का गुलाम नहीं वनना चाहिए, वल्कि पुराने रीति-रिवाजों, परम्पराओं और सरकार की ताकत को तोड़ना चाहिए। यह कहना गलत है कि समाजवादी विचार-धारा हिन्दू-धर्म या इस्लाम के खिलाफ है। समाजवादी विचारों को कुचलने की तमाम कोशिशों के वावजूद, वे इसलिए तेजी के साथ फैलते जा रहे है—कि समाज कितनी ही ऐसी सामाजिक और आर्थिक वुराइयों का शिकार है, जिन्हें फौरन दूर करने की जरूरत है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० २

मेरा विश्वास है कि विश्व-समस्याओं की, और हिन्दुस्तान की समस्याओं को हल करने की कुंजी समाजवाद के पास है; और जव मैं इस शब्द का प्रयोग करता हूं तो तो अस्पष्ट मानवतावादी रूप से नहीं, वल्कि वैज्ञानिक और आर्थिक रूप से करता हूं। जो भी हो, समाजवाद आर्थिक सिद्धान्त से भी कुछ वडी वात है, यह एक जीवन-दर्शन है, और इस रूप में मुझे प्रभावित करता है। समाजवाद के सिवा गरीबी, व्यापक, वेकारी, अध.पतन, और भारतीय जनता की गुलामी—को खत्म करने का दूसरा कोई रास्ता मुझे नजर नही आता। इसलिए हमारे राजनैतिक और सामाजिक ढांचे मे वहुत वड़े और क्रांति-

कारी परिवर्तन की – जमीन और उद्योग-धन्धों में निहित-स्वार्थो, और भारतीय रजवाड़ों की सामन्ती और स्वेच्छाचारी व्यवस्था को खत्म करना जरूरी है। इसका मतलव है—सीमित अर्थ मे व्यक्तिगत सम्पत्ति का खात्मा, और वर्तमान लाभ-प्रणाली को सहयोग-सेवा के ऊंचे आदर्श में वदलना।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १७६

वैज्ञानिक समाजवाद को मार्क्सवाद कहा जा सकता है। व्रिटिश सोशलिस्ट पार्टी, जर्मन-डेमोक्रेट्स, और अन्य महादेशीय समाजवादी इस अर्थ मे मार्क्सवादी हैं—कि वे आशा करते हैं कि सारी वातें नियतिवादी प्रणाली से होगी, जवकि वे सामाजिक पतन के निष्क्रिय दर्शक वने रहते हैं। दूसरी ओर, साम्यवादियों का विचार है कि पतन की ओर ऐसे वढ़ाव को एक धक्का लगना चाहिए। यह कहना मुश्किल है कि समाजवादी कौन है। ऐसा माना जाता है कि पूर्ण जनतन्त्र कभी नही हासिल किया जा सकता। साम्यवादियों का विश्वास है कि जनतन्त्र की असफलता का कारण स्वयं जनतन्त्रवादी नही है, वल्कि उसका कारण है अ-जनतान्त्रिक तरीकों से निहित स्वार्थो के द्वारा उसका विरोध। जर्मन सोशल-डेमोक्रेट्स अपनी अजहद कमजोरी की वजह से नष्ट हो गए। आज के यूरोप मे सोशल-डेमोक्रेसी के लिए कोई जगह नही है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० २१५

समाजवाद और पूंजीवाद विरोधी प्रणालियां या सिद्धान्त हैं—जिनका एक-दूसरे से संघर्ष है। समाजवाद विकास है, अगर इजाजत हो तो मैं कहूं कि पूंजीवाद का अनिवार्य विकास है। यह सवाल संघर्ष का उतना नही है, वल्कि एक चरण से दूसरे में विकास का है। पूंजीवाद समाज में वड़ा जरूरी काम करता है। पिछली सदी से या इससे भी ज्यादा अर्से से उसने दुनिया

की दौलत वढ़ाने में वड़ी मदद की है। इसने अपना पूरा काम कर लिया है, और अब यह अधिक विकास के लिए खतरा बन गया है। इसलिए अब दूसरा कदम बंटवारे का सवाल है, जिसे समाजवाद हल करना चाहता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३२१

समाजवादी नजरिये का एक और नतीजा यह है—कि हमें उन सारे रिवाजों को बदल देना चाहिए, जिनमें जन्म या जाति की बुनियाद पर अधिकार मिलते हैं। हमें सारे परोपजीवियों और आरामतलबों को निकाल फेंकना चाहिए, जिससे जिन लोगों को जिन्दगी की अच्छी चीजें नहीं मिलती हैं—वे उन्हें पा सकें। गरीबी और अभाव आर्थिक जरूरतें नही है। दुनिया और हमारा मुल्क, जनता को ऊंचा मानदण्ड प्राप्त करने के लिए काफी पैदा करता है (या काफी पैदा कर सकता है), लेकिन दुर्भाग्य से, अच्छी चीजें चंद लोग हड़प लेते हैं और करोड़ों लोग अभाव की जिन्दगी जीते हैं। हिन्दुस्तान मे जहा आए दिन अकाल पडते रहते है, अकालो का कारण खाने की कमी नही है, वल्कि जनता मे पैसे की तंगी है—जिससे खाना खरीद सकें।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३६५

सिर्फ कानून बनाने से समाजवाद नही आएगा। हमें समाज का निर्माण करना होगा। अगर हम समाजवाद चाहते हैं, तो हमें मनुष्यों का निर्माण करना होगा।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ५१३

समाजवादी व्यवस्था

मैं भारत में समाजवादी समाज चाहता हूं। मैं सब कुछ अपने लिए ही झपट लेने की इस समाज-व्यवस्था से बाहर

निकलना चाहता हूं। लेकिन सिर्फ प्रस्ताव पास कर देने या नारे लगा देने से यह मुझे मिलने वाला नही है। मै चाहता हूं कि भारत इस दिशा में बढ़े, और असंख्य लोगों को अपने साथ लेकर चले।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १३३

व्यक्तिगत रूप से मै सोचता हूं कि समाज मे संग्रह-प्रवृत्ति, जोकि पूजीवाद की बुनियाद है, आधुनिक युग मे उपयुक्त नही रही। हमे आधुनिक प्रवृत्तियों और परिस्थितियो के अनुसार कोई बेहतर समाज-व्यवस्था निकालनी चाहिए, जिसमें प्रतियोगिता की बजाय अधिकाधिक सहकार हो।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५३

समाजवादी राज्य में, व्यवसाय राज्य का मामला हो जाता है—और राज्य को इस बात की फिक्र होती है कि खरीदकर जो चाहता है, उसे बिना मुनाफे के वह माल मुहैया किया जाए। समाजवादी राज्य खुद ही उत्पादन करता है और आत्म-निर्भर होता है, जिसके लिए उत्पादन का काम बांटकर अलग-अलग मुनासिब इलाकों को दे दिया जाता है, फिर उपयोग के लिए उत्पादन सामग्री की अदला-बदली कर ली जाती है। लेकिन चूकि वहा मुनाफे का कभी सवाल ही नही उठता, इसलिए वहा शोषण भी नही होता।

— जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० २६०

समान अवसर

आप सब आदमियों को बराबर नही कर सकते, लेकिन हम सबको कम-से-कम समान अवसर तो दे सकते है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०३

हमारे देश में थोड़े-से आदमी बड़े शहरो में रहते है, उनमें

से भी वहुत कम अंग्रेजी पढ़े हुए हैं। देश के वहुत ज्यादा लोग तो किसान हैं—जो गाव में रहते हैं, या कारखानों में जाकर मजदूरी करते है। अगर थोड़े-से शहर में रहनेवाले आदमियों को स्वराज से फायदा हुआ और किसानों की हालत वही रही—तो वह देश का स्वराज तो नहीं हुआ। वह तो अमीरों का स्वराज हुआ। हम आज तक अपने देश में देखते है कि एक तरफ थोड़े-से आदमी वहुत अमीर हैं—चाहे वह जमीदार हों या वड़े कारखानों के मालिक हों, या महाजन या वकील—और दूसरी तरफ वहुत सारे गरीव आदमी। एक तरफ कुछ लोग वड़े-वड़े महलों में रहते हैं, दूसरी तरफ लोगों के पास मिट्टी की झोंपडियां भी कभी-कभी नही होती, और खाने को मुश्किल से मिलता है। यह वात तो इंसाफ के खिलाफ मालूम होती है। जो लोग असल में मेहनत करते हैं, उनको उसका फल वहुत कम मिलता है। और थोडे लोग, वगैर कोई मेहनत किए, सूद की आमदनी से या अपनी वाप-दादा की कमाई पर आराम-ऐश करते हैं। इंसाफ तो तव हो, जव देश के रहने वालों को वरावर का मौका-तरक्की करने का और कमाने का हो; जो जितनी मेहनत करे, उतना ही उसका फल पाए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३५), पृ० ३६७

समानता

इस मुल्क में ऊंच-नीच और सामाजिक असमानता नही रह सकती। इनसे छुटकारा पाना ही होगा। हमे एक नई सामाजिक व्यवस्था वनानी होगी, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति के लिए पूरे विकास की संभावना हो, शोषण न हो, और जिसमें न केवल राजनीतिक वल्कि आर्थिक जनतन्त्र भी हो—जिसका मतलव है आर्थिक समानता—जिसके विना राजनीतिक जनतन्त्र सिर्फ एक

धोखा होगा। जब कोई भूखा हो और भूखों मर रहा हो—तो उसे वोट देने का अधिकार है या नहीं, इससे क्या फर्क पड़ता है ?

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० २३७-२३८

लोगों के अलग-अलग गुट बनाने का विचार न तो मेरी समझ मे आता है, न उसे मैं अच्छा ही समझता हूं। हमें इन सारे अवरोधों को हटा देना चाहिए, जिससे हिन्दुस्तान मे गुट न रहे, जो अपने काम, आर्थिक परिस्थिति या नाम से किसी हीन गुट का समझा जाए। इसलिए हमारे सामने जो समस्या है, वह उस आदमी या उस आदमी को ऊंचा उठाने की सीमित समस्या नहीं है, बल्कि हिन्दुस्तान में समता स्थापित करने की है, जिससे हिन्दुस्तान के हरएक आदमी को—वह चाहे मर्द हो या औरत—उन्नति का पूरा अवसर मिले।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ४५९

सहयोग

यदि हम अपने देश और अपनी जनता के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहते, तो आज हमें एक-दूसरे से सहयोग करना चाहिए और मिल-जुलकर काम करना चाहिए, और यथार्थ सद्भावना से काम करना चाहिए।

— जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६

सहिष्णुता

रूढियों या रूढिवादी दिमाग का गुलाम बना हुआ कोई भी मुल्क तरक्की नहीं कर सकता, और दु:ख की बात यह है कि हमारा मुल्क और हमारे देशवासी गैरमामूली तौर से रूढि-वादी और तंगदिल बन गए हैं। दिल का खुलापन तो अच्छी बात है, लेकिन जरूरत उदारता के भावुकता से भरे इजहार

की नहीं, वल्कि तर्कसंगत सहिष्णुता की है। मजहब पर जिस रूप में हिंदुस्तान में अमल किया जाता है, उससे हमारे लिए वह अजनवी-सा हो गया है, और उसने न सिर्फ हमारी कमर ही तोड़ दी है, वल्कि हमारा दम घोंटकर हमारे मन और विचारों की सारी मौलिकता खत्म कर दी है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड २), पृ० २२७

सांप्रदायिकता

अतीत में, दुर्भाग्यवश—हमारे यहां वड़े पैमाने पर सांप्रदायिक झगड़े हुए हैं। भविष्य में उन्हें वर्दाश्त न किया जायेगा। जहां तक भारत-सरकार का संवंध है, वह प्रत्येक सांप्रदायिक उत्पात का दृढ़ता से दमन करेगी। वह प्रत्येक भारती को वरावरी के दर्जे का समझेगी, और उसे उन सभी अधिकारों को दिलाने का उद्योग करेगी—जो किसी दूसरे को प्राप्त हैं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०

इस देश में जो चीज एक को दूसरे से अलग करे, वह एक दीवार है। हमें उसको हटाना है। हमें जो यहा साम्प्रदायिकता यानि फिरकापरस्ती है, इसको हटाना है, क्योंकि देश को वह दुर्वल करती है, देश के महान् परिवार को तोड़ती है,एक-दूसरे को दुश्मन वनाती है और हमें नीचा करती है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५३

जिस जहर ने हिन्दुस्तान को इतना कमजोर किया, उसको अपने पास न आने दे। इस जहर ने एक तरफ तो वढ़कर हिन्दुस्तान के टुकडे किए, उस जहर ने फिर इस हिन्दुस्तान में फैलकर हमें कमजोर किया, और एक ऐसा धक्का लगाया

और इतना जलील किया—कि दुनिया के सामने हमें सिर झुकाना पड़ा।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १०-११

न तो मैं मंदिरों के पक्ष में हूं, न मस्जिदों के। मैं उन्हें भी पसन्द नही करता, जो उन्हें गिराना चाहते है। मैं अपने मुल्क के लिए आजादी चाहता हूं, और मै चाहता हूं कि लोग जाति, धर्म और संप्रदाय को भूलकर अपनी आजादी की लड़ाई लड़ें। मुल्क के सामने जो सामान्य समस्या है, वह सांप्रदायिक नही है। आजादी के बहुत बड़े मसले के मुकाबले, सांप्रदायिक समस्या बहुत छोटी चीज है। आजादी का मसला सभी संप्रदायों का मसला है। सांप्रदायिक नेताओं से जब यह पूछा गया—कि विधान-सभाओं मे कुछ ज्यादा सीटें मिल जाने से अवाम के मसले, बेरोजगारी के मसले, गरीबी के मसले कैसे हल हो जाएंगे, तो वे मुझे कोई जवाब नहीं दे सके।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३२७

भाषा और साम्प्रदायिक समस्याओं के बारे में आप बहुत सुनते हैं, लेकिन मुख्य समस्याएं आर्थिक हैं।

साम्प्रदायिक समस्याओं से निबटने का साफ रास्ता यह है कि आर्थिक मुद्दों को सामने आने दिया जाए, ताकि साम्प्रदायिक मसलों की ओर से ध्यान हट जाए। जब आर्थिक मुद्दों को सामने आने दिया जाएगा, तो साम्प्रदायिक मसलों का मुकाबला करना और उन्हे हल करना जरूरी हो जाएगा।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १०७

मजहबी झगड़े मजहबी तो होने नहीं, धार्मिक तो होते नही—वे तो धर्म का नाम लेकर सियासी होते है, राजनीतिक होते हैं।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० २५

मुझे यह देखकर हैरत होती है, कि सांप्रदायिक पागलपन से लोग इतने अंधे हो जाते हैं कि अपने हितों का भी ख्याल नही रख सकते।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (भाग १), पृ० २१५

मैं मुसलमानों के साथ गैर-मुसलमानों-जैसा सलूक करके, यानी आर्थिक मुद्दों पर उनसे बातें करके इन्हें अपनाना चाहता हूं। ईमानदारी से मेरा ख्याल यह है कि मुसलमान कट्टर है, और पुरानी रुकावटों को तोड़कर बाहर निकलने में कठिनाई महसूस करता है; और हिन्दू स्वभाव से लचीला है। मुसलमान को जब नये विचार पर विश्वास हो जाएगा, तो वह उसे मंजूर कर लेगा। मैं बड़े-बड़े लीडरों से नही, आम आदमी से अपील करूंगा, जिनके बीच माली असलियत फैलकर रहेगी।

हिंदुस्तान के लोगों के बारे में मैं हिंदू, मुसलमान और सिख होने के नाते नही सोचता सोच भी नही सकता। मैं किसी समुदाय को, उसका समर्थन पाने के लिए रिश्वत नही देना चाहता—कभी दूंगा भी नही।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० २६३

यह भी महत्त्वपूर्ण है कि सभी प्रधान सांप्रदायिक नेता—वे चाहे हिंदू हों, या मुसलमान हों, या और कोई हों—सांप्रदायिक सवाल से बिलकुल अलग, राजनैतिक प्रतिक्रियावादी है। यह सोचकर बड़ा अफसोस होता है कि किस तरह उन लोगों ने महत्त्वपूर्ण विषयों में बरतानवी सरकार का साथ दिया है, किस तरह उन लोगों ने नागरिक अधिकार छीनने का समर्थन किया है। यातनाओं से भरे इन बरसों में किस तरह उन लोगों ने आजादी के बड़े उद्देश्य को भुलाकर अपने गुट के लिए छोटे-मोटे फायदे चाहे हैं। उन लोगों के साथ किसी तरह

का सहयोग नहीं हो सकता, क्योंकि उसका मतलब होगा—प्रतिक्रिया के साथ सहयोग करना।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १८५

वह बड़ा जहर—जिसने आकर हिन्दुस्तान को तबाह किया—हिन्दुस्तान के टुकड़े किए, और हिन्दुस्तान में फैला साम्प्रदायिकता का जहर—फिरकेवाराना जहर, कम्युनलिज्म का जहर—इस मुल्क में न बढ़ने दें। मैं देखता हूं, फिर से कुछ गलत लोग सिर उठा रहे हैं। मैं देख रहा हूं, फिर से उनकी आवाजें उठ रही हैं, जोकि जनता को धोखा दे सकती हैं। तो मैं चाहता हूं, आप इस पर सोचें और समझें; क्योंकि यह खतरनाक बात है।—लेकिन जब मैं देखता हूं, इस तरह के गलत रास्ते दिखाते लोगों को, गलत खयाल पैदा करते, तंग खयाली पैदा करते और इस तरह की साम्प्रदायिकता को फैलाते तब मुझे दु:ख होता है, रंज होता है और शक होता है—कि हमारे बाज भाई और बहन कहां भूले-भटके फिरते हैं। वे कहते हैं कि भारत को आगे बढ़ाएंगे, लेकिन वे भारत की जड़ खोदते हैं और भारत की शान पर धब्बा डालते हैं।

लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १०

साम्प्रदायिकता एक पिछड़े राष्ट्र का चिह्न या निशानी है, आधुनिक युग का नहीं। लोग अपना धर्म या मजहब रखते हैं, और उस पर मजबूती से डटे रहने का उन्हें अधिकार है। लेकिन राजनीति में धर्म या मजहब को लाना और देश को तोड़ना वैसा ही है, जैसाकि तीन सौ या चार सौ वर्ष पहले यूरोप में हुआ था। भारत में हमें इस चीज से अपने आपको दूर रखना होगा।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ५६

सांप्रदायिक निर्णय और जनतंत्र साथ-साथ नहीं चल सकते। इसकी बुनियाद ही जनतंत्र का नकार है, और इसे लाजिमी तौर पर आजादी की राह का—और सामाजिक और आर्थिक मसलों पर गौर करने के सामने बहुत रुकावट होना चाहिए; जबकि हिंदुस्तान में हमारे सामने सामाजिक और आर्थिक मसले ही असली मसले हैं—जो हमारे मुकाबले में खड़े हैं। मैं साफ तौर से, आजादी और सामाजिक परिवर्तनों की बात पर विचार करनेवाले एक भी ऐसे आदमी की कल्पना नहीं कर सकता—जो सांप्रदायिक निर्णय को स्वीकार करे या उसका समर्थन करे। यह मेरे लिए बड़े अचरज और अफसोस की बात रही है, कि हमारे कितने ही मुसलमान दोस्त और साथी—जो हिंदुस्तान की आजादी के हामी रहे हैं, इस तरह इस तबाही लाने वाले निर्णय का समर्थन कर रहे हैं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ३४४

सांप्रदायिक मसला मजहबी मसला नहीं है। मजहब से उसका लगभग कोई सरोकार नहीं है। कुछ हद तक तो यह माली मसला है, और कुछ हद तक—सियासी मायने में मध्यम-वर्ग का मसला है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ८१

साम्प्रदायिक समस्या बुनियादी तौर पर आर्थिक कारणों से नहीं पैदा हुई है। उसके पीछे आर्थिक कारण तो हैं, जो अक्सर इस पर असर भी डालते हैं, लेकिन इसकी बहुत ज्यादा वजह राजनीतिक है। मैं आपको यह भी याद दिलाना चाहता हूं—कि इसकी वजह मजहबी भी नहीं है। मजहबी दुश्मनी और मुखालिफत का साम्प्रदायिक सवाल से बहुत कम ताल्लुक है। इस मायने में इसका कुछ ताल्लुक साम्प्रदायिक सवाल से है कि इसमें मजहबी मुखालिफत की थोड़ी पृष्ठभूमि है,

जिसके चलते गुजरे वक्त में कभी जुलूसों वगैरह को लेकर झगड़ों को बढ़ावा दिया है, और कभी सिर तुड़वाये हैं। लेकिन मौजूदा साम्प्रदायिक सवाल मजहबी नहीं है, गोकि कभी-कभी यह मजहबी जज्बात को बढ़ावा देता है "जिससे फसाद उठ खड़े होते हैं।

– जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ६४

सारा इतिहास मजहबी अत्याचारों और मजहबी युद्धों से भरा पड़ा है; और मजहब व ईश्वर के नाम पर जितना खून बहा है, उतना शायद ही किसी दूसरे नाम पर बहा होगा।

—भारतीय इतिहास की झलक (भाग १), पृ० ६८

हम भारत में सब प्रकार के साम्प्रदायिक झगड़ों को समाप्त कर दें, और एक संगठित राष्ट्र की भांति अपनी स्वतन्त्रता के प्रति हर एक खतरे का सामना करने के लिए तत्पर हो जाएं। बाहरी खतरे का अच्छी तरह सामना हम तभी कर सकते हैं, जबकि हमारे यहां भीतरी शांति और व्यवस्था हो, और राष्ट्र संगठित हो।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १५

हमें अपने दिमाग में और मुल्क के दिमाग में इस बात को बहुत साफ तरीके से रखना चाहिए, कि साम्प्रदायिकता के सवाल में मजहब और राजनीति को जगह देना बेहद खतरनाक गठजोड़ है, और इसमे और दोनों के मेल से बहुत ही भयानक और नाजायज किस्म की चीज पैदा होती है।

– जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २५

हिन्दुस्तान के लोगों को मन्दिरों और मस्जिदों के बारे में सिखलाना छोड़कर उन्हें रोटी और सामान की सीख दीजिए, और फिर देखिए कि साम्प्रदायिक सवाल पीछे खिसक गया है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १०८

साधन

राजनैतिक क्षेत्र में कोई भी कार्य व्यक्तिगत नहीं होते, बल्कि वहां पर गुटों और समूहों के द्वारा होते हैं। फिर भी मैं इस बात से आश्वस्त हूं कि कोई भी नीति, कोई भी विचार-धारा—जो मानव-व्यवहार में सत्य और चरित्र की उपेक्षा करती है, और जो घृणा तथा हिंसा का उपदेश करती है—हमें केवल गलत परिणामों की ओर ले जाती है। हमारे मन्तव्य, मुद्दे कितने भी क्यों न अच्छे हों, और हमारे लक्ष्य कितने भी ऊंचे क्यों न हों—यदि हमारे मार्ग और साधन बुरे और गन्दे हैं, तो हम कभी भी अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते।

—नेहरू और नई पीढ़ी : हरिदत्त शर्मा, पृ० १२६-१२७

सामाजिक समस्याएं

भारत का भविष्य गुड़ियों और खिलौनों से नहीं बन सकता, और अगर आप देश की आधी आबादी को—बाकी की आधी आबादी के हाथ का महज खिलौना और दूसरों के ऊपर बोझ बना देंगे, तो आप किस तरह प्रगति कर सकेंगे ? इसलिए मैं कहता हूं कि आप इस समस्या का बहादुरी से मुकाबला कीजिए, और बुराई की जड़ पर चोट कीजिए। हमारे सामने पर्दा, बाल-विवाह, और बहुत-से क्षेत्रों में महिलाओं को अधिकारों से वंचित कर देना है। आप किसी भी देश में जाइए, आपको चमकते चेहरों वाले लड़के और लड़कियां खेलते, और दिमाग और शरीर से मजबूत बनते हुए दिखाई देंगे। यहां उसी उम्र के बच्चों को पर्दे में, और करीब-करीब पिंजरों में कैद रखा जाता है, और बहुत हद तक उनकी आजादी छीन ली जाती है। जिस समय उनके शरीर और बुद्धि का विकास होना चाहिए, उनका विवाह कर दिया जाता है—और इस तरह उन्हें

कुण्ठित और जीवन-भर के लिए दुःखी वना दिया जाता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० ३५६

सामुदायिक योजनाएं

मेरे लिए ये सामुदायिक योजनाएं वहुत अहमियत रखती है। सिर्फ इनसे होने वाले या भौतिक फायदों की वजह से नही, वल्कि वहुत कुछ इस वजह से कि इनका उद्देश्य इन्सान और समुदाय का निर्माण करना है—और इन्सान को इस लायक वनाना है कि वह अपने गांव, और व्यापक अर्थ मे समूचे भारत का निर्माण कर सके।

— जवाहरलाल नेहरू के भापण (प्रथम खण्ड), पृ० १००

साम्यवाद और फासीवाद

फासीवाद कट्टर राष्ट्रवादी है। साम्यवाद अन्तर्राष्ट्रीय है। फासीवाद तो सचमुच अन्तर्राष्ट्रीयता का विरोध करता है। वह तो राज्य को देवता वना देता है, जिसकी वेदी पर व्यक्ति की स्वतन्त्रता और हकों की कुर्वानी जरूरी है। दूसरे सारे देश गैर है, और दुश्मन के वरावर है।

—भारतीय इतिहास की झलक (भाग २), पृ० १४६

साम्यवाद और फासीवाद—दोनों ही लोकतन्त्र के विरोधी है और उसकी वुराई करते हैं, हालांकि हरेक इसके लिए विल्कुल अलग-अलग दलीलें देता है।

— भारतीय इतिहास की झलक (भाग २), पृ० ११४६

साम्यवादी

साम्यवादी अगर कोई ऐसा काम करते हैं, जिससे हमें मदद मिल जाए, तो हम भी उनके साथ सहयोग करने को तैयार हैं। अगर नही तो हमारा रास्ता अलग है। इसका तो सवाल ही

नही उठता कि यहां या और कहीं—हमारी नीति साम्यवादियों के हुक्म से निर्धारित हो। लेकिन साथ-ही-साथ मै यह भी नही समझ पाता कि साम्यवादियों को हम अछूतों की तरह क्यों मानें, और इसलिए उनसे दूर-दूर रहे कि कहीं ज्यादा इज्जतदार लोग नाराज न हो जाएं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० १०७

साम्यवादी दल

मैं यह कल्पना नही कर सकता कि कोई भी साम्यवादी—अगर वह ईमानदार है और अगर वह भारत के हित मे सोचता है—कैसे इस प्रकार के कामों में लग सकता है, जिनमे कि आज भारतीय साम्यवादी-दल लगा हुआ है। मै साम्यवाद से सहमत हूं या असहमत, इससे स्थिति मे कोई अन्तर नही आता। लेकिन मैं कहता हूं कि भारत के कुछ वर्गों के कार्य—उनके समाजवादी सिद्धान्त जैसे भी हों—ऐसे है, जिनका भारत की भावी भलाई से कुछ भी वास्ता नही। ये कुछ दूसरे ही विचारों पर आधारित है। मेरा विश्वास है कि वे भारत में अव्यवस्था उत्पन्न करने के निश्चित उद्देश्य पर आधारित है, जिससे कि शायद यह आशा की जाती है कि अन्त मे कुछ नई चीज निकल आए। यह एक अजीव दृष्टिकोण है, यानी भारत की चलती गाड़ी को रोकना और शायद एक या दो पीढियों तक इस बात की प्रतीक्षा करना कि कुछ नतीजा निकल आए। मेरा विश्वास है कि यह एक ऐसी चीज है, जिसे कि भारत के लोग कभी बर्दाश्त न करेंगे।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ९२-९३

साम्राज्यवाद

जब तक साम्राज्यवाद बना रहेगा—बहुत बड़ी तादाद के

लोगों को न तो शान्ति मिल सकेगी, न आजादी। जब साम्राज्यवाद और नये जमाने की उसकी नुमाइंदगी और हिमायत करने वाली सामाजिक प्रणाली को हटा दिया जाएगा, तभी एक नई व्यवस्था कायम की जा सकेगी।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खंड ७), पृ० १२५

साहस

देश कायदे और कानूनों से, और जो कागज पर लिखा जाए—उससे नहीं बनता। देश बनता है, देश की जनता की दिलेरी और हिम्मत से और काम करने की शक्ति से। कानूनदां लोग कानून लिख जाते हैं, और विधान बनाने वाले विधान बनाते हैं। लेकिन असल में इतिहास लिखा जाता है बहादुर आदमियों के हाथों से, दिलों से और दिमागों से। सवाल यह है कि आपमें और हममें कितनी हिम्मत है—इस भारत के इतिहास को अपने खून से, अपने आंसुओं से, अपनी मेहनत से और अपने दिमागों से लिखने की? अगर हममें वह है, तो विधान भी ठीक होंगे और सब ठीक होगा। अगर हममें वह ताकत और शक्ति नहीं है, हम कमजोर हैं, छोटी-छोटी बातों में पड़ते हैं और आपस में सहयोग नहीं कर सकते, तो हम निकम्मे लोग हैं। तब फिर क्या विधान हमको बचाएगा, या कागज पर लिखा और कोई कानून?

—लालकिले के प्राचीर, से (भाग १), पृ० १९-२०

पहली बात तो यह है कि असल में, लड़ने में मुझे मजा नहीं आता। लेकिन हिम्मत-भरे काम करने और जोखिम उठाने में, और खतरों का मुकाबला करने में मुझे जरूर मजा आता है; और चूंकि लड़ने में मुझे इस हिम्मत का स्वाद मिलता है, खतरे का मुकाबला करने का अनुभव होता है—इसीलिए मुझे लड़ना अच्छा लगता है। क्योंकि शान्ति जब बड़ी मेहनत के बाद

आती है, तो वह इस्तकबाल के लायक खुश और गवार होती है। लेकिन मैं अमन-पसन्द आदमी हूं, बशर्ते कि अमन का मतलब गतिहीनता और डर, और कुछ न करने की जबर्दस्त ख्वाहिश, और किसी बड़े आदर्श के लिए भी किसी तरह जोखम उठाने की अनिच्छा न हो।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ३०८

साहित्य

प्राचीन हिन्दी-साहित्य, दरबारी साहित्य कहा जा सकता है। उस समय के अधिकतर कवि और लेखक उन दरबारों को खुश करने के लिए ग्रन्थ रचा करते थे, जिनके आश्रय में वे रहते थे। अब जमाना बदल गया है। लोगों में जागृति उत्पन्न हुई है। अब साहित्य तभी प्रभावकर होगा, जब उसमें शक्ति का संचार किया जाएगा, नये-नये और समयानुकूल भाव भरे जाएंगे, और नई जान डाली जाएगी।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० २००

सिन्ध-घाटी की सभ्यता

सिन्धु घाटी की सभ्यता, जैसा भी हम उसे जान सके हैं, एक बड़ी तरक्कीयाफ्ता सभ्यता थी, और उसे इस दर्जे तक पहुंचने में हजारों साल लगे होंगे। यह काफी अचरज की बात है कि यह सभ्यता लौकिक और दुनियावी सभ्यता है, और अगरचे इसमें मजहबी अंश भी मौजूद थे—वे इस पर हावी न थे। यह भी जाहिर है कि यह सभ्यता हिन्दुस्तान के तहजीबी जमानों की पूर्व-सूचक थी।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६१

सिन्धु-घाटी की सभ्यता वाले ये लोग कौन थे और कहां से आए थे—इसका हमें अब तक पता नहीं है। यह बहुत मुमकिन

बल्कि सम्भावित है कि इसकी संस्कृति इसी देश की संस्कृति थी, और उसकी जड़ें और शाखाएं दक्खिन हिन्दुस्तान तक में मिलती है। कुछ विद्वान् इन लोगों में और दक्खिन हिन्दुस्तान के द्रविड़ों में, कौम और संस्कृति की खास तौर पर समानता पाते है। और अगर बहुत कदीम वक्त में हिन्दुस्तान में बाहरी लोग आए थे, तो इसकी तारीख मोहनजोदड़ो से हजारों बरस पुरानी है। व्यवहार के विचार से, हम उन्हें हिन्दुस्तान के ही निवासी मान सकते है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६४

सिद्धान्त

हमारे कुछ उसूल है, कुछ सिद्धान्त है—उन पर जमे रहकर हम जल्दी से आजाद हुए। और आपको ध्यान में रखना है कि हमने अपनी आजादी को कायम रखा है। आप जानते है कि आपस में मिलकर, अहिंसा से, शान्तिमय तरीको से काम करना है। मैं नही कहता कि मैं पूरे तौर पर अहिंसा पर चलने वाला आदमी हूं, या आप है। हम सब कमजोर है, फिसल जाते है, गिरते हैं। पूरे तौर से इन रास्तों पर नही चल सकते। लेकिन यह हमें याद रखना है—हम कमजोर है, पर वे सिद्धान्त जबर्दस्त है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६३

सुलह

मुझे अफसोस है कि अब तक बाज लोग धमकी की आवाज से बोलते है, डर की आवाज से बोलते है। अगर हमें दुनिया मे सुलह चाहिए—मेल चाहिए, तो एक-दूसरे को धमकी देकर—एक-दूसरे को डराकर नही। लेकिन जरा दिल मजबूत करके,

हाथ बढ़ाके दोस्ती करनी होती है, न कि धर्मकी देकर।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५४

सुसंस्कृत मन

सुसंस्कृत मन की जड़ भले ही अपने अन्दर ही हो, लेकिन उसे अपने दरवाजे और खिड़की खुली रखनी चाहिए। उसमें दूसरे को दृष्टि को पूरी तरह समझने की क्षमता अवश्य होनी चाहिए, भले ही वह उससे सहमत न हो। सहमति और असहमति का सवाल तभी उठता है, जब आप किसी भी चीज को समझते है, वरना यह आंख बन्द करके स्वीकार करना है—जिसे किसी भी चीज के बारे में सुसंस्कृत दृष्टि नही कहा जा सकता।

— जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३३

सेंसर

हिन्दुस्तान मे खबर किस तरह दबाई जाती है—इसे अखबारनवीस मुझसे ज्यादा जानते है। खबरों पर जब सीधी रोक नही होती, तब भी अप्रत्यक्ष रुकावट होती है। यह एक खतरनाक बात है, खबरों की तोड-मरोड़ से भी ज्यादा। अखबारनवीसों को इसका मुकाबला करना पड़ेगा।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (भाग ७); पृ० ४१७

स्वभाव

हिन्दुस्तान का इंसानी तबका कितना बंजर है, जिसमें अक्ल और चरित्र वाले लोग थोड़े—बहुत थोड़े ही मिलते हैं। हर रोज जब मैं अखबार पढ़ता हूं तो मायूस हो जाता हूं, और देखता हूं कि चारों तरफ कैसा ओछापन है। मैं एक उम्मीद लगाए बैठा हूं, जिसकी कोई माकूल वजह नहीं दीखती—कि

हिन्दुस्तान में बड़े-बड़े काम अंजाम दिए जा सकते हैं। लेकिन शक पैदा होने लगता है—यहां के लोगों को देखकर।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० ३६७

स्वयंसेवक

स्वयंसेवक या स्वयंसेविका का काम नारे बुलन्द करना या अपने अस्तित्व का प्रचार करना नहीं है, और न दल का ही काम अपना प्रचार करना है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० १३१

स्वराज्य

एक बार फिर मैं आपसे कहना चाहूंगा, कि स्वराज्य से राजा-महाराजाओं को कुछ नहीं मिलेगा। अपने निरंकुश पैतृक अधिकारों को तब वह फिर नहीं भोग पाएंगे। मैं एक बार फिर यह भी कह देना चाहता हूं कि आनेवाले जमाने में राजे-महाराजे रहेंगे ही नहीं। राजा-महाराजाओं की जमात इतिहास के सबक के खिलाफ है। हिन्दुस्तानी रियासतों की जनता यह फैसला कर सकती है—कि राजा-महाराजाओं को चाहती है या नहीं। मैं यही मानता हूं कि हर स्त्री और पुरुष के हक बराबर है। पैदाइश या विरासत की वजह से किसीका भी हक ज्यादा या कम नहीं हो जाता। इस जमाने में यह कहना या मानना महज बेवकूफी है—कि किसी खास तबके या शख्स के कुछ खास हक हैं, या होने चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० १८-१९

मैं मानता हूं कि जब तक मुल्क की हुकूमत में किसानों की जो हिन्दुस्तान की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा है—खासकर आवाज नहीं होती, तब तक सच्चा स्वराज्य नहीं होगा; और इसीसे मैं उस मकसद को पाने के लिए काम कर रहा हूं।

स्वराज का हर शख्स के लिए अलग मतलब है। अगर आप कोई दुकानदार है, तो इसका मतलब यह है कि आप अच्छी तरह तिजारत कर सकें। जो सिलसिला आज चल रहा है, वह नही चलना चाहिए।—अगर आप किसान है और जमीन जोतते है, तो आप चाहते हैं कि खेत आपका और आपकी अपनी ही जायदाद हो, और यह कि आपके बेदखल किए जाने की कोई नौबत आ ही न सके, और यह कि करों का और मालगुजारी के इजाफे का मसला हर रोज आपके सामने न आता रहे। तो आप लोगों में से हर एक के लिए स्वराज का यह मतलब होना चाहिए तो अगर हिन्दुस्तान में कोई किसानो के लिए स्वराज का मतलब पूछता है, तो उसे बताया जाना चाहिए कि इसका मतलब यह है—कि खेत की जमीन किसान की होनी चाहिए, और यह कि अगर अपनी ताकत को काम में लाकर किसान अपनी पंचायतें बनाते हैं, और इस तरह अपनी शक्ति बढ़ाते है—तो उनकी पचायतो को मुल्क पर हुकूमत करना चाहिए।

स्वराज्य की *यात्रा, सफर की आखिरी मंजिल नहीं है।* स्वराज्य के आने पर हमे खामोश नहीं बैठना चाहिए। स्वराज्य आने से; मुल्क आजाद होने से, कोई जिम्मेदारी खत्म नही होती। वह तो एक मुल्क की तरक्की का पहला कदम होता है। एक नई यात्रा का कदम होता है। किसी मुल्क की आजादी स्वराज्य से कभी पूरी नही होती। और जो एक जिन्दादिल कौम होती है, वह रुकती नहीं है—वह आगे बढती जाती है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६०

स्वराज्य तब पूरा होगा, जब उसकी पहुंच एक-एक के पास हो जाए, और एक-एक की आर्थिक हालत अच्छी हो जाए। तो यह सबसे बड़ा काम है—जिसमें हम लोग लगे हैं, कि हिन्दुस्तान की गरीबी को दूर करना है और बेरोजगारी

को खत्म करना है। हरएक के पास काम हो, हरएक पुरुष और स्त्री—अपने काम से देश के लिए—और अपने लिए धन पैदा करे, और इससे हमारी शक्ति बढ़े।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५४

हमें अपने देश में स्वराज लाने की भी कोशिश करनी चाहिए—पूंजीपतियों का नहीं, बल्कि गरीबों और किसानों का स्वराज। अगर स्वराज का यह मतलब हो कि अंग्रेज हिन्दुस्तान छोड़कर चले जाएं, और उनकी जगह पूंजीपति, राजे और महाराजे आ जाएं—तो किसानों की हालत कभी नहीं सुधारी जा सकती। इसलिए आपको स्वराज का आन्दोलन अपने हाथ में लेना चाहिए। आजकल के जमींदार और ताल्लुकेदार, हकीकतन मुल्क पर बोझ हैं। वे कुछ भी नहीं करते, कोई पैदावार भी नहीं करते, लेकिन वे अपने पेट खूब भरते हैं। ताल्लुकेदार और जमींदार जोंकों की तरह हैं, जो भारतीय किसानों के बदन पर हमला करते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० १७३

स्वार्थपरता

अगर हम खुदगर्जी में और नफरत में, और लड़ाई-झगड़े में पड़े—तो मुल्क गिरता है।

लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ५

हमारा राज्य

हमारा राज्य साम्प्रदायिक राज्य नहीं है, वह एक लोकतंत्रात्मक राज्य है, जिसमें प्रत्येक नागरिक के समान अधिकार हैं, सरकार इन अधिकारों की रक्षा के लिए कटिबद्ध है।

– जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०

हस्तक्षेप

मैं अधिकाधिक इस नतीजे पर पहुंचा हूं, कि जब तक हमारे अपने हितों का उनमें उलझाव न हो—अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों में जितना कम पड़ें उतना ही अच्छा है; और इसका सीधा कारण यह है—कि यह हमारी प्रतिष्ठा के अनुकूल न होगा कि हम हस्तक्षेप तो करें, लेकिन कोई प्रभाव न डाल सकें। या तो हम इतने शक्तिशाली हों कि हम प्रभाव डाल सकें, या हस्तक्षेप ही न करें। हरएक अन्तर्राष्ट्रीय मामले में टांग फंसाने के लिए हम उत्सुक नहीं।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १६२

हम किसी देश की जिन्दगी में, उसके कारबार में कोई दखल देना नहीं चाहते। हरएक देश को अधिकार है कि जिस रास्ते पर वह चलना चाहे—जो भी उसकी आर्थिक या कोई और व्यवस्था हो, जिसे वह पसंद करे—उस रास्ते पर चले।—जैसे हम इस बात को चाहते हैं कि और देशों को पूरी स्वतंत्रता हो, और आजादी हो कि वे अपने-अपने रास्ते पर चलें, वैसे ही हम अपने देश के बारे में चाहते हैं। अगर हम दूसरों के कामों में दखल देना नहीं चाहते, तो हमें यह भी बर्दाश्त नहीं है कि कोई हमारे काम में दखल दे—और हमारी आजादी में खलल डाले।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १८

हिन्दी

'हिन्दी' का मजहब से कोई सम्बन्ध नहीं, और हिन्दुस्तानी मुसलमान और ईसाई उसी तरह से हिन्दी हैं—जिस तरह कि एक हिन्दू मत का मानने वाला। अमरीका के लोग, जो सभी हिन्दुस्तानियों को 'हिन्दू' कहते हैं, बहुत गलती नहीं करते।

अगर वे 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग करें, तो उनका प्रयोग बिल्कुल ठीक होगा।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६६

हिन्दुस्तानी के लिए ठीक शब्द 'हिन्दी' होगा—चाहे हम उसे मुल्क के लिए, चाहे संस्कृति के लिए और चाहे अपनी भिन्न परम्पराओं के तारीखी सिलसिले के लिए इस्तेमाल करें। यह लफ्ज 'हिन्द' से बना है, जो हिन्दुस्तान का छोटा रूप है। अब भी हिन्दुस्तान के लिए हिन्दी शब्द का आमतौर पर प्रयोग होता है। पश्चिम एशिया के मुल्कों में हिन्दुस्तान के लिए बराबर 'हिन्दी' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है, और इन सभी जगहों में हिन्दुस्तानी को 'हिन्दी' कहते हैं।

हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ६६

हिन्दुस्तान की सही तस्वीर

हिन्दुस्तान एक खूबसूरत औरत नहीं है। नंगे किसान हिन्दुस्तान हैं। वे न तो खूबसूरत हैं, न देखने में अच्छे हैं - क्योंकि गरीबी अच्छी चीज नहीं है, वह बुरी चीज है। इसलिए जब आप 'भारतमाता' की जय कहते हैं—तो याद रखिए कि भारत क्या है, और भारत के लोग निहायत बुरी हालत में हैं - चाहे वे किसान हों, मजदूर हों, खुदरा माल बेचने वाले दूकानदार हों, और चाहे हमारे कुछ नौजवान हों।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० २०६

हिन्दुस्तानी

जब दुनिया हिल रही है, जब दुनिया में मालूम नहीं क्या मुसीबतें आएं—तब आपका, मेरा हर एक हिन्दुस्तानी का फर्ज है—कि हममें एक-दूसरे में जो भी फर्क हो, उसे मिटा डालें। लोगों में फर्क है, उन्हें रखें, अगर जी चाहे मुझसे आप लड़ें, मैं

आपसे लड़ूं; लेकिन जब हिन्दुस्तान का मामला उठता है, तो आप हिन्दुस्तानी और मैं हिन्दुस्तानी—और हिन्दुस्तान का हर एक शख्स हिन्दुस्तानी है। और अगर इस बात को कोई नहीं मानता, तो वह हिन्दुस्तानी नहीं है—वह किसी और मुल्क में जाकर रहे।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० २४

हिन्दुस्तानी विचारधारा

हिन्दुस्तानी विचारधारा हमेशा जिन्दगी के आखिरी मकसद पर जोर देती रही है। इसकी बनावट में जो आधिभौतिक अंश रहा है, उसे यह कभी नहीं भुला सकी है, और इसलिए जिन्दगी से दूसरी तौर पर इकरार करते हुए भी, इसने जिन्दगी का शिकार या गुलाम बनने से इन्कार किया है। उसने कहा है कि सही कामों में अपनी पूरी ताकत और शक्ति के साथ जरूर लगिए, लेकिन अपने को ऊपर रखिए, और अपने कामों में नतीजे के बारे में ज्यादा चिन्ता न कीजिए। इस तरह इसने जिन्दगी और काम में लगे रहते हुए भी—एक अलहदगी अख्तियार करना सिखाया है। इसने काम से मुंह मोड़ना नहीं सिखाया।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० १०९

हिंसा

हमें अपने देश को संघर्ष और जोर-जबर्दस्ती से अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ाने का विचार नहीं करना चाहिए। हमारी बहुत-सी चीजें शान्तिपूर्ण तरीके से ही हासिल हुई हैं, और मुझे ऐसा कोई कारण नहीं दिखाई देता कि हम इस तरीके को छोड़कर हिंसा का तरीका अपना लें। मुझे पूरा यकीन है कि अगर हमने

हिंसात्मक तरीके से अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों को—जो भले ही कितने भी ऊंचे हों—प्राप्त करने की कोशिश की तो हमें बहुत देर लगेगी, और उल्टा उन्हीं बुराइयों को हम बढ़ावा देंगे जिनसे कि हम लड रहे है। हिन्दुस्तान एक बड़ा देश ही नहीं है, बल्कि यहा बहुत-सी विविधता और अनेकता भी है। अगर यहां किसीने तलवार उठाई, तो यह लाजमी है कि कोई दूसरा तलवार लेकर उसका मुकाबला करने उठ खड़ा होगा। तलवार का इस तरह का टकराव, नीचे गिरकर एक निरुद्देश्य हिंसा में बदल जाएगा, और इसमें राष्ट्र की जो सीमित शक्तियां हैं, वे या तो बहुत बंट जाएंगी—या फिर बहुत दुर्बल तो हो ही जाएंगी।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० १०८

विविध

अगर आदमी के दिमाग की सर्जनात्मक क्षमता चली जाती है—और वह अधिकाधिक मशीन बनता है, तो मानवता के लिए यह यकीनन बहुत बड़ा संकट होगा—भले ही दूसरे तरीकों से सभ्यता चाहे जितना भी आगे बढ़ जाए, क्योंकि इससे संस्कृति के स्रोत धीरे-धीरे सूख जाएंगे।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २८३

अगर हमारे इरादे ऊंचे हों—और हमारी लड़ाई जरूरी तौर से लम्बी चलने वाली हो, तो इन वक्ती कामयाबियों की ज्यादा अहमियत नही होती। इससे आगे की अपनी कोशिशों के लिए हमें बढ़ावा मिलता है। अक्सर आसानी से मिली चीज की बनिस्बत यह हमें कुछ ज्यादा सिखाती है, और एक बड़ी कामयाबी की भूमिका बन जाती है। लेकिन इससे फायदा

हमें तभी होता है, जब हम इससे सबक सीखते है, और अपने अन्दर उस नाकामयाबी की वजह ढूंढ़ते हैं।

—*जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १६६*

अपने काम की तारीफ या भविष्य के लिए नसीहत चाहना शायद कुदरती बात है। कुछ लम्हों का ऐसा एहसास हमें, मौजूदा तसल्ली और काहिली, व बेअसर जिंदगी की मुसीबतों से मुंह चुराने का मौका देता है। यह सोचकर कि बड़े-बड़े कामों में किसी-न-किसी तरह हम भी शामिल है, हम अपने-आपको भुलावे में रखना शुरू कर देते हैं।

लेकिन यह उस उम्र का तकाजा है, जब खून ठंडा पड़ जाता है और जिस्म व दिमाग पथराने लगते हैं। छात्रों और नौजवान औरत-मर्दों के बारे में क्या कहा जाए? क्या उन्हें काम की इस बेअसर एवजी से तस्कीन है? बदलाव की तपिश से धड़कते हुए अपने आसपास की दुनिया को देखिए। इसे जांचिए, समझिए, इसके मुताबिक अपने को ढालिए और इसमे हाथ बंटाइए, या फिर संदेश इकट्ठे कीजिए और उनके पुलिन्दे बनाते रहिए।

—*जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० १५६*

आप हरएक आदमी को देवदूत नहीं बना सकते। अगर लोग इतने उन्नत हो जाएं और इस तरह आचरण करने लगें, तो हमारे सामने समस्याएं ही न रह जाएंगी। एक इलाज यह है कि हम ऐसी स्थितिया उत्पन्न कर दें, जिनमे उन लोगो के लिए जो देवदूत नहीं हैं—रहना कठिन हो जाए, और वे अपने रास्ते मे कठिनाइयां पावें। अर्थात् आप न्याय-व्यवहार और ईमानदारी के प्रति आकर्षण पैदा कर दें, और उससे भिन्न आचरण करने वाले यह पाएं कि उन्हें असुविधाओं का सामना

करना पडता है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ६५-६६

'इन्किलाव जिन्दावाद' जैसे इन्किलावी नारों को मैं एक अरसे से सुनता आ रहा हूं। अब तो सचमुच ही इन्किलाव करने का वक्त आ गया है। हमारा सत्याग्रह एक शांतिपूर्ण और अहिंसात्मक संघर्ष है, और इसे कामयाबी हासिल होकर ही रहेगी। इस धरती पर कोई भी ताकत नहीं, जो हमारी योजना को विफल कर दे। मुल्क के पुरुषों और स्त्रियों को, हर तरह से सरकार को हराने के एक ही काम में जुट जाना चाहिए।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० २६४

इलेक्शन होते है, चुनाव होते हैं—और उसमें हार भी होती है, जीत भी होती है। लेकिन हमारे, आपके सामने जो सवाल है, वे इलेक्शन से बडे है, और हमारे एक-दूसरे की हार और जीत से बड़े है। सवाल भारत का—हिन्दुस्तान का है, और अगर हम अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए, लाभ के लिए, या अपनी पार्टी के या दल के लाभ के लिए भारत को भूल जाते है, तो फिर किसके सामने हम अपने गुनाहों का जवाब देंगे—कि हम छोटी बातो मे पडकर बडे सवालों को, देश को भूल गए।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० १७

किसी आदमी की सफाई या नेकनीयती, या लियाकत का जरूरी तौर पर यह मतलब नही है कि उनकी नीति भी ठीक है। सिर्फ कोई कमनजर बेवकूफ ही यह कहेगा कि जो लोग उसके साथ सहमत नहीं है, वे नेकनीयती और ईमानदारी से काम नहीं करते; लेकिन जब दो नीतियां आपस में टकराती है, तो हमें विरोधी विचार रखने वाले की मुखालफत करनी

पड़ती है—भले ही वह विचार अपने-आपमें कितना ही अच्छा क्यों न हो।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ७), पृ० ६४०

कौमी गरूर कोई इंसानी गरूर नहीं। लेकिन और भी ज्यादा ठीक होगा कि हम अपनी कमजोरी की तरफ देखें, और जो बातें रह गई हैं—उनकी तरफ देखें, और पिछले जमाने में जो गलत बातें हुई—उनको देखें, और देखकर उनको दूर करने की कोशिश करें। खास तौर से जो सिद्धान्त और उसूल बुनियादी तौर से हमारे सामने रहे हैं, उनको फिर साफ करें, धुधला न होने दें, और उस रास्ते पर चलें जोकि हमारे राष्ट्र-पिता ने हमारे सामने रखा।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६-१०

क्योंकि भारत में बड़े-बड़े अन्तर हैं, इसलिए हमारे लिए केवल मानवीय कारणों से नहीं—बल्कि प्रजातन्त्र को पूरा करने के विचार से भी उन लोगों को ऊपर उठाना लाजमी हो जाता है, जो सामाजिक और आर्थिक सीढ़ी में नीचे हैं। उन्हें उन्नति का अवसर देने की बहुत जरूरत है। यही इस देश की आम स्वीकृत नीति है, और सरकार की भी यही मान्य नीति है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० २८

गुजरा जमाना हमारे लिए कई तोहफे भी लाया है। सच तो यह है कि आज हमारे पास संस्कृति, सभ्यता, विज्ञान या सत्य के पहलुओं का जो भी ज्ञान है—वह सब बहुत दूर के या पास के अतीत का उपहार ही है। यह सही है कि अतीत के प्रति हम कृतज्ञता स्वीकार करते हैं, लेकिन अतीत पर ही हमारा कर्त्तव्य या हमारी कृतज्ञता खत्म नहीं हो जाती। भविष्य के प्रति भी हमारी कुछ कृतज्ञता होनी चाहिए, और यह कृतज्ञता—अतीत के प्रति हमारी कृतज्ञता से कहीं ज्यादा है।

क्योंकि अतीत खत्म हो चुका है, उसे हम वदल नही सकते—भविष्य अभी आने वाला है, और उसे हम शायद किसी हद तक टाल सकते हैं। अगर अतीत ने हमे सत्य के कुछ पहलु दिए है, तो भविष्य भी सत्य के वहुतेरे पहलू छिपाए हुए है—और उसे खोजने के लिए हमें बुलावा दे रहा है। लेकिन अतीत को अक्सर भविष्य से ईर्प्या रहती है, और वह हमे कसकर पकडे रहता है, और भविष्य का सामना करने की—और उसकी ओर वढने के लिए छुटकारा पाने की खातिर हमें उससे लडना पडता है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ५), पृ० ४८४

तवारीख का लम्वा सिलसिला हमे वताता है कि मुख्तलिफ किस्म की सरकारे एक के वाद एक आती गई हैं, और पैदावार व संगठनों का माली ढांचा वदलता गया है। दोनो एक-दूसरे पर असर डालते है। जव माली हालात वहुत तेजी से वदलते हैं, मगर सरकारें कमोवेश जैसी-की-तैसी वनी रहती हैं तो एक खालीपन पैदा हो जाता है, जिसे एक अचानक वदलाव से भरा जाता है। उस वदलाव को इन्किलाव कहते है। तवारीख और सरकारों की सूरत गढ़ने में, माली वाक्यो की हैरत अंगेज अहमियत को करीव-करीव सभी लोगों ने मान लिया है।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ६), पृ० ५

थोड़े-से दिनों के हुकूमत की ऊंची कुर्सी पर वैठने से मुल्क नही उठते है। मुल्क उठते है जव करोड़ो आदमी खुशहाल होते है, और तरक्की कर सकते हैं।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६-७

मै अपने मुल्क में ही नही, दूसरे वड़े देशों मे इस वात को देखकर वहुत हैरान हो जाता हूं—कि लोग दूसरे लोगों को अपनी ही पसन्द या मर्जी के सांचे में ढालने के, और अपने ही

विशेष प्रकार के रहन-सहन को दूसरों पर थोपने के कितने इच्छुक रहते हैं। हम अपने ढंग से अपनी जिन्दगी बसर करें, यह ठीक है। लेकिन इसे दूसरों पर क्यों थोपें ? यह राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों के लिए सही है। वास्तव में, अगर लोग दूसरे देशों के लोगों पर अपनी जीवन-प्रणाली को थोपने से बाज आएं, तो इस दुनिया में और अधिक शान्ति हो सकती है।

—जवाहरलाल नेहरू के भाषण (प्रथम खण्ड), पृ० ३७

यह वह कौनसा आदर्श है, जिसे आप लोगों को अपने सामने रखना चाहिए ? अगर आपके मालिक बदल जाएं और आपकी तकलीफें बनी ही रहें, तो इससे आपको कुछ ज्यादा फायदा नहीं होगा। आपको खुशी नहीं होगी, अगर मुट्ठीभर हिन्दुस्तानी बड़े सरकारी अफसर बन जाएं, या मुनाफे में और भी बड़े-बड़े हिस्से पाने लगें—मगर आप लोगों के हालात वैसे ही खराब बने रहे, और लगातार मेहनत करते-करते और भूख की मार से आपके बदन टूट जाएं, और आपकी रूह का चिराग गुल हो जाए। आपको जिन्दा रखनेवाली मजदूरी चाहिए, मार डालने वाली मजदूरी नहीं। आप इंसान के शोषण का खात्मा चाहते हैं, और सभी लोगों के लिए बराबरी के मौके और रहन-सहन के अच्छे हालात।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ४), पृ० ५०

याद रखिए, हमारे बीच जो दीवारें हैं—मजहब के नाम से, जाति के नाम से, या किसी प्रान्त-सूबे या प्रदेश के नाम से, उन्हें भी दूर करना है। और जो एक-दूसरे के खिलाफ हमें जोश चढ़ता है, उससे जाहिर होता है कि हमारे दिल और दिमाग पूरी तौर से आजाद नहीं हुए हैं—चाहे ऊपर से नक्शा कितना ही बदल जाए। इसी तरह की कई बातों से हमारी

तंगख्याली जाहिर होती है। अगर हिन्दुस्तान के किसी गाव में किसी हिन्दुस्तानी को—चाहे वह किसी भी जाति का है, या अगर उसको हम चमार कहें, हरिजन कहें—अगर उसको खाने-पीने मे, रहने-चलने में कोई रुकावट है, तो वह गाव अभी आजाद नही है, गिरा हुआ है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ६१

लेनिन की याद मे श्रद्धाजलि देने के लिए, रूस के दूर-दूर के हिस्सों से लोग लेनिन के मकवरे का दर्शन करने आते हैं। हर शाम को कुछ घंटों के लिए दरवाजे खोल दिए जाते हैं। जिन किसानों और मजदूरों के लिए लेनिन जिया और मरा, और जिन्हें लेनिन प्राणों से भी ज्यादा प्यारा है, उनकी भीड़-की-भीड आने लगती है। पुराने कट्टर गिरजे की इज्जत रूस मे सव कही घट रही है, लेकिन लेनिन-पूजा के निशान सव कही वढ रहे हैं। हरेक दुकान और करीव-करीव हरेक कोठरी मे लेनिन की तस्वीर या मूर्ति मिलेगी।

—जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड २), पृ० ३८६

सभी जानते हैं कि हम लोगों मे अनेक महापुरुष, विचार-शील और दार्शनिक है, और यह वात भी सभी को मालूम है कि हमारा संगीत भी वहुत उन्नत और अत्यन्त वैज्ञानिक है। लेकिन धर्म और संगीत की ये वारीक वातें केवल चन्द ही आदमी समझते हैं—साधारण आदमी इनसे विल्कुल अलग रहते हैं। हम लोगों मे से दो-चार जो खास-खास लोग हैं, वे भी अपनी तरह से वहुत कम नई वातें निकालते है। अक्सर वे हमारे पूर्वजों के विचारों की कमाई पर ही गुजर करते हैं। जव तक हममें नई वात पैदा करने की शक्ति और उत्साह नही, तव तक मानसिक रूप से हमारी शिथिलता अनिवार्य है—और हम

उन्नति न कर सकेंगे।

जवाहरलाल नेहरू वाङ्मय (खण्ड ३), पृ० १८१

सवाल यह है कि आपमें और हिंदुस्तान के करोड़ों आदमियों में—नौजवानों और बच्चों में कितनी ताकत है कि वे भी उसको शान से उठाए रखें, इस मुल्क की खिदमत करें, तरक्की करें; और खासकर इस बात पर हमेशा ध्यान दें कि किस तरह से इस मुल्क के लाखों-करोड़ों मुसीबत जदा आदमियों के आंसू पोंछे, कैसे उनकी तकलीफ दूर करें, किस तरह वे तरक्की करें। आजकल किसी तरह से हमारी नई फौज को—यानी बच्चों को—मौका मिले कि वे ठीक तौर से सीखें, पढ़े-लिखें, उनका शरीर ठीक हो, मन ठीक हो और दिमाग ठीक हो, और फिर बड़े होकर वे इस मुल्क का बोझा अच्छी तरह से उठाएं। ये बड़े काम हैं, जबर्दस्त काम है।

—लालकिले के प्राचीर से (भाग १), पृ० ४६

हिंदुस्तान या किसी भी मुल्क का खयाल आदमी के रूप में करना एक फिजूल-सी बात थी। मैंने ऐसा नहीं किया। मैं यह भी जानता था कि हिंदुस्तान की जिंदगी में कितनी विविधता है और उसमें कितने वर्ग, कौमें, धर्म और वंश हैं; और सांस्कृतिक विकास की कितनी अलग-अलग सीढ़ियां हैं। फिर भी मैं समझता हूं, किसी देश में—जिसके पीछे इतना लंबा इतिहास हो, और जिंदगी को जानिब जहां एक नजरिया है, वहां एक ऐसी भावना पैदा हो जाती है, जो और भेदों के रहते हुए भी, समान रूप में वहां रहने वालों पर अपनी छाप लगा देती है।

—हिन्दुस्तान की कहानी, पृ० ७६

●●●

मुद्रक : गोपाल प्रिन्टर्स, दिल्ली-३२